शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
महाराष्ट्र

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र

भारतीय साहित्य

नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार पुनर्रचित पाठ्यक्रम
(शैक्षिक वर्ष 2023-24 से)

एम. ए. भाग–2
हिंदी :
सत्र 3 और 4

© **कुलसचिव,** शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
प्रथम संस्करण : 2024
एम.ए. भाग 2 (हिंदी : भारतीय साहित्य
सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रतियाँ : 150

■

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

ISBN-978-93-89345-66-7

★ दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी-
शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर-416 004. (भारत)

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

■ सलाहकार समिति ■

प्रो. (डॉ.) डी. टी. शिर्के
कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) पी. एस. पाटील
प्र-कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) प्रकाश पवार
राज्यशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. विद्याशंकर
कुलगुरू, केएसओयू
मुक्तगंगोत्री, म्हैसूर, कर्नाटक-५७० ००६

प्रो. राजेंद्र कांकरिया
जी-२/१२१, इंदिरा पार्क,
चिंचवडगांव, पुणे-४११ ०३३

प्रो. (डॉ.) सीमा येवले
गीत-गोविंद, फ्लॅट नं. २, ११३९ साईक्स एक्स्टेंशन,
कोल्हापुर-४१६००१

डॉ. संजय रत्नपारखी
डी-१६, शिक्षक वसाहत, विद्यानगरी, मुंबई विश्वविद्यालय,
सांताक्रुझ (पु.) मुंबई-४०० ०९८

प्रो. (डॉ.) कविता ओझा
संगणकशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) चेतन आवटी
तंत्रज्ञान अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एम. एस. देशमुख
अधिष्ठाता, मानव्य विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. एस. महाजन
अधिष्ठाता, वाणिज्य व व्यवस्थापन विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) श्रीमती एस. एच. ठकार
प्रभारी अधिष्ठाता, विज्ञान व तंत्रज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्राचार्या (डॉ.) श्रीमती एम. व्ही. गुळवणी
प्रभारी अधिष्ठाता, आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास विद्याशाखा
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. ए. एन. जाधव
संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

श्रीमती सुहासिनी सरदार पाटील
वित्त व लेखा अधिकारी,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) डी. के. मोरे (सदस्य सचिव)
संचालक, दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

■ हिंदी अध्ययन मंडल ■

अध्यक्ष

प्रो. डॉ. साताप्पा शामराव सावंत
विलिंग्डन महाविद्यालय, सांगली

सदस्य

- **प्रो. डॉ. नितीन चंद्रकांत धवडे**
  मुधोजी महाविद्यालय, फलटण, जि. सातारा
- **डॉ. मनिषा बाळासाहेब जाधव**
  कला व वाणिज्य महाविद्यालय, ११७, शुक्रवार पेठ, सातारा-४१५ ००२.
- **प्रो. डॉ. वर्षाराणी निवृत्ती सहदेव**
  श्री विजयसिंह यादव कॉलेज, पेठवडगाव, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. हणमंत महादेव सोहनी**
  सदाशिवराव मंडलीक महाविद्यालय, मुरगुड, ता. कागल, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. अशोक विठोबा बाचूळकर**
  आजरा महाविद्यालय, आजरा, जि. कोल्हापुर
- **डॉ. भास्कर उमराव भवर**
  कर्मवीर हिरे आर्टस, सायन्स, कॉमर्स ॲण्ड एज्युकेशन कॉलेज, गारगोटी, ता. भुदरगड, जि. कोल्हापुर
- **डॉ. संग्राम यशवंत शिंदे**
  आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा, ता. जावळी, जि. सातारा
- **प्रो. डॉ. अनिल मारुती साळुंखे**
  यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, करमाळा, जि. सोलापुर-४१३२०३
- **डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण**
  श्रीमती जी.के.जी. कन्या महाविद्यालय, जयसिंगपुर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत**
  डॉ. एन. डी. पाटील महाविद्यालय, मलकापुर, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. उत्तम लक्ष्मण थोरात**
  आदर्श कॉलेज, विटा, जि. सांगली
- **डॉ. परशराम रामजी रगडे**
  शंकरराव जगताप आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, वाघोली, ता. कोरेगाव, जि. सातारा

अपनी बात

शिवाजी विश्वविद्‌यालय, कोल्हापुर की दूरशिक्षा योजना के अंतर्गत स्नातकोत्तर हिंदी विषय के छात्रों के लिए निर्मित अध्ययन सामग्री, नियमित रुप से प्रवेश न ले पाने वाले छात्रों की असुविधा को दूर करने के संकल्प का सुफल है। इसमें एक ओर विश्वविद्‌यालय की सामाजिक संवेदनशीलता दिखाई देती है, तो दूसरी ओर शिक्षा से वंचित छात्रों को सुविधा प्रदान करने की प्रतिबद्‌धता स्नातक स्तर तक की अध्ययन सामग्री से दूरशिक्षा योजना के छात्र जिस तरह लाभान्वित हुए हैं, उसी तरह स्नातकोत्तर स्तर के छात्र भी प्रस्तुत स्वयं-अध्ययन सामग्री से लाभान्वित होंगे, यह विश्वास है।

दूरशिक्षा के छात्रों का महाविद्‌यालयों तथा अध्यापकों से प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से कोई संबंध नहीं आता। उनकी इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए अध्ययन सामग्री को सरल और सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया गया है। नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार पुनर्रचित पाठ्‌यक्रम, प्रश्नपत्र का स्वरुप तथा अंक-वितरण को ध्यान में रखकर अध्ययन-सामग्री को आवश्यकतानुसार विस्तृत तथा सूक्ष्म रुप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हमें आशा ही नहीं, बल्कि विश्वास भी हैं कि प्रस्तुत अध्ययन सामग्री स्नातकोत्तर स्तर के छात्रों के लिए उपादेय सिद्‌ध होगी।

प्रस्तुत सामग्री सामूहिक प्रयास का फल है। शिवाजी विश्वविद्‌यालय के मा. कुलपति, सम-कुलपति, कुलसचिव, अधिष्ठाता, मानव्य विद्‌या शाखा, दूरशिक्षा विभाग के संचालक एवं उनके सभी सहयोगी, तथा इकाई लेखक आदि के सक्रिय सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद।

■ **सम्पादक** ■

प्रो. डॉ. सुनील बापू बनसोडे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर,
ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) सातप्पा शामराव सावंत
अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन मंडल,
शिवाजी विश्वविद्‌यालय, कोल्हापुर तथा
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली, जि. सांगली

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर

भारतीय साहित्य
एम. ए. भाग–2 हिंदी

इकाई लेखक

लेखकाचे नाव	घटक क्रमांक	
	सत्र–3	सत्र–4
★ **डॉ. शिवाजी उत्तम चवरे** प्रा. संभाजीराव कदम महाविद्यालय, देऊर ता. कोरेगाव, जि. सातारा	**1**	**1**
★ **श्री. संतोष साळुंखे** नाईट कॉलेज ऑफ आर्टस् अ‍ॅण्ड कॉमर्स, इचलकरंजी	**2**	**-**
★ **डॉ. कैलास पाटील** विलिंग्डन कॉलेज, सांगली	**3**	**-**
★ **प्रो. डॉ. बळवंत जेऊरकर** विलिंग्डन कॉलेज, सांगली	**4**	**-**
★ **डॉ. सचिन कांबळे** डी. आर. माने महाविद्यालय, कागल, जि. कोल्हापुर	**-**	**2**
★ **डॉ. एम. बी. कुंभार** मातोश्री बयाबाई श्रीपतराव कदम कन्या महाविद्यालय, कडेगांव	**-**	**3, 4**

■ **सम्पादक** ■

प्रो. डॉ. सुनील बापू बनसोडे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर,
ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) साताप्पा शामराव सावंत
अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन मंडल,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर तथा
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली, जि. सांगली

अनुक्रमणिका

इकाई		पृष्ठ
	सत्र–3 : भारतीय साहित्य–I	
1.	भारतीय साहित्य का सैद्धांतिक अध्ययन	1
2.	'नागमंडल' (नाटक) – गिरीश कर्नाड (कन्नड)	20
3.	'उचक्का' (आत्मकथा) लक्ष्मण गायकवाड (मराठी)	57
4.	'मेरी आवाज़ सुनो' (काव्य) – कैफी आज़मी (उर्दु)	82
	सत्र–4 भारतीय साहित्य–II	
1.	भारतीय साहित्य का सैद्धांतिक अध्ययन	105
2.	मास्टर साब (उपन्यास) – महाश्वेता देवी (बंगाली)	135
3.	अधूरे मनुष्य (कहानी संग्रह) – डी. जयकान्तन (तमिल)	157
4.	पु. ल. देशपाण्डे के हास्य – व्यंग्यात्मक लेख – पु. ल. देशपाण्डे (मराठी)	190

इकाई 3
अधूरे मनुष्य (कहानी संग्रह) – डी. जयकान्तन (तमिल)
अनु. डॉ. के. ए. जमुना

अनुक्रम –

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय–विवेचन

3.3.1 डी. जयकान्तन : जीवन परिचय, व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व

3.3.2 'अधूरे मनुष्य' का वस्तु विवेचन

3.3.3 भावपक्ष एवं कलापक्ष के आधार पर 'अधूरे मनुष्य' का अध्ययन

3.3.4 'अधूरे मनुष्य' की समसामयिकता

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

3.5 पारिभाषिक शब्द एवं शब्दार्थ

3.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

1. तमिल कथाकार डी जयकांतन के व्यक्तित्व से परिचित हो जाएंगे।
2. तमिल कहानीकार डी जयकांतन के कृतित्व एवं साहित्यिक योगदान से परिचित हो सकेंगे।
3. तमिल कहानीकार डी जयकांतन जी का डॉ. के. आर. जमुना द्वारा हिंदी में अनूदित कहानी संग्रह 'अधूरे मनुष्य' से पाठक अवगत हो जाएंगे।
4. डी जयकांतन के कहानी संग्रह 'अधूरे मनुष्य' के भावपक्ष एवं कलापक्ष को समझ सकेंगे।
5. डी जयकांतन का कहानी संग्रह 'अधूरे मनुष्य' की विषयवस्तु से परिचित हो सकेंगे।
6. डी जयकांतन जी का कहानी संग्रह 'अधूरे मनुष्य' की समसामयिकता से परिचित होंगे।

3.2 प्रस्तावना :

'भारतीय साहित्य' की संकल्पना का विस्तार काफी बड़ी है। भारत विभिन्न प्रकार की भाषा और बोलियां को बोलनेवाला देश है। जब हम 'भारतीय साहित्य' की बात करते हैं तब सभी भारतीय भाषाओं में लिखे गए साहित्य को 'भारतीय साहित्य' की कोटि में रखा जा जाता है। परिणाम स्वरुप हिंदी, मराठी, तमिल, कन्नड़, मलयालम, बंगाली, भोजपुरी, गुजराती, उर्दू, बिहार आदि भाषाओं के साहित्य को 'भारतीय साहित्य' की परिधि में लिया जाता है। अतः 'भारतीय साहित्य' का अध्ययन करते समय इन भारतीय भाषाओं के साहित्य को पढ़ना महत्वपूर्ण बन जाता है। स्नातकोत्तर की पढ़ाई की दृष्टि से 'भारतीय साहित्य' के सैद्धांतिक विवेचन का अध्ययन करने के साथ-साथ हमें पाठ्यक्रम में निर्धारित किए गए तमिल भाषा में लिखित कहानी संग्रह 'अधूरे मनुष्य' का अध्ययन करना है। यह निर्धारित किया गया साहित्य 'भारतीय साहित्य' के परिप्रेक्ष्य में आता है। प्रस्तुति इकाई में हम भारतीय साहित्य की संकल्पना की दृष्टि से तमिल कहानीकार डी जयकांतन जी के कहानी संग्रह 'अधूरे मनुष्य' का अध्ययन करनेवाले हैं। इस इकाई में डी जयकांतन जी का जीवन परिचय, उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व, 'अधूरे मनुष्य' कहानी संग्रह की विषयवस्तु, 'अधूरे मनुष्य' कहानी संग्रह की समसामयिकता, 'अधूरे मनुष्य' कहानी संग्रह का भावपक्ष और कलापक्ष आदि का समग्र अध्ययन किया जानेवाला है।

3.3 विषय विवेचन :

3.3.1 डी जयकांतन का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व

डी जयकांतन जी आधुनिक तमिल कथाकार के रूप में अग्रगन्य है। तमिल भाषा के साहित्य को समृद्ध करने में डी जयकांतन जी का योगदान महत्वपूर्ण माना जाता है। कहानी, उपन्यास, निबंध, जीवनी जीवनीपरक नोट्स तथा अनुवाद आदि क्षेत्र में उन्होंने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वतंत्र्योत्तर काल में प्रमुख कथाकार एवं साहित्य जगत में आज डी जयकांतन को तमिल में 'मोंपासा' कहा जाता है। उन्हें 'जेके' इस उपनाम से भी जाना जाता है। अतः उनकी कृतियों का अध्ययन करने से पहले हमें उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अवगत होना जरूरी है। क्योंकि कोई भी साहित्यकार अपनी अनुभूति और स्वयं को अलग कर किसी भी रचना का निर्माण नहीं कर सकता। इसलिए किसी भी रचनाकार की साहित्यिक रचना का अध्ययन करते समय हमें रचनाकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से उजागर होना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

डी जयकांतन जी आधुनिक तमिल साहित्य जगत के महत्वपूर्ण कथाकार हैं। जिनका परिचय निम्न प्रकार से देखा जा सकता है।

जन्म :

डी जयकांतन जी का जन्म 2 मई 1934 में कुंड्डालोर नामक परिवार में तमिलनाडु स्थित कडलूर में हुआ। जो चेन्नई में आता है। वह एक किसान परिवार से हैं।

परिवार एवं शिक्षा–दीक्षा :

डी जयकांतन जी की स्कूली शिक्षा मात्र पांचवी कक्षा ही रही है। बारह साल की उम्र में ही वह घर से भाग कर अपने चाचा के पास चले गए। क्योंकि उनकी बचपन से राजनीति में दिलचस्पी थी । उनके चाचा राजनीति में सक्रिय थे, इसलिए पांचवी कक्षा से ही उन्होंने स्कूली शिक्षा को अलविदा कहा। ताकि वह राजनीति में सक्रियता से भाग ले सके, पाठशाला या स्कूली शिक्षा उनके राजनीतिक सक्रियता में कोई बाधा न पहुंचाए। वह अपनी स्कूली शिक्षा को छोड़कर मद्रास में 'भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी' के प्रिंटिंग प्रेस में एक कंपोजिटर के रूप में कार्य किया। यह पार्टी उनका घर और विद्यालय दोनों बनी। कंपोजिटर का काम करते समय वह अन्य काम भी सीख गए। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा के अतिरिक्त अन्य शिक्षा भी कई मार्गो से हासिल की। उन्हें विद्वान बी.सी. लिंगम जैसे विद्वानों के कारण बेहतर शिक्षा प्राप्त हो सकी। डिस्कवरी ऑफ इंडिया पढ़कर डी जयकांत ने अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने खुद माना है कि नेहरू ही मेरे अंग्रेजी और इतिहास के शिक्षक रहे हैं। उनका परिवार सामान्य किसान परिवार था। उनके परिवार में मां, चाचा, पत्नी और दो बेटियां और एक बेटा है।

साहित्यिक प्रेरणा :

डी जयकांतन जी ने मद्रास में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल होने पर वहां कंपोजिटर का काम शुरू किया। साथ ही भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की पत्रिका 'जनशक्ति' में काम करने लगे। वही से उन्हें लेखन में रुचि उत्पन्न हुई। वहीं उन्हें विश्व साहित्य, संस्कृति, राजनीति, अर्थशास्त्र और पत्रकारिता से संबंधित पुस्तक पढ़ने का मौका मिला और पार्टी के नेताओं के प्रोत्साहन पर उन्होंने लिखना शुरू किया, इस प्रकार वे लिखते ही गए। उनके साहित्यिक जीवन की मूल शुरुआत यहीं से होती है।

मृत्यु :

तमिल साहित्य के महत्वपूर्ण कथाकार डी जयकांतन जी की मृत्यु 8 अप्रैल, 2015 को मद्रास में हुई। तब वे 81 वर्ष के थे।

अतः कह सकते हैं कि डी जयकांतन जी का जीवन अनेक संघर्षों से भरा हुआ है। उन्हें अपने जीवन संघर्ष के चलते अपने जीवन में सफलता प्राप्त हुई। अतः वे एक राजनीति से संबंधित निडर लेखक रहे। जिससे उनका व्यक्तित्व असाधारण बन पड़ा है।

डी जयकांतन जी का कृतित्व :

डी जयकांतन जी प्रसिद्ध तमिल कथाकार हैं। भारतीय साहित्य में 'ज्ञानपीठ' जैसे साहित्य का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार प्राप्त करनेवाले एक महान भारतीय साहित्यकार हैं। लगभग जीवन के 50 वर्ष साहित्यिक लेखन में कार्यरत रहे। निश्चित रूप से भारतीय साहित्यकारों के महान रचनाकारों में से वे एक श्रेष्ठ रचनात्मक बुद्धिजीवी है। वह एक कहानीकार, उपन्यासकार, निबंधकार, पत्रकार, निर्देशक, आलोचक एवं एक अनुवादक भी है। अतः उनके साहित्यिक कृतित्व को निम्न प्रकार से देखा जा सकता है।

कहानी साहित्य :

डी जयकांतन जी प्रसिद्ध कथाकार है। जिन्होंने तमिल भाषा में लगभग 200 कहानियों का सृजन किया है। सामाजिक यथार्थ से प्रेरित उनकी कहानियों में भारतीय समाज बाल विधवा, विधवा पुनर्विवाह, नारी पीड़ा और नारी मुक्ति, निम्न वर्ग का जीवन संघर्ष, सामाजिक समस्याएं, पारिवारिक समस्याएं, मानवीय व्यवहारों की सूक्ष्म जटिलताएं आदि उनके कहानियों के विषय रहे। जिसे भारतीय समाज का यथार्थ चित्र अंकित हुआ है। उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में युगसंधि, अधूरे मनुष्य, उदयमन, ओरू पिडि चोरु, इतइप्पउम, कुरूप्पम, देवन वरुवारा, मालै मायक्कन, चुमैतांगि, उण्मै चुडुम, पुदिय वार्पुकल, सुयद रिशनम, इरंद कालगढळ, गुरुपीडम, जयकांतन शिरूकदैगळ ओर चक्रम निर्पदिल्लै, सुयदरिशनम आदि कहानी संग्रह का निर्माण किया है। इन कहानी संग्रहों की भाषा सहज, सरल, प्रभावपूर्ण है। भावपक्ष भी अत्यंत प्रभावशाली बन पड़ा है। अतः तमिल कहानी साहित्य को समृद्ध करने में डी जयकांतन जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

उपन्यास साहित्य :

डी जयकांतन एक कहानीकार होने के साथ-साथ एक उपन्यासकार भी हैं। जिन्होंने भारतीय उपन्यास साहित्य को समृद्ध बनाया है। उन्होंने सामाजिक जीवन जीते समय आए हुए अनुभव और अपनी प्रतिभाओं के बल पर कहानी लेखन के बाद उपन्यास लेखन में अपने कदम रखें। आज तक उन्होंने लगभग 40 उपन्यासों का निर्माण किया है। जैसे - वाषक्कै, अषैक्किरदु, उन्नैप्पोल ओरुवन, पारी सुक्कुपो, चिल नेरंगल्ळि चिल्ल मनिदरगल, ओरू नडी है, नाडहम पार्किक्कराल, जय जय शंकर, मनोवेलि मनिदरगल, महायज्ञ आदि। इन उपन्यासों में डी जयकांतन जी ने समाज का नग्न यथार्थ चित्रण करते हुए सामाजिक समस्याएं, स्वयं का यथार्थवाद, बाल विधवा, विधवा पुनर्विवाह, नारी जीवन एवं संघर्ष, सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश, भारतीय परिवार की वास्तविकता, निम्न एवं मध्यवर्ग का संघर्ष, भारतीय संस्कृति एवं परंपरा आदि विषयों को सूक्ष्मता से वाणी देने का कार्य उन्होंने किया है। उनके उपन्यासों की भाषा में सजीवता, भावात्मकता, प्रवाहमहता आदि गुण विद्यमान है। उनकी विशिष्ट शैली के कारण उपन्यास प्रभावी बन पड़े हैं। अतः उनके विराट उपन्यास साहित्य से तमिल उपन्यास साहित्य सक्षम बन पड़ा है।

निबंध लेखन :

डी जयकांतन तमिल कहानीकार और उपन्यासकार होने के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण निबंधकार भी है। जिन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में उत्कृष्ट निबंधों का सृजन किया है। डी जयकांतन जी ने साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक आदि विषयों पर श्रेष्ठ निबंधों का निर्माण किया है। उनके निबंध जन सामान्य पाठकों में काफी प्रचलित रहे। उनके निबंधों में रोचकता, संप्रेषणीयता आदि गुण विद्यमान है। उनके कुछ महत्वपूर्ण निबंध इस प्रकार है- मुन्नोट्टम, अवरगळ, उळळे, इरूक्किरारगळ, सुतन्दिर, प्रजयिन कुरल, भारती पाडल आदि।

फिल्म निर्माण और उपन्यास :

डी जयकांतन जी साहित्य के साथ-साथ फिल्म जगत के साथ भी जुड़े हुए थे । उन्होंने सन् 1964 में फिल्म क्षेत्र में जाने का निर्णय लिया। उन्होंने कुछ फिल्मों का निर्माण और निर्देशन भी किया है। उन्होंने उन्नेप्पोल ओरुवन, यारुक्कग अवुदान, पदु चेरुप्पु, कडिक्कुम इंटरनेशनल आदि फिल्मों का निर्देशन किया है। उनके 10 उपन्यासों पर फिल्म निर्माण का कार्य हो चुका है। अर्थात् उनके 10 उपन्यासों का फिल्म रूपांतरण सफलता के साथ हुआ है।

अनुवाद का क्षेत्र :

डी जयकांतन जी ने अनुवाद के क्षेत्र में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके कुछ उपन्यास और कहानियों का भारतीय, विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुए हैं। साथ ही उन्होंने रोमा रोला कृत महात्मा गांधी जी की जीवनी का तमील भाषा में अनुवाद किया है।

पुरस्कार एव सम्मान :

डी जयकांतन जी ने अपने साहित्यिक जीवन में लगभग 200 कहानियां, 40 उपन्यास, 15 निबंध संग्रहों का निर्माण किया है तथा अनुवाद, निर्देशन, पत्रकारिता, संपादन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। जिसके कारण उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार,पद्म भूषण पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू अवॉर्ड तथा साहित्य का सर्वश्रेष्ठ ज्ञानपीठ पुरस्कार आदि पुरस्कारों से उन्हें सम्मानित किया गया है।

इस तरह समग्र रूप से कहा जा सकता है कि डी जयकांतन जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व सराहनीय है। जो पाठकों पर अपना प्रभाव छोड़ता है तथा उनके लिए कई आदर्श की स्थापना करता है।

3.3.2 'अधूरे मनुष्य' कहानी संग्रह का वस्तु विवेचन :

कहानी वर्तमानकालीन साहित्य जगत की महत्वपूर्ण विधा है। आज के भाग-दौड़ की जीवन प्रणाली में मनुष्य के पास समय की उपलब्धि काफी कम मिलती है। ऐसे समय कहानी पढ़ने में लोगों की अधिक रुचि दिखाई देती है। इस कारण कहानी साहित्य जगत की एक लोकप्रिय विधा है। सुप्रसिद्ध तमिल कहानीकार डी जयकांतन ने तमिल भाषा में कहानी को विधा को सशक्त रूप देने का प्रयास किया है। उन्होंने अब तक लगभग 200 कहानियों का सृजन किया है। 'अधूरे मनुष्य' डी. जयकांतन जी का अनुदित कहानी संग्रह है। मूल तमिल भाषा में लिखित इस कहानी संग्रह का हिंदी अनुवाद डॉ. ए. के. जमुना जी ने 'अधूरे मनुष्य' इन इस नाम से किया है। इस कहानी संग्रह में कुल 11 कहानियां संकलित है। जिसमें से ताश का खेल, मौन एक भाषा है, युगसंधि, एडल्ट्स ओनली, दिन की एक पैसेंजर गाड़ी में, अपना-अपना दृष्टिकोण, सत्य झुलसता है और अधूरे मनुष्य जिसका अध्ययन हम करनेवाले हैं।

डी जयकांतन जी ने अपनी कहानियों में जनसाधारण की भावनाओं और उनके लक्षणों का चित्रण बड़ी मार्मिकता से किया है। उन्होंने अपनी कहानियों में सभी समाज को उभरने का प्रयास किया है। सभी वर्गों के

लोगों को अपनी कहानियों के पात्र बनाया, परंतु अधिकता समाज का निम्नवर्ग, पीड़ित एवं दलित वर्ग की ही रही है। जो उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करती हैं। उन्होंने सामाजिकता को उभारते समय मनुष्य और मानवीय समाज से जुड़ी समस्याओं को सहज रूप से वाणी देने का प्रयास किया है। अपनी कहानियों में कहानीकार ने मानव से संबंधित विभिन्न विषयों को अपनी कहानी के माध्यम से वाणी दी है। डी जयकांतन जी का अनुदित कहानी संग्रह 'अधूरे मनुष्य' इसके लिए अपवाद नहीं है। इस कहानी संग्रह में कहानीकार ने मानवीय समाज का यथार्थ चित्र खींचा है। उसमें किसी भी प्रकार की कृत्रिमता नहीं दिखाई देती। उन्होंने अनेक विषयों को अपनी कहानियों का विषय बनाया है। जैसे, नारी चित्रण, पारिवारिक त्रासदी, आदर्श भारतीय नारी, मातृत्व की संकल्पना, मौन का रूप, दो पीढ़ियों का अंतर, विधवा विवाह, बाल विवाह, बाल पुनर्विवाह, नारी संघर्ष, पारंपारिक रूढ़ि-परंपराएं, रीति-रिवाज, आधुनिकता, आधुनिक जीवन प्रणाली, पारिवारिक रिश्तों की दृढ़ता, प्रेम की संकल्पना और त्याग, मनुष्य की मानसिकता, अनमेल विवाह, दांपत्य जीवन, भारतीय संस्कार आदि विभिन्न विषयों को अपनी कहानियों की विषय वस्तु के रूप में चित्रित किया है। जिसे हम निम्न प्रकार से देख सकते हैं-

डी जयकांतन जी की एक प्रसिद्ध कहानी है - **मौन एक भाषा है।** यह ग्रामीण परिवेश और ग्रामीण संस्कृति के दर्शन करनेवाली कहानी है। जिसमें मनुष्य की मौन प्रवृत्ति को एक भाषा के रूप में देखा गया है। कहानी की मूल विषय वस्तु है, रवि की मां का हमेशा मौन रहना। परंतु मां अलमु ओच्चि का मौन रहना भी बहुत कुछ कह देता है। इस कहानी के पत्र सिंगारम, रवि, सुंदरम, कामाक्षी, सुशीला, भाभी, इंदिरा आदि पात्रों के माध्यम से कहानीकार ने मौन को सजीव भाषा का रूप प्रदान किया है। कहानी में मां अलमु ओच्चि को आठ संताने हैं। चार बेटी और चार बेटियां। उन्हें दामाद और पोते-पोतियो भी हैं। ऐसे में उसका दूसरा बेटा रवि विदेश में पढ़कर विदेशी लड़की (डॉक्टर) से शादी करता है। यही हरकत माता-पिता को पसंद नहीं आती। पिता उसे त्याग देते हैं। मां अलमु हमेशा की तरह चुप बैठी रहती है। लगभग शादी के पांच साल तक बेटा रवि घर नहीं आता। परंतु उसकी मां जब लगभग पचास साल की उम्र में गर्भवती बनती है। तो वहां अपने जीवन से निराश होकर आत्महत्या करने का प्रयास करती है। तभी भी वह अपने पति से इस बात को छुपा कर रखती है। उसे शर्म महसूस होती है, जिसके कारण आत्महत्या का प्रयास करती हैं। तभी पांच साल बाद बेटा वापस आता है। तब मां अलमु अपना मानसिक संतुलन खो बैठती हैं, और बार-बार अपने पति सिंगारम को कोसती है। तभी वापस आया रवि अपनी मां को बस में करता है और आत्महत्या का कारण पुछता है, तब उसे मां से गर्भवती होने की बात पता चलती हैं, तब रवि उस बात को सहज रूप से स्वीकारता है और यह सुखद समाचार परिवार को देता है। वह कहता है, ''एक शुभ संदेश सुनो.... हमारे यहां भाई या बहन जन्म लेनेवाला है।'' साथ ही अपनी मां को भी इस मातृत्व के महत्व से अवगत करता है वह कहता है, ''मां, चुप रहो। व्यर्थ बक-बक मत करो... इस समय अपमानित होने की कोई बात नहीं है.... तुम इतनी-सी बात के लिए पागलों की तरह आत्महत्या करने के लिए तैयार हो गयी? क्या तुम जानती हो कि विदेशों में इसे अत्यंत महत्वपूर्ण और गौरव का विषय समझा जाता है? तुमने बहुत पुण्य किए

है... ईर्ष्या के कारण कोई तुम्हारा उपहास करें तो करने दो। मां, मातृत्व की महिमा अपार है। हाय मां! इतनी-सी बात के लिए तुमने ऐसा भयंकर कदम क्यों उठाया? मां... ओ मां...।''

परिवार के सारे सदस्य मां के इस आचरण पर मौन पालते हैं और उसका विरोध करते हैं। उसे अपमानित होने सा महसूस करते हुए मां के इस आचरण का विरोध करते हैं। परंतु बेटा पढ़ा-लिखा और विचारों से सक्षम होने के कारण वह उस यथार्थ को स्वीकारता है और मां को आधार देता मातृत्व के गौरव को, उसके महत्व को समझता है। साथ ही एक नारी सम्मान की बात भी करता है। नारी के नारीत्व दशा को जीवन की सार्थकता बताता है। साथ ही अपने पिताजी से कहकर उसे अपने साथ ले जाता है। तभी सभी मौन रहते हैं। बेटा रवि कहता है, ''क्यों मां, यहां तेरा अपमान करनेवाले लोग कौन-सी भाषा में बात करते हैं?... सभी मौन है परंतु काम बराबर हो रहा है। मौन रहकर क्या प्रेम और सम्मान के भाव को व्यक्त नहीं किया जा सकता? किसी की निंदा करने के लिए और किसी के प्रति प्रेम को व्यक्त करने के लिए क्या भाषा-रूप माध्यम का होना जरूरी है?''

इन संवादों से कहानी का केंद्रीय विषय उजागर होता है। इसी तरह कहानीकार ने ग्रामीण संस्कृति, लोगों की धारणाएं, बच्चा न होने का दुःख, पाश्चात्य विचारधारा, प्रौढ़ अवस्था में संतान होने का दुख, स्त्री के प्रति पुरुष या स्त्री के ही द्वेष से देखने का नजरिया, मातृत्व की दशा, नारी सम्मान, पति-पत्नी के बीच का प्रेम आदि विभिन्न विषयों को वाणी दी है।

डी जयकांतन की कहानी 'ताश का खेल' नाते-रिश्ते के महत्व को उजागर करती हैं। रिश्ते ईश्वर का खेल ताश का खेल है। संसार के सारे मनुष्य इस खेल के पत्ते हैं। वही ईश्वर संसार को चलना है। कहानी की मूल विषय वस्तु पति-पत्नी के रिश्ते को उजागर करना रहा है। कहानी की मूल पात्र जानकी है। उसके पति शिवसामी और उसकी मां सरस्वती अम्माल यह एक परिवार है। तो दूसरी ओर रामभद्रन और लक्ष्मी का परिवार है। इस दो परिवारों के माध्यम से कहानीकार ने पति-पत्नी के रिश्ते की अहमियत बताई है। कहानी की नायिका जानकी बहुत सुंदर और सुशील है। परंतु वहा अत्यंत गरीब है। इसलिए उसकी शादी एक अमीर घर के शिवसामी से होती है। परंतु शिवस्वामी देखने में अत्यंत कुरूप है। जानकी और शिवसामी में बनती नहीं थी। जानकी इस रिश्ते से खुश नहीं थी। वह इस रिश्ते के कारण आत्महत्या करने की भी सोचती है। परंतु अपने बेटे रवि को देखकर और सास सरस्वती अम्माल के समझाने पर रुक जाती है और मुक्त रूप से अपनी जिंदगी जीती है। वह अपने पति से खुश नहीं है। इसलिए वह रवि को लेकर सिनेमा देखने भी चली जाती है। उसका पति शिवसामी ऑफिस से लौटने पर रात ग्यारह बजे तक ताश का खेल खेलता रहता है। इसी खेल में उसका दोस्त रामभद्रन भी रहता है। रामभद्रन दिखने में अत्यंत सुंदर है, तो उसकी पत्नी लक्ष्मी अत्यंत कुरूप है। परंतु अपनी मजबूरी के कारण रामभद्रन को लक्ष्मी से शादी करनी पड़ती है। वह भी इस रिश्ते से खुश नहीं था। परिणाम स्वरुप वह अपना समय ताश खेलने में लगा देता था। अतः इन दो परिवारों से जानकी और रामभद्रन इन रिश्तों से खुश नहीं थे। परंतु शादी जैसे बंधन में बंध चुके थे। जो भारतीय संस्कृति का एक बड़ा संस्कार है। इस बंधन में बंधे स्त्री-पुरुष हमेशा के लिए एक-दूसरे के लिए बनते हैं। एक दिन जानकी सिनेमा देखने चली जाती है। सिनेमा देखने के उपरांत वह कुछ खाने के लिए होटल चली

जाती है, तब वहां उसे रामभद्रन मिलता है। दोनों एक-दूसरे को पहचान लेते हैं। दोनों में अनेक प्रकार के बातें होती रहती हैं। रामभद्रन अपने दुख को और जानकी अपने दुख को एक-दूसरे के सामने प्रकट करते हैं। जिससे दोनों में एक प्रकार का आकर्षण तैयार होता है। कुछ पल के लिए दोनों को ऐसा लगता है कि दोनों एक दूसरे के लिए बने हैं। दोनों घंटे सागर के तट पर बैठते हैं, तब रामभद्रन कहता है, ''हम दोनों भी ताश के पत्ते हैं। खेलनेवाले शिवस्वामी और लक्ष्मण है। परस्पर एक-दूसरे से ताश के पत्तों को बदल लेना ही तो खेल है। जानकी तू बुद्धिमती है। मेरे शब्दों का अर्थ समझ रही है न?''

पल भर के काल्पनिक सुख के बाद जानकी होश में आती हैं और अपने यथार्थ की स्थिति और अपनी नैतिक जिम्मेदारी को समझ कर रामभद्रन को कहती हैं, ''आपसे नाराज होने का मुझे अधिकार कहां है? अरे हां, मैंने आपको ताश के खेल के बारे में पूरी बात नहीं बतायी। आपने कहा था कि खेलनेवाले मेरे पति और आपकी पत्नी है। वस्तुत: आपकी यह बात गलत है। वह भी हमारी तरह ताश के पत्ते हैं। हां...आप कह सकते हैं कि उनका कोई 'प्वाइण्ट' नहीं है। खेलनेवाला मनुष्य नहीं, ईश्वर है। वह गलत खेल रहा है, ऐसा कहने का हमें अधिकार कहां है?''

अतः वह इसी रामभद्रन को अपना भाई मानती है और उसे अपने पति होने के और पत्नी होने के नैतिक जिम्मेदारियों से अवगत कराती है। समग्र रूप से कह सकते हैं कि इन कहानी के माध्यम से लेखक ने भारतीय संस्कार और शादी, पति-पत्नी के नैतिक जिम्मेदारियां, नारी मन की विशालता, नारी व्यथा, अमीरी-गरीबी, सामान्य मनुष्य की जिम्मेदारियां आदि विषयवस्तु को अत्यंत मार्मिकता से अभिव्यक्त किया है।

'युगसंधि' अर्थात् दो युगों का मिलन। आधुनिक विचारधारा से प्रेरित डी जयकांतन जी अपनी कहानियों में सामाजिक यथार्थ को वाणी देते हैं। उनकी 'युगसंधि' कहानी भी नए और पुराने संघर्ष का चित्रण है। इस कहानी में कहानीकार ने गौरी दादी और उसकी पोती गीता के जीवन संघर्ष के माध्यम से पुराने युग और नए युग की संधि को प्रस्तुत किया है। कहानी का मूल पात्र सत्तर साल की बुढि विधवा गोरी दादी है। जो पुराने युग या पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है। तो दूसरी नारी गीता गौरी दादी के बेटे की लड़की है। वह भी बाल विधवा है। वह नए युग या पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है। इस कहानी में पुराने संस्कार, शास्त्र, रूढ़ि-परंपराएं आदि को माननेवाले पात्र के रूप में गौरी दादी का बेटा गणेश अय्यर, उसकी पत्नी पार्वती तथा उनकी अन्य संताने जैसे - मीणा, जमा, गणेश और अय्यर पुरानी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हुए पुराने संस्कारों को, रीति-रिवाज को, रूढ़ि-परंपराओं को, शास्त्र सम्मत नियमों का स्वीकार करने वाले है। जिसे वह छोड़ना नहीं चाहते। परंतु गणेश की मां और दादी भी उसके पहले की पीढ़ी से संस्कारीत है। वह सोलह वर्ष की आयु में ही एक बच्चे की मां बनती हैं और पति का देहांत होता है। वह विधवा बनती है, तब से लेकर आज तक सत्तर वर्ष तक की आयु तक वह अपना जीवन अपने बेटे को बड़ा करते और अन्य पोता पोतीयों के साथ बिताती हैं। परंतु दादी की सबसे अधिक निकटता अपने बेटे और बड़ी पोती गीता से है। गौरी दादी और गीता का जीवन एक जैसा ही बन जाता है। क्योंकि जब गीता की शादी के दस महीने बाद ही उसका पति मर जाता है। जिसके कारण वह बाल विधवा बनती है। माता-पिता उसे नसीब

का फल मान कर शास्त्र सम्मत या पुराने संस्कारों के अनुसार उसे विधवा रूप में ही देखते रहते हैं। लेकिन दादी की तरह ही गीता के भी कुछ सपने होते हैं, अपनी कुछ मानसिक इच्छाएं होती हैं, उसे वह पूरा करना चाहती है। पिता उसे टीचिंग ट्रेनिंग देते हैं। जिसकी बदौलत वहा शहर में ही नौकरी करती है। परंतु कुछ वर्ष बाद उसका तबादला होता है और पिता उसे दूसरी जगह नौकरी के लिए जाने के लिए मना कर देते हैं। क्योंकि तीस साल की कम उम्र की विधवा बेटी को वह अकेले कैसे भेज सकते थे। उन पर पुराने संस्कार हावी बनते हैं। उन्हें गीता की व्यथा समझ में नहीं आती। परंतु दादी उसकी भावनाओं को समझ कर उसके साथ रहने का फैसला करती है और उसके साथ रहने चली जाती हैं। क्योंकि दादी ने उस जैसी अपनी जिंदगी की जी थी। वह उसके दर्द, व्यथा को जान सकती थी। दादी पुराने संस्कारों में पलने बढ़ने के बावजूद प्रगतिशीलता को स्वीकारती है, जब गीता अपनी इच्छा और भावनाओं के अनुसार अपने सहकर्मी हिंदी पंडित श्री रामचंद्र से कानूनी ढंग से शादी का निर्णय लेती है और गौरी दादीद्वारा अपनी बात पिता को पत्र के द्वारा कह देती हैं। जिसमें वह पुराने संस्कार,शास्त्र के नियम, पुराने रीति-रिवाज, रूढ़ि-परंपराओं का विरोध करती हुई स्वतंत्र रूप से अपना निर्णय लेती है। वह पत्र में माता-पिता और दादी को लिखती है कि, ''बाबूजी, बात यह है कि मैंने अपने एक सहकर्मी हिंदी के पंडित श्री रामचंद्रन से अगले रविवार को कानूनी ढंग से विवाह करने का निश्चय किया है। वह जानते हैं कि मैं विधवा हूं। 'ऐसा करना पाप है,' इस भावना और विचार को लेकर मैं छह महीने तक अपने-आप से उलझती रही। अब मैं एक नीश्यच पर पहुंच गई हूं। मैं जान गई हूं कि मैं पूरे मन से वैधव्य व्रत का पालन नहीं कर सकती। मेरी सच्चरित्रता इसी बात में है कि मैं तरह-तरह के भेष धारण कर स्वयं कलंकित होकर परिवार को भी कलंकित न करूं। इस तीस साल की उम्र में भी मैं अपनी भावनाओं को अपने वश में नहीं कर पा रही हूं। मन में डर है कि कहीं पांच साल बाद फिर यही निर्णय न लेना पड़ जाए। इसी से मैंने सोचा कि इस काम को अभी कर लेना ही अच्छा है। मेरे विचार में मैं जो कुछ कर रही हूं, वह ठीक ही है।''

''हां, मैंने यह निर्णय अपनी मर्जी से ही लिया है। मेरे लिए दादीजी के अलावा और किसी ने अपनी सुख सुविधाओं का त्याग किया है? कोई भी मेरे लिए ऐसा क्यों करेगा?''

ऐसे समय माता-पिता तथा उसकी बीस साल की बहन मीणा भी उसके इस कृत्य का विरोध करती हैं और उसे अपने लिए मरी समझती है। परंतु गौरी दादी अपने बड़े बेटे, बहु पार्वती के समान न सोचकर एक प्रगतिवादी नारी के समान सोचकर अपने बेटे से कहती है, ''क्या तेरे धर्म शास्त्र में यही लिखा है कि तू विधवा बेटी को रंगीन कपड़े पहने दे? बाल संवरकर, जुड़ा बनाकर स्कूल जाने दे? स्वयं कमाकर अपना पेट पालने दे? इन सब बातों के लिए जब तूने मुझसे अनुमति मांगी, तो मैं चुपचाप अनुमति दे दी। जानते हो, क्यों? क्योंकि जमाना बदल रहा है। इसके साथ मनुष्य को भी बदलना चाहिए।''

इस प्रकार गौरी दादी गीता का पक्ष लेकर पुराने, जर्जर संस्कारों को त्याग कर गीता के आधुनिक विचारों को स्वीकारती हैं। यही दो युगों, दो विचारों और दो पीढियों की युगसंधि है। अतः इस कहानी की मूल विषय वस्तु दो पीढ़ियों की विचारधारा को स्पष्ट करना है। दो युगों के मेल को दिखाना साथ ही कहानीकार इस कहानी के माध्यम से पुराने और नई पीढ़ी का अंतर, पुरानी रूढि-परंपराओं का त्याग,

आधुनिक जीवन प्रणाली का स्वीकार, गौरी दादी और गीता का जीवन संघर्ष, उनका दुख और पीड़ा की अभिव्यक्ति, नारी मुक्ति की पहल, आधुनिक नारी की सोच, विधवा नारियों का यथार्थ और समाज आदि विषय वस्तुओं को विस्तार से चित्रित किया है।

डी जयकांतन की कहानी '**अधूरे मनुष्य**' एक मनोवैज्ञानिक कहानी है। जिसकी मूल विषयवस्तु मनुष्य की विचित्र मानसिकता का चित्रण करना है। प्रस्तुत कहानी में लेखक ने राजम नाम की एक नारी के जीवन की अभिव्यक्ति के माध्यम से नारी के दोहरी की अर्थात् विचित्र मानसिकता का चित्रण किया है। प्रस्तुत कहानी का केंद्रीय पात्र राजम एक विवाहित नारी है। कण्णन से उसका विवाह होकर पांच साल बीत चुके हैं। कण्णन उसका पति है जो एक ऑफिस में काम करता है। उसके ही ऑफिस में काम करनेवाला उसका एक मित्र राघवन और राघवन का एक मित्र डॉक्टर यह दो पात्र कहानी के अन्य पात्र हैं। कहानी की मूल नारी पात्र राजम कहानी में मानसिक रोग का शिकार है। उसकी रोजाना की गतिविधियां विचित्र है। जिसका निरीक्षण कर उसका पति उसे साइक्याट्रिस्ट डॉक्टर के पास लेकर जाना चाहता है, परंतु राजन को सीधे वह यह पुछ नहीं सकता था। इसलिए उसने राजम को बार-बार उसके एक डॉक्टर दोस्त के पास जाने की बात की । कण्णन का कहना था कि राजम की हालत अभी इतनी खराब नहीं है। परंतु इस स्थिति को बिगड़ नहीं देना चाहता था। इसलिए वह उसे पिछले दस दिनों से प्यार से पेश आता है और डॉक्टर के पास जाने का विषय छेड़ता है। राजम पर रात के समय में भी निगरानी रखता है। वह कहता है कि, ''उसका एका- एक बिना किसी कारण के क्रोधित होना, अकारण ही बड़बड़ाना, कुछ कह देने पर फफक- फफकर रो पड़ना, बात करने पर मौन रहना, मानो किसी गहन चिंता में लीन होने के कारण उसे कुछ भी सुनाई न दिया हो- इन सभी बातों से उसकी इस धारणा को बल मिल रहा था कि उसकी मनौव्यादि की चिकित्सा अवश्य ही की जानी चाहिए।''

एक दिन जब वह ऑफिस से घर आया था, तब शाम को अपनी पत्नी को डॉक्टर के पास जाने के लिए तैयार खड़ा देखकर अवाक रहता है। पत्नी उसके साथ डॉक्टर के पास चली जाती हैं। वहां जाने पर पति कण्णन अपनी पत्नी के बारे में डॉक्टर को बताना चाहता था, परंतु उसे ठीक से बोलना संभव नहीं हो पा रहा था। बीच में ही राजम डॉक्टर को बताती है कि मेरे पति की मानसिकता ठीक नहीं है, उसे पर आपको निर्णय लेना है। पत्नी कहती है कि, ''मेरे पति की हालत कुछ दिनों से ठीक नहीं है। वह बहुत ही घबराए हुए है। दुखी भी हैं। अधिक बोलते भी नहीं है। रात को उन्हें नींद नहीं आती। इतना ही नहीं डॉक्टर, किसी न किसी तरह की आवाज कर मुझे भी जगा देते हैं...'',

पत्नी के इस प्रकार की बात से कण्णन को काफी आश्चर्य लगता है। वह डॉक्टर को समझने की कोशिश करता है कि वह मानसिक रोग का शिकार नहीं है, बल्कि उसकी पत्नी ही मानसिक रोगी बन गई हैं। परंतु डॉक्टर उसे ही मानसिक रोगी मानते हैं। डॉक्टर के कहने पर उसे ही डॉक्टर के पास इलाज के लिए छोड़ देती है और टैक्सी बुलवाकर घर लौटने के लिए टैक्सी में बैठते हैं। टैक्सी ड्राइवर राजम को कहते हैं कि वह ठीक-ठाक लग रहे हैं, उन्हें शायद कोई तकलीफ नहीं होगी। इस बात पर राजम जोर-जोर से भयंकर हंसने लगती है। जिससे गाड़ी का ड्राइवर भी घबरा जाता है। परंतु राजम में कोई परिवर्तन दिखाई नहीं

देता। इस तरह डी जयकांतन जी ने स्त्री तथा पुरुषों की मानसिक स्थिति का चित्रण मनोवैज्ञानिक ढंग से किया है। साथ ही नारी की विचित्र मानसिकता, पति के मन का आत्मिक संघर्ष तथा मानवीय मन का वैज्ञानिक अध्ययन आदि विषयों को समग्रता से वाणी देने का काम किया है।

'**सत्य झुलसता है**' कहानी में कहानीकार डी जयकांतन जी ने दाम्पति जीवन और मानवीय भावनाओं का चित्रण करते हुए सत्य क्या कर सकता है? इस बात का चित्रण अत्यंत मार्मिकता से किया है। इस कहानी का केंद्रिय विषय भी यही है। डी जयकांतन प्रस्तुत कहानी में शिक्षित सोमनाथन, उसकी भांजी कोदै, परमेश्वरन तथा डॉक्टर आदि पात्रों के माध्यम से दाम्पति जीवन का चित्रण किया है। कहानी का मूल पात्र परमेश्वरन और तमिल के प्राध्यापक हैं। उन्हीं के गुरु सोमनाथन है, जो इसी कॉलेज में पढ़ने का काम करते हैं। परमेश्वरन की पत्नी और सोमनाथन की भांजी कोदै कहानी की मूल नारी पात्र है। परमेश्वरन के जीवन में रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद और सोमनाथन यह तीन लोगों का महत्वपूर्ण स्थान है। सोमनाथन परमेश्वरन के गुरु है। साथ ही बाद में वह उनके रिश्तेदार भी बन जाते हैं। जब कोदै का विवाह परमेश्वरन से हो जाता है। परमेश्वरन अत्यंत बुद्धिमान विचारवंत हैं। उम्र के चालीस साल तक वह ब्रह्मचारी रहे और अपने गुरु के कहने पर उसने कोदै से शादी की। वह कॉलेज में पढ़ाने का काम करते हैं। किसी भी विषय पर वह अपने वैचारिक ज्ञान से राय देते थे। सोमनाथन में भी वैचारिक दृढ़ता दिखाई देती हैं। उनका जीवन के प्रति देखने का दृष्टिकोण जनसाधारण से अलग है। परमेश्वरन और सोमनाथन रिश्तेदार, गुरु और अच्छे दोस्त भी हैं। किसी भी विषय पर वह वैचारिक मंथन हमेशा करते रहते हैं। ब्रह्मचारी पर वैचारिक मंथन करते हुए सोमनाथन कहते हैं कि, ''ब्रह्मचारी बना रहना न अनुचित है, न उचित। दोषों से रहित किसी पुरुष को तभी ब्रह्मचार्य व्रत का पालन करना चाहिए जब उसके सामने कोई लक्ष्य हो। किसी लक्ष्य को सामने रखकर ब्रह्मचारी बना रहना उचित है। केवल ब्रह्मचारी कहलाने के लिए ब्रह्मचारी बना रहना अनुचित है। बाद में वह पाप भी बन सकता है।''

ब्रह्मचारी संकल्पना को विषय के रूप में प्रस्तुत किया है। कहानी में परमेश्वरन का विवाह चालीस की उम्र में हुआ था। उसे समय कोदै की उम्र 20 बीस साल की थी। दिखने में भी यहां अनमेल विवाह है। अनमेल विवाह को वास्तव में एक समस्या के रूप में देखा जाता है। परंतु इस कहानी में यह अनमेल विवाह पारिवारिक जीवन के आनंद का प्रतीक बना है। इसी बात पर बात करती हुई कोदै अपने पति परमेश्वरन से कहती है कि, ''शुरू-शुरू में मैं भी आपकी तरह इसे अनुचित समझती थी... किंतु... अब लगता है कि यदि संसार के सभी लोग आयु से ज्यादा अंतर से विवाह करेंगे तो सभी का जीवन स्वर्ग बन जाएगा... पति-पत्नी की आयु समान होने पर न तो दोनों एक-दूसरे का लिहाज करेंगे और न ही मिल-जुलकर रह सकेंगे। आयु का अधिक अंतर होने पर उनमें घनिष्ठता और एक प्रकार की... मेरे समझ में नहीं आता कि कैसे उसे स्पष्ट करूं ...मैं बहुत प्रसन्न हूं। इतना ही मैं कह सकती हूं।''

इस तरह से कोदै अनमोल विवाह पारिवारिक सुख के लिए जरूरी मानती है। इसी तरह दाम्पत्य जीवन ही सामाजिक जीवन का लघु रूप है। सामाजिक जीवन और दांपत्य जीवन के अंतर्संबंध को स्पष्ट करते हुए सोमनाथन कहते हैं कि, ''अपने लिए जीनेवाला कोई लड़का या लड़की जब दूसरे के लिए जीना प्रारंभ कर

देते हैं, उसी को विवाह कहा जाता है। दांपत्य जीवन सामाजिक जीवन का लघु रूप है, उसी को विवाह कहा जाता है। सामूहिक जीवन के आधार दांपत्य जीवन में त्याग-भावना के होने पर ही सामाजिक जीवन सुंदर बन सकता है।''

इस तरह यही पर कहानीकार ने विवाह और समाज के संबंध को विषय वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत कहानी में परमेश्वरन और कौदै अपना आनंदी जीवन जीते हैं। परंतु एक गुमनामी पत्र परमेश्वरन को आने से उनका सुखी जीवन संदेह से भर जाता है और दुख में बदल जाता है। अभी तक अपनी पत्नी अपने गुरु सोमनाथन को पिता समान माननेवाला परमेश्वरन उन्हें संदेह की दृष्टि से देखने लगता है और अपनी पत्नी के शादी के पूर्व के प्रेम संबंध और बच्चे गिराने की बात को वह सच और झूठ के तराजू में तोलने लगता है। उसकी पूछताछ जब वहां सोमनाथन से करता है तो उसे उत्तर मिलता है यह बात झूठ है। परंतु यही बात जब वह अपनी पत्नी से पुछता है तो वह इस उसे यह बात सच होने का दावा करती हैं। जिससे अपने पिता गुरु और आदर्श माननेवाले सोमनाथन की अपने घर की दीवार पर टंगी तस्वीर को तोड़ डालता है। और उससे घृणा करता है। यह देखकर पत्नी कोदै वहां से उसे छोड़कर जाने के लिए निकलती हैऔर अपने पति से कहती हैं, ''अब यदि हम दोनों मिलकर जीवन-यापन करते हैं, तो यहां हम दोनों के लिए दंड-रुप ही होगा। आपके प्रति मेरे मन में कोई मिल नहीं है। जिस महापुरुष ने आपसे कहा था कि सत्य झुलसता है, मैं उनसे यह कहकर माफी मांगने जा रही हूं कि सत्य झुलसता ही नहीं, कुछ लोगों को पूरी तरह जला देता है- इस सत्य को जाने बिना मैं एक व्यक्ति को जला डाला है...''

अतः उपर्युक्त अवतरण में कहानीकार ने सत्य को विशेष रूप से प्रकट किया है। जी सत्य को जानकर वैचारिक ढूंढता से संपन्न परमेश्वरन मानसिक संदेह का शिकार बनता है। जिससे उसकी मानसिक दुर्बलता दिखाई देती हैं। अतः इस कहानी में कहानीकार ने स्त्री-पुरुष संबंध, नारी के प्रति पुरुष का देखने का नजरिया, नैतिकता-अनैतिकता, संदेह की प्रवृत्ति, सत्य और मनुष्य की मानसिकता, दांपत्य जीवन और सामाजिक जीवन, अनमोल विवाह आदि विषयों को प्रमुखता से उभरा है।

'**अपना-अपना दृष्टिकोण**' इस कहानी में कहानीकार ने जीवन के प्रति देखने के दृष्टिकोन को उजागर किया है। प्रत्येक मनुष्य की अपनी एक दृष्टि होती है। अपनी एक विचारधारा होती है, उसी के अनुसार वह अपनी राय बनता है। जीवन को विभिन्न दृष्टिकोण से अनेक रूपों में देखा जा सकता है। जीवन ही उन दृष्टिकोण को पूर्णतः देता है। कहानी में लेखक ने लिखते हैं कि, ''जीवन को नाना दृष्टिकोण से नाना रूपों में देखा जा सकता है। परंतु जीवन इन सभी दृष्टिकोणों और रूपों को आत्मसात करनेवाली एक पूर्णता है।''

प्रस्तुत कहानी की मूल विषयवस्तु मानवीय रिश्ते की दृढ़ता को बरकरार रखना और पवित्र प्रेम को अभिव्यक्ति देना है। साथ ही प्रेम में त्याग, बड़ों के प्रति सम्मान की भावना, रिश्तों की अहमियत, मनुष्य की गलत प्रवृत्ति, लोगों की तरफ देखने का दृष्टिकोण, नारी चित्रण, स्वार्थ आदि विषयों को भी कहानी में सहज रूप से अभिव्यक्ति मिली है। इन विषयों को कहानीकार एक परिवार के जीवन की दास्तान के माध्यम से उजागर किया है। कहानी में राजलक्ष्मी अम्मा, उसका बेटा मुरली, नौकरानी शंकरी दादी, प्रमिला तथा

राजलक्ष्मी की बेटियां मीणा और कमला और उनके पति ज्योतिष सब्बुशास्त्री आदि। पात्र घटित घटनाओं को अलग-अलग दृष्टिकोण से देखते हैं। राजलक्ष्मी अम्मा और बेटी मुरली दोनों आराम के साथ अपना जीवन जीते हैं। मुरली ऑफिस में काम करता है। उसकी उम्र पैंतीस साल की अधिक है। अभी तक उसने शादी नहीं की है। उसके दो बहने जिनकी शादी हो चुकी है। बेटे ने पैंतीस उम्र तक अपनी शादी नहीं की है। फिर भी मां उसे शादी के बारे में नहीं पूछती। मुरली अत्यंत शांत स्वभाव का और जिम्मेदार लड़का है। घर की नौकरानी शंकरी दादी भी उसे काफी मानती है। जब बेटा मुरली प्रमिला नामक पार्श्व गायिका की जन्म पत्रिका अपने परंपरागत ज्योतिष को दिखाती है। तो वह पत्रिका मिलती है। इसलिए वह अपने घरवालों के सामने सब्बुशास्त्री के द्वारा प्रमिला से विवाह का प्रस्ताव रखता है। प्रमिला से उसकी जान पहचान संगीत उत्सव में हुई थी। धीरे-धीरे यह पहचान बढ़ती गई। अप्रत्यक्ष रूप से मुरली उससे प्रेम करने लगता है। प्रमिला भी लगभग तीस साल की है। उसे भी मुरली से प्रेम उत्पन्न होता है। परंतु उनका यह प्रेम जिम्मेदारियां और रिश्तेदारों के सम्मान पर टिका हुआ था। प्रस्तुत कहानी में प्रमिला मुरली की मां के साथ बात करती हुई कहती हैं, ''एक बात कहे देती हूं कि यदि मेरा विवाह इनसे नहीं होवे तो भी मुझे खुशी ही होगी। इनके मन में मुझसे विवाह करने का एक विचार तो आया- यही मेरे लिए पर्याप्त है। इन्होंने मुझे ठीक तरह से समझा, मुझे इतना गौरव दिया- इस परम सुख के बल पर ही कई वर्ष जी लूंगी। मेरा मन अब पूरी तरह से संतुष्ट हो गया है। मानो मुझे पूर्ण दांपत्य-सुख के उपभोग का अवसर मिल गया हो।'' इस बात से दोनों के बीच के प्रेम की गहराई समझदारी तथा त्याग की भावना दिखाई देती है।

प्रमिला के साथ शादी के प्रस्ताव को उसकी दोनों बहने, दामाद ज्योतिष के बुरे तर्कों के आधार पर उसकी मां भी ठुकराती हैं। अपने मां के निर्णय को स्वीकारता हुआ बेटा मुरली अपने प्रेम का त्याग कर देता है और अत्यंत सहज रूप से प्रमिला को भी समझता है। वह भी इस निर्णय को स्वीकार की हैं जब मुरली की मां को असलियत का पता चलता है, तब वह प्रमिला से शादी के इस प्रस्ताव को स्वीकारती हैं। परंतु पहले ही इस पर निर्णय हो जाने के कारण वह मां को विनम्रता से जानकारी देती हुई कहती है, ''आपको इस तरह से दुखी या भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। जन्मपत्री का मिलना ही पर्याप्त कहां है। यह विवाह अब नहीं होगा। पुराने संबंधों को मजबूत बनाने के लिए और परिवार के विकास के लिए ही हमारे पूर्वजों ने विवाह संस्था की नींव डाली थी। इसके द्वारा अपने पुराने संबंधों को तोड़ना क्या अनुचित नहीं?'' मेरे लिए इस तानपूरे का- संगीत- कला का आधार पर्याप्त है। आप-जैसे भले लोगों का प्रेम और संरक्षण मिल जाए तो बताइए, फिर मुझे जीवन में किस वस्तु की आवश्यकता रह जाएगी?''

अतः प्रमिला पुराने संबंधों की मजबूती के लिए अपने प्रेम को ठुकराती है और शादी न करने का निर्णय भी लेती है। परंतु राजलक्ष्मी अम्मा बेटे मुरली के जन्मदिन पर नौकरानी शंकरी दादी ने बनाई मिठाईयां लेकर उसे प्रमिला को देने चली जाती है। इस तरह अत्यंत सहज रूप से कहानीकार ने नारियों के दृष्टिकोण को उजागर करने का प्रयास किया है।

'एडल्ट्स ओनली' डी जयकांतन जी की एक पारिवारिक कहानी है। इस कहानी का प्रमुख पात्र रामस्वामी एक पुरुष है। उसकी पहली पत्नी मर चुकी है। उसे सोमू नाम का एक बेटा भी है। पहिली पत्नी

के मरने के बाद उसने मंगलम् से दुसरी शादी की है। परंतु सोमू के रहते वह अपनी दूसरी पत्नी मंगलम के पास जाने से भी शर्माता है। परिणाम स्वरूप वह सहज दांपत्य सुख से दूर रहता है। एक दिन मालकिन के द्वारा समझाने पर वह अपने बेटे सोमू को उसके दोस्तों के साथ सिनेमा देखने भेज देता है। परंतु सोमू बीच में से ही सिनेमा देखे बिना वापस अपने घर आता है। परंतु घर का दरवाजा बंद देखकल वापस अपने दोस्त के साथ खेलने के लिए चला जाता है। तब रामस्वामी अपनी पत्नी के साथ संभोग करने में मग्न था। शाम को जब पुनः सोमू वापस घर आता है, तब सोमू से सिनेमा के बारे में पुछता है। सोनू बताता है कि, ''पिताजी, पिक्चर देखने नहीं गया। वह तो केवल बड़े लोगों के लिए थी। आज नई पिक्चर लगी है ''एडल्ट्स ओनली''। अपने बेटे के इस जवाब पर रामस्वामी सोचते है कि, ''मन-ही-मन वह सोचने लगे- है। एडल्ट्स ओनली! वे लोग इस तरह की पिक्चरों में ऐसे कौन-सी रहस्य की बातें दिखा देंगे, जिन्हें व्यक्ती शहर के जीवन में नहीं देख सकता? या उससे नहीं सीख सकता? इतना सोचते ही दुःख और उपेक्षा-मिश्रित मंद-मंद मुस्कान उनके चेहरे पर फैल गयी।''

इस तरह प्रस्तुत कहानी एक मनोविज्ञानिक कहानी भी है, जिसमें सोमू और उसके पिता की मानसिकता का चित्रण अत्यंत सूक्ष्मता से कीया हुआ है। साथ ही मनुष्य की सहज बावनाओं का खुलकर चित्रण किया हुआ है।

'दिन की एक पैसेंजर गाडी में' डी जयकांतन की महत्त्वपूर्ण कहानी है। यह कहानी वात्सल्य और करुणा से ओतप्रोत कहानी है। यह कहानी परंपरा से अपने पैर जमाए जातिवाद को जड़ से निकालने का एक क्रांतिकारी प्रयास है। आम्मासी एक सेनानी है। वह कहानी का मूलपात्र है जो युद्ध से वापस अपने घर रेल से आ रहा था। वह एक दलित पात्र है। उसका अपना कोई नहीं है, फिर भी वहा मन की इच्छा न होते हुए भी घर वापस लौट आ रहा है। वह दो बार सैनिक में भरती भी हो चुका है। परंतु दुश्मनों के साथ लड़ते हुए उसे गोली लगती है और उसे सेना से वापस अपने घर आना पडता है। घर आते समय उसके गाँव को केवल पॅसेंजर गाडी ही रुकती थी। इसलिए व उस गाडी से अपने गाँव की दलित बस्ती में आता है। वहाँ पर उसे माँ और बचपन की यादे याद आती है। अम्मासी की उमर लगभग पचास की है। कहानी में आम्मास अपनी पीड़ा को व्यक्त करता हुआ कहता है कि, ''हाय री जवानी! वह तो न जाते कब की बीत गई! मैं भी कभी अठरह, बीस, तीस, चालीस साल का

इस तरह डी जयकांतन जी ने दिन की **'दिन की एक पैसेंजर गाड़ी में'** इस कहानी में वर्गभेद, जातिभेद जैसी विषयों का चुनाव किया है। इसमें दो वर्ग आपस में संघर्ष के लिए नहीं उतरते बल्कि उच्च वर्ग का व्यक्ति इस जातिवाद को जानबूझकर मिटाना चाहता है। **एडल्ट्स ओनली** नामक कहानी में भी सामाजिकता, सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्ति मिली है। कहानी के लेखन में दांपत्य जीवन को भी कहानी की विषय वस्तु के रूप में चुना है।

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि डी जयकांतन जी अपने 'अधूरे मनुष्य' इस कहानी संग्रह में समाज का यथार्थ प्रस्तुत करते हुए मानवता, मनुष्य और सामाजिक समस्या आदि विषयों को अत्यंत सहजता से

पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। अतः उनका कहानी संग्रह विभिन्न विषयों को वाणी देने में सक्षम बना हुआ है।

3.3.3 भावपक्ष एवं कलापक्ष के आधार पर 'अधूरे मनुष्य' का अध्ययन

3.3.3.1 'अधूरे मनुष्य' कहानी संग्रह का भावपक्ष

किसी भी साहित्यिक रचना का निर्माण करने के लिए कुल चार तत्वों की आवश्यकता होती है। जिसमें सबसे प्रमुख तत्व के रूप में भाव तत्व काम करता है। अतः किसी भी साहित्यिक रचना का केंद्र भाव अर्थात् भावपक्ष होता है भावपक्ष का सामान्य अर्थ होता है, साहित्यिक रचना का वह पक्ष जिसमें, रस का सांगोपांग वर्णन या विवेचन होता है। जिसमें प्रमुखतः से रचनागत भावनाओं, कल्पनाओं तथा विचारों का समावेश किया जाता है। साहित्यिक रचना में भाव तत्व सबसे प्रधान ही होते हैं। बिना भाव के रचना का निर्माण संभव नहीं है। भाव एक ऐसा तत्व है जो साहित्य को प्रभावशाली और गतिशील बनता है। भावपक्ष ऐसा तत्व है जो पाठकों के दिलों-दिमाग पर असर करता है। भावपक्ष के माध्यम से ही पाठक, श्रोता, दर्शक के हृदय में रस रूप में परिणत होकर उन्हें आनंद प्रदान करता है। अतः साहित्य और भाव का अनन्यसाधारण संबंध होता है। किसी भी साहित्यिक रचना के केंद्र में भाव ही प्रमुख होते हैं, वे ही रचना का प्राण तत्व होते हैं। किसी भी साहित्यिक रचना में मनुष्य के भावों को अभिव्यक्ति दी जाती है। अतः कहानीकार मानवीय भावनाओं और कल्पना तथा विचारों के माध्यम से कहानियों का सृजन करता है। किसी भी कहानी में भावतत्व अर्थात् भावपक्ष की ही प्रधान रहता हैं।

डी जयकांतन एक कथाकार है। उन्होंने अपने कहानी संग्रह 'अधूरे मनुष्य' में सामाजिक यथार्थ को सूक्ष्मता से उतरा है। उन्होंने अपने जीवन की अनुभूति एवं कल्पना तथा विचारों के माध्यम से समाज के विभिन्न विषयों को वाणी देने का प्रयास किया है। जिससे उनका भावपक्ष अत्यंत सूक्ष्म एवं प्रभावशाली बना हुआ है। इस कहानी संग्रह में डी जयकांतन जी ने मनुष्य की भावनाओं को अत्यंत मार्मिकता से वाणी दी है। जिससे कहानी रसमय बनी हुई है। साहित्यशास्त्र में चित्रित विभिन्न भावों को उभरते हुए डी जयकांतन ने कहानियां को भावनाशील बना दिया है। डी जयकांतन की कहानी 'ताश का खेल' में लेखक ने प्रेमभाव अर्थात रति, क्रोध, शोक, वात्सल्य आदि भावों को अभिव्यक्ति दी है। जिसे प्रस्तुत करते समय विचारों और कल्पनाओं को कुशलता से चित्रित किया है। प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने दो परिवारों की कहानी के माध्यम से इन भावों को अभिव्यक्ति दी है। कहानी की मूल पात्र जानकी जिसे रवि नामक एक बेटा है। उसकी शादी अत्यंत कुरूप दिखनेवाले शिवसामी से होती है, इसका कारण यह शादी उसके लिए केवल एक समझौता होता है। वह मन ही मन अत्यंत दुखी रहती हैं। कहानी में अपनी सास सरस्वती अमल से कहती है, ''वह आपका पुत्र है, इसलिए आपका दुखी होना उचित है। आपने उसका विवाह करके एक लड़की की जिंदगी को बिगाड़ने का पाप अपने सिर पर ले लिया है। इसके लिए आप जी भरकर रोइए! आ बेटा, हम चलते हैं!''

उपर्युक्त अवतरण से जानकी के हृदय की पीड़ा व्यक्त हुई है। इस शादी से उसपर क्या बीतती है, वह केवल वही जान सकती है। इसलिए अपने मां के दुख के भाव को वह स्पष्ट रूप से व्यक्त करती है। जिससे जानकी के हृदय का दुख और द्वेष का भाव सामने आता है। इस तरह प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने प्रसंगानुकुल द्वेष, शोक, घृणा, निर्वेद, प्रेम आदि भावों की अभिव्यक्ति दी है। रामभद्रन और जानकी जब सिनेमा छूटने पर मिलते हैं और सागर तट पर एक दूसरे से बात करते हैं, तब कुछ समय के लिए दोनों के हृदय में प्रेम भावना जागृत होती है। रामभद्रन अपने मन की बात को जानकी के सामने रखना हुआ कहता है, ''हम दोनों भी ताश के पत्ते हैं! खेलनेवाले शिवसामी और लक्ष्मी है। परस्पर एक-दूसरे से ताश के पत्तों को बदल लेना ही तो खेल है। जानकी! तू बुद्धिमानी है। मेरे शब्दों का अर्थ समझ रही है न?''

'अपना-अपना दृष्टिकोण' यह कहानी भी पवित्र प्रेम का प्रेम को अभिव्यक्ति देती हैं और प्रेम त्याग और बलिदान से ही प्राप्त होता है, इसी बात को भी स्पष्ट मिलती हैं। कहानी का प्रमुख पुरुष पात्र मुरली एक जिम्मेदार और समझदार बेटा है। वह पार्श्व गायिका प्रमिला से सच्चा प्रेम करता है और उससे शादी भी करना चाहता है परंतु परिवार वाले परिवार वालों के विरोध और नाते-संबंधों को दरार ना आए इस कारण वह अपने प्रेम की कुर्बानी देता है, प्रमिला भी इस बात को स्वीकार कर अपने प्रेम की बली देती है वह मुरली की मां से कहती हैं, ''एक बात कहे देती हूं कि यदि मेरा विवाह इनसे नहीं होवे तो भी मुझे खुशी ही होगी। इनके मन में मुझसे विवाह करने का एक विचार तो आया- यही मेरे लिए पर्याप्त है।''

'मौन एक भाषा है' इस कहानी का मूल विषय की मातृत्व भाव या वात्सल्य भाव को प्रकट करना है। इस कहानी में परिवार में माता-पिता के बीच पिता पुत्र के बीच मां बेटे के बीच की भावनाओं को अभिव्यक्ति दी है। प्रस्तुत कहानी की अलमू ओच्चि को चार बेटे और चार बेटियां हैं। आज उसकी उम्र लगभग पचास साल की है। चारों बेटे और तीन बेटियों की शादी हो चुकी है, इसी कहानी पूरी कहानी दांपत्य भाव को उजागर करने वाली कहानी है। इस कहानी में हास, करुणा, दु:ख, वात्सल्य, ममता, भाईचारा, कुंठा, संत्रास आदि भावों की अभिव्यक्ति प्रचुरता से हुई है। इस कहानी में बेटी अपने पिता की चिंता करती हुई कहती है कि, ''बेचारे पिताजी! वह पहले व्यर्थ का विवाद अवश्य करते थे परंतु जब से उन्हें पता लगा की मां का जीवन खतरे में है, तब से वह सदा आंगन में ही बैठे रहते हैं, कमरे के भीतर तक नहीं जाते। मां के कमरे में जाते हुए वह घबराते हैं। चाहे कुछ भी हो, मां को ऐसा भयानक काम नहीं करना चाहिए था। क्या तुम जानते हो कि आस-पड़ोस के लोग क्या कहते हैं?''

निश्चित रूप से उपर्युक्त अवतरण से बेटी की पिता के प्रति चिंता के भाव और पति ने अपनी पत्नी के प्रति होने वाले चिंतित चिंता के भाव को अभिव्यक्ति मिली है। जिसमें करुणा भी है और दुख भी दिखाई देता है। प्रस्तुत कहानी में मां और बेटे के बीच के वात्सल्य के भाव का उदाहरण का दृष्टव्य है- ''मां, मैं सोचता हूं कि मैं चाहे कहीं भी रहूं, मुझे सदा तुम्हारा प्यार मिलता रहेगा। अपने इसी विश्वास के बल पर मैं तुमसे अलग होकर रहने लगा... उसे समय तुम मौन रही... और अब तुम आत्महत्या करने पर क्यों तुल गई हो? मां क्या तुम्हें मेरा यहां आना अच्छा नहीं लगा? क्या तुम मुझे नहीं देखना चाहती हो?''

इससे मां का बेटों के प्रति और बेटे का मां के प्रति होनेवाले भाव के दर्शन होते हैं। इस तरह कहानीकार प्रसंग अनुकूल एवं परिस्थिति के अनुकूल भावों को उभरने का प्रयास किया है।

'युगसंधि' कहानी भी दांपत्य भाव से भरी हुई कहानी है। इस कहानी में कहानीकार ने गौरी दादी और गीता इन दो बाल विधवाओं के माध्यम से दो पीढियों के अंतर और उसमें संधि लाने की बात की है। दोनों भी बाल विधवाएं है। यह करुण रस से भरी हुई कहानी है। दो नारियों के जीवन संघर्ष से भरी यह कहानी विभिन्न भावों को अभिव्यक्ति देती हैं। कहानी में दादी जब सोलह साल की थी तब वह एक बच्चे की मां थी। तभी वह विधवा हो गई थी। उसने अपना पूरा जीवन विधवा होकर और परंपराओं और रूढ़ियों को निभाते बिताया था। जब उसकी पोती गीता विधवा होने के बाद पुनर्विवाह का निर्णय लेती है। तब गीता के माता-पिता उसका विरोध करते हैं और उसे मरी हुई समझकर गंगा स्नान करने की बात करते हैं, तब दादी अपनी बहू और बेटे को विधवा का दर्द क्या होता है? यह समझने की कोशिश करती है। तब दादी के हृदय में उमडे भाव अत्यंत मार्मिक बन पड़े हैं। दादी अपने बेटे ने उसे पागल कहने पर वह कहती है, ''हां बेटा, मैं पागल हूं? मेरा पागलपन नया नहीं, बहुत पुराना है... मेरा यहां पागलपन कभी नहीं मिट सकता। मैं चाहती हूं कि मेरा पागलपन मेरे साथ ही मिट जाए। उसका पागलपन इतनी जल्दी, एकाएक दूर हो गया, इसके लिए कोई क्या कर सकता है? उसने तो कह ही दिया कि वह जो कुछ करने जा रही है, वह उसकी नजर में बिल्कुल ठीक है। तरह-तरह का भेष धारण कर बुरा नाम कमाने से बचने के लिए ही उसने यह निर्णय लिया है।''

अतः यहां पर दादी के विधवा जीवन की पीड़ा, दुख उबड़कर सामने आया है। साथ ही अपनी पोती गीता के प्रति होनेवाली संवेदना, चिंता आदि की अभिव्यक्ति हुई है। अपनी दादी की बात को बेटा नहीं मानता। वह अभी भी अपनी परंपरागत सोच पर अड़ा रहता है और अपने मां के भावों को अभिव्यक्त करता हुआ कहता है कि, ''वह दुष्टा कलंकिनी है। परिवार की मर्यादा को तोड़नेवाली वह चरित्रभ्रष्ट्र लड़की मर गयी, ऐसा सोचकर तू गंगा नहा ले।'' यहां पर बेटे गणेश का अपनी मां के प्रति क्रोध का भाव सामने आता है। वह अपनी मां से घृणा करते हुए बात करता है।

'सत्य झुलसता है' कहानी में लेखक ने पारिवारिक आनंद और संदेह के परिणाम का चित्रण अत्यंत सूक्ष्मता से किया है। कहानीकार ने सोमनाथन कोदै परमेश्वरन के माध्यम से पारिवारिक और सामाजिक परिवेश को उभारा है। इस कहानी में कहानीकार ने मूलतः सत्य की संकल्पना, पुरुष की संदेह ही मानसिकता, ब्रह्मचर्य की व्याख्या, अनमोल विवाह, विवाह और दांपत्य जीवन सत्य और मनुष्य का मौन इन सारे विषयों को भावात्मक अभिव्यक्ति दी है। जिसमें रति, हास, क्रोध, शोक उत्साह, आश्चर्य, निर्वेद आदि भावों को का चित्रण प्रसंगानुकूल रूप में हुआ है। सोमनाथन और परमेश्वरन आपस में वैचारिक बातें अक्सर करते रहते हैं। आपस में इस प्रकार की बातें करते समय उनकी वाणी में शांत रस की अभिव्यक्ति मिलती है। जिससे निर्वेद भाव उभर कर सामने आता है, ''पूजा करते समय पूजा करनेवाले के मन में ही तो विश्वास होना चाहिए। ऐसा करने से मुझे एक प्रकार की मानसिक शक्ति मिलती है... क्या आपको इसमें किसी तरह की आपत्ति है?''

उपर्युक्त अवतरण से रामेश्वरन की मां का निर्वेद भाव उभरकर सामने आया हुआ है। प्रस्तुत कहानी का मूल पात्र रामेश्वरमन में अनेक अच्छे गुण दिखाई देते हैं, तो दूसरी ओर उसके मन में पुरुष सुलभ अपनी पत्नी के प्रति संदेह की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है। शादी के कुछ साल बाद परमेश्वरन को एक गुमनामी पत्र आता है। जिसमें उसकी पत्नी के शादी के पूर्व के प्रेम संबंधों की बात को उजागर किया गया है। यह बात से वहां अपनी पत्नी तथा पितातुल्य गुरु के प्रति उसके मन में शक होता है। उसे बार-बार इसकी सच्चाई जानने की इच्छा होती है। वह उस बात की सच्चाई जानने के लिए उतावला बन जाता है। इसलिए वह सोमनाथन और अपनी पत्नी से इसकी तसल्ली करता है। कहानी में मन के संदेह के भाव को व्यक्त करता हुआ वह सोमनाथं से और बाद में अपनी पत्नी कौन से पूछता है, ''इस पत्र को पढ़ ले....बिना टाल-मटोल किए एक शब्द में तू उत्तर दे दे की पत्र की बात सच है या झूठ। मैं तुझे विश्वास दिलाता हूं कि तेरा उत्तर चाहे जो हो, वह हमें या किसी दूसरे व्यक्ति को किसी भी तरह प्रभावित नहीं करेगा। मैं सच्चाई जानना चाहता हूं.... मैं आश्वस्त होना चाहता हूं कि मेरा जीवन झूठ की आधारशिला पर नहीं टिका है...!''

अतः इसे स्पष्ट होता है कि रामेश्वरन के ह्दय में संशय का भाव दृढ़ता से दिखाई देता है। उसमें ही उसकी घुटन भी छपी है। जिसमें वह छटपटाता है। उसमें एक घुटन का भाव भी दिखाई देता है। जिससे वह तिलमिला जाता है। कहानी में वह अपने आप से कहता है, ''मैं, महामुर्ख हूं। मेरे सामने सत्य की साक्षात मूर्ति, मेरी पत्नी खड़ी है। इसे वह पत्र दिखाकर, मैं पूछ सकता हूं कि सत्य क्या है? ऐसा न कर मैं व्यर्थ ही छटपटा रहा हूं!'' अतः परमेश्वरन में एक और दिन भाव दिखाई देता है तो दूसरी ओर घुटन भी। इस तरह कहानीकार ने प्रसंगानुकुल एवं परिस्थिति के अनुकूल भावों का चित्रण बड़ी सूक्ष्मता से चित्रित किया है।

'अधूरे मनुष्य' कहानी में कहानीकार जी ने मनुष्य के अधूरे होने की बात पति-पत्नी के माध्यम से चित्रित की हैं। कहानी की मूल नारी पात्र राजम और उसके पति कण्णन पति-पत्नी है। दोनों हमेशा एक-दूसरे की कमियों को ढूंढने की कोशिश करते हैं। परिणाम स्वरुप दोनों एक-दूसरे को मानसिक रोगी दिखाने की कोशिश भी करते हैं। इस कहानी में लेखक ने मानव की मनोवैज्ञानिकता, स्त्री की दुविधाग्रस्त मानसिकता, नारी के विचित्र रूप का चित्रण आदि कथ्य को वाणी दी है। जिसमें दोनों की एक-दूसरे के प्रति होनेवाली भावनाओं में एक संदेह दिखाई देता है। शुरू में कण्णन पत्नी की अजीबो-गरीब हरकतों के कारण उस पर नजर रखता है और उसे एक साइक्याट्रिस्ट डॉक्टर के पास जाने के लिए मनाने की कोशिश करता है। इसी बीच के प्रसंग में विभिन्न भावों का उद्घाटन होता है। करुणा, दुख, हास्य, गंभीर, निर्वेद, क्रोध, चिंता आदि भाव उभरकर सामने आते हैं। इस तरह 'अधूरे मनुष्य' कहानी संग्रह में भावों का चित्रण सहजता एवं सरलता से हुआ है। अतः इन कहानियों का भावपक्ष अत्यंत मार्मिक बन पड़ा है। जिसमें उत्पन्न भाव सहज, सरल, प्रभावपूर्ण और संप्रेषणीय बने हैं। जो पाठकों को अपनी जिज्ञासा बनाए रखते और पाठकों को अपनी और आकृष्ट करते हैं। जिससे पाठकों का ह्रदय भावना विव्हल हो जाता है।

3.3.3.2 'अधूरे मनुष्य' कहानी संग्रह का कलापक्ष :

किसी भी साहित्यिक रचना का अध्ययन मुख्यतः दो रूपों में किया जाता है। भावपक्ष और कलापक्ष किसी भी साहित्य के निर्माण में साहित्यकार भावपक्ष और कलापक्ष दोनों पर भी ध्यान देता है। भावपक्ष साहित्य का प्राण तत्व है, तो कला पक्ष उसका शरीर। भावपक्ष साहित्य में विचार और भावों की पुष्टि करता है, तो कलापक्ष इस विचार और भाव की विशिष्ट शैली में अभिव्यक्ति देता है। अतः साहित्य में भावपक्ष और कलापक्ष दोनों महत्वपूर्ण रहते है। प्रत्येक रचनाकार अपनी रचनाओं में विशिष्ट शिल्प विधान का प्रयोग करता है। शिल्प विधान को ही रचना का कलापक्ष कहा जाता है। कलापक्ष में रचना की भाषा-शैली, छंद, अलंकार, मुहावरे, सूक्तियां आदि बिंदुओं का समावेश किया जाता है। अतः डी जयकांतन का कहानी संग्रह 'अधूरे मनुष्य' का कलापक्ष की दृष्टिकोण से अध्ययन करने के लिए कहानी संग्रह की 'भाषा और शैली' दोनों को देखना अनिवार्य होगा। अतः 'अधूरे मनुष्य' कहानी संग्रह की भाषा शैली का अध्ययन निम्न प्रकार से देखा जा सकता है।

3.3.3.2.1 कहानी संग्रह 'अधूरे मनुष्य' की भाषा :

भाषा मनुष्य के विचार विनिमय का सशक्त माध्यम है। अर्थात् मनुष्य की भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त ऐसा साधन है भाषा है। यह एक ऐसा साधन या माध्यम है, जो रचनाकार के विचारों या भावों को साहित्यिक रूप में व्यक्त करता है। किसी भी साहित्यिक रचना में भाषा की अपनी अहम भूमिका होती हैं। भाषा के बिना किसी साहित्यिक कृति का निर्माण संभव नहीं है। भाषा और कहानी का अंतर्संबंध होता है। भाषा जितनी संप्रेषणीय होगी उतने ही प्रभाव से भावना और विचारों का संप्रेषण संभव है। भाषा कहानी के कथानक को, पत्रों को गतिशील बनती हैं। परिणाम स्वरुप वह संप्रेषण होने के साथ-साथ प्रभावशाली बनती है। प्रस्तुत कहानी में डी जयकांतन की कहानियों की भाषा में विभिन्न प्रकार की विशेषताएं मिलती हैं। डी जयकांतन की कहानियों की भाषा सहज, सरल, सजीव एवं संप्रेषण है, जो पाठक की जिज्ञासा जगाकर उसे प्रभावित करती है। 'अधूरे मनुष्य' इस कहानी संग्रह की पहली कहानी 'ताश का खेल' की भाषा अत्यंत सरल है। जिसमें सहजता और सजीवता के कारण भाषा में संप्रेषणीयता का गुण दिखाई देता है। डी जयकांतन भाषा को सहजता से पिरोने में निपुण है। 'ताश का खेल' में भाषा के इस रूप की अभिव्यक्ति अधिकता से हुई है। कहानी में सरस्वती अम्माल अपनी बहू जानकी से कहती है, ''तू खुशी से जा! मैंने सोचा, धूप है इसलिए कह रही थी। तू व्यर्थ ही गुस्सा हो रही है कि मैं सास की जगह खड़ी होकर तुझे डांट रही हूं...''

कहानीकार अपनी रचना को आकर्षक तथा प्रभावशाली और कलात्मक रूप प्रदान करने के लिए भाषा के विभिन्न प्रकारों का प्रयोग करते हैं। जैसे डी जयकांतन ने 'अधूरे मनुष्य' इस कहानी संग्रह की कहानियों को प्रभावशाली एवं कलात्मक बनाने के लिए भावानुकूल भाषा, पात्रानुकूल भाषा, प्रसंगानुकूल भाषा, बिंबात्मक भाषा, अलंकारमयी भाषा, संगीतात्मक भाषा, हास्यात्मक भाषा, व्यंग्यात्मक भाषा, नाटकीय भाषा आदि का प्रयोग प्रचुरता से किया है। 'युगसंधि' कहानी की मूल पात्र गौरी दादी की पोती विधवा गीता जब

पत्र लिखकर अपने माता-पिता को उसके पुनर्विवाह करने की बात करती है तब पिता गणेश अयर काफी क्रोधित होते हैं और अपनी बेटी गीता को विधवा कहते हैं। जिस पर दादी अपने भावों को अभिव्यक्त करती हुई रहती हैं, ''तू शास्त्र की... नियम की बात कर रहा है! क्या तू जानता है कि उसे समय तुझे क्या करना चाहिए था? क्या तू जानता है कि शास्त्र के नियमों ने मेरी क्या दुर्दशा की?... उस समय तू दूध-पीता बच्चा था... मेरी उम्र सिर्फ पंद्रह साल की थी! मेरा बच्चा मेरे इस रूप को देखकर इस तरह से चीख उठता था मानों उसने किसी भूत-प्रेत को देख लिया हो!...मां का दूध न मिलने पर तू चीख-चीखकर रोता था और मेरे पास आने पर भय से चीख उठता था। जो कुछ हुआ था, उसे मेरा दुर्भाग्य मानकर घरवालों ने मुझे एक कोने में धकेल दिया। तूने गीता का सिर मुंडाकर उसे कोठरी में क्यों नहीं धकेल दिया? बोल, उसकी दुर्दशा क्यों नहीं की?''

उपर्युक्त अवतरण से पता चलता है कि दादी के मन में क्रोध के भाव के साथ-साथ अपनी पीड़ा और दुख का भाव भी छिपा है। जिसने उसे स्वयं भोगा हैं और आज गीता उसे भोग रही है। अतः कहानीकार ने गौरी दादी के मन की भावनाओं के अनुकूल भावानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। प्रस्तुत कहानी संग्रह की सभी कहानियों में भावानुकूल भाषा के कई उदाहरण मिलते हैं। अतः कहानी में भावात्मकता एवं प्रभात्मकता के निर्माण के लिए कहानीकार ने भावानुकूल भाषा का प्रयोग सक्षमता से किया है।

कहानीकार ने अपनी कहानियों में विभिन्न प्रकार के कई प्रसंगों, घटनाओं का चित्रण किया है। अतः प्रसंगों एवं घटनाओं का यथार्थ रूप से चित्रित करने के लिए डी जयकांतन ने प्रसंगंकुल भाषा का प्रयोग प्रचुरता से किया है। 'ताश का खेल', 'मौन एक भाषा है', 'युगसंधि', 'अपना-अपना दृष्टिकोण', 'अधूरे मनुष्य' आदि कहानियों में प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। 'मौन एक भाषा है' इस कहानी में लेखक ने पारिवारिक प्रसंग एवं घटनाओं का वर्णन किया है। अनेक घटना एवं प्रसंग परिवार से ही संबंधित हैं। प्रस्तुत कहानी में अलमु ओच्चि प्रमुख नारी पात्र हैं, रवि उसका बेटा प्रमुख पुरुष पात्र हैं। जब पचास साल की उम्र में उसकी मां गर्भवती होती है, तो वहां आत्महत्या करने का प्रयास करती है। जब घर वालों को यह बात पता चलती है तो वह उसे घृणा करने लगते हैं, तभी बेटा रवि उसे अपने साथ मद्रास ले जाना चाहता है। रवि ने विदेशी महिला डॉक्टर से प्रेम विवाह किया है। मद्रास जाने की बात को लेकर मना करती हुई मां कहती है कि मैं उसकी भाषा को नहीं जानती। तब बेटा रवि कहता है कि, ''क्यों मां, यहां तेरा अपमान करनेवाले लोग कौन-सी भाषा में बात करते हैं?... सभी मौन है परंतु काम बराबर हो रहा है। मौन रहकर क्या प्रेम और सम्मान के भाव को व्यक्त नहीं किया जा सकता? किसी की निंदा करने के लिए और किसी के प्रति प्रेम को व्यक्त करने के लिए क्या भाषा-रूप माध्यम का होना जरूरी है?'' अतः यहां पर कहानीकार ने इस प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। जिससे भाषा का प्रभावशाली प्रभावी रूप सामने आता है।

कहानीकार ने कहानी में कहीं-कहीं नाटकीयता को उभारने के लिए नाटकीय भाषा का अर्थात् संवादात्मक भाषा का प्रयोग भी किया है। 'ताश का खेल' कहानी में शिवसमी और सरस्वती अम्माल के संवादों से नाटकीय भाषा का रूप दृष्टव्य होता है जैसे-

''जानकी कहां है?''

''सिनेमा देखने गयी है।''

''किससे पूछ कर गई है?''

''किससे पूछ कर जाती? मुझसे पूछ कर गई है।''

डी जयकांतन अपनी कहानियों में सामाजिक यथार्थ को उभारते हैं, जिसमें उन्होंने कहानियों को आकर्षक बनाने के लिए बिंबात्मक भाषा का प्रयोग भी किया है। प्रसंग एवं घटनाओं के अनुकूल इस प्रकार की बिंबात्मक भाषा का प्रयोग उन्होंने किया हुआ दिखाई देता है। जैसे 'अपना-अपना दृष्टिकोण' कहानी का उदाहरण देख सकते हैं- ''कमरे में 'उस व्यक्ति का चित्र' ऐसे स्थान पर टंगा था कि कमरे में प्रवेश करते ही लोगों की दृष्टि उस पर पड़ जाए। चित्र पर जरी की एक माला पड़ी हुई थी। पान की पीक से रंगे होठ, गले में सोने की चेन और केश-विन्यास में 'मन्नार-गुड्डी के मनचले पुरुष' को पहचानने में राजलक्ष्मी को अधिक कठिनाई नहीं हुई। दूसरी ओर कर्नाटक संगीत के कीर्तिस्तंभ त्यागराज का चित्र टंगा था। चित्र के दोनों और छोटे-छोटे दीपक जल रहे थे। कोने की मेज पर फ्रेम में जड़ी एक तस्वीर थी- यह तस्वीर उसकी मां की होगी।''

अतः यहां पर लेखक अपनी भाषा से एक बिंब पाठकों के सामने खड़ा करते हैं। जिसे पाठक के मस्तिष्क में वह चित्र-सा अंकित होता है। इस प्रकार की भाषा से पाठक प्रभावित होता है।

समग्र रूप से कह सकते हैं कि डी जयकांतन जी का कहानी संग्रह 'अधूरे मनुष्य' की भाषा सहज, सरल, प्रभावशाली है। जिस भाषा में सजीवता विद्यमान है। उनकी भाषा में व्यंग्यात्मकता, भावानुकूलता, प्रसंगानुकूलता, हास्यात्मकता, सहजता, संप्रेषणीयता, गरिमा, गंभीरता आदि गुण दिखाई देते हैं। भाषा में कहीं भी क्लिष्ठता नहीं दिखाई देती। जिसके कारण भाषा में प्रवाहमयता सहज रूप से उभर कर आई है। भाषा में कहावतें-मुहावरों तथा तमिल भाषा के कई शब्दों की ज्यों की क्यों प्रयुक्त किए गए हैं। प्रस्तुत भाषा की संप्रेषणीयता में कोई रुकावट नहीं आयी। इस तरह डी जयकांतन के कहानी संग्रह की भाषा सहज, सरल, संप्रेषणीय एवं प्रभावी है, जो पाठक से सहज तादात्म्य स्थापित करती है।

3.3.3.2.2 कहानी संग्रह 'अधूरे मनुष्य' की शैली

हर साहित्यिक रचना में शैली का अपना विशेष महत्व होता है। शैली अर्थात् भाषा की अभिव्यक्ति का ढंग या पद्धति। साहित्यकार अपने विचार और भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए जिस पद्धति का प्रयोग करता है उसे शैली कहा जाता है। 'शैली' भाषा के प्रस्तुतीकरण का एक ढंग है। साहित्य में भाषा के साथ-साथ शैली भी महत्वपूर्ण होती है। हर रचनाकार की अपनी एक विशिष्ट शैली होती है। शैली रचना में प्रौढ़ता, प्रवाहमयता, प्रभावशीलता, आकषर्कता, सहजता का निर्माण करती है। कहानीकार डी जयकांतन अपने कहानी संग्रह 'अधूरे मनुष्य' में विभिन्न शैलियों का प्रयोग करते हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक, व्यंग्यात्मक शैली, संवादात्मक शैली, नाटकीय शैली, हास्यात्मक शैली,

बिंबात्मक शैली, चित्रात्मक शैली, संस्करणात्मक शैली, पत्रात्मक शैली आदि विविध शैलियों का प्रयोग प्रचुरता से किया है। उनके कहानी संग्रह में उन्होंने प्रसंग अनुकूल, पात्र अनुकूल एवं कथानक के अनुसार विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है।

डी जयकांतन जी ने ताश का खेल, मौन एक भाषा है, युगसंधि, एडल्ट्स ओनली, दिन एक पैसेंजर गाड़ी में, अधूरे मनुष्य, अपना-अपना दृष्टिकोण, सत्य झुलसता है आदि कहानियों में प्रसंग या घटनाओं की को प्रभावी रूप से उभरने के लिए विवरणात्मक शैली और विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग भारी मात्रा में किया है। 'ताश का खेल' नाम की कहानी में कहानी के परिवेश को उभरते समय विवरणात्मक शैली का प्रयोग दिखाइए देता है जैसे- ''अरगनी पर टंगी वायरल साड़ी को झाड़ कर पहनने के बाद जानकी दीवार पर लटके आईने के सामने जा खड़ी हुई। उसने अपने सवरें हुए बालों को हाथों से तनिक ठीक किया। माथे पर लगी कुंकुम की बिंदी पसीने से कुछ फैल गई थी। उंगली पर धोती का किनारा लपेटकर उसने बिंदी को चारों तरफ से ठीक किया। बिंदी का आकार कुछ छोटा हो गया। उसे मन-ही-मन इस बात का संतोष था कि छोटे आकार की बिंदी भी उसके माथे पर अच्छी लग रही है। इसके बाद उसने चूड़ियों के डिब्बे में मोड़कर रखा दो रुपयों का नोट निकला और उसे धोती के पल्ले में बांध लिया। पीछे मूड़ते ही उसने अपना डेढ़ साल का लड़का रवि दिखाई दिया। अपने आती नाजुक पैरों को घसीटते हुए किसी तरह वह उसके पास पहुंच गया और उसने उछलकर अपने दोनों हाथ उसकी और फैला दिये।''

इस तरह से अन्य कहानियों में परिवेश को उभरते समय, वैचारिक बातों का विश्लेषण करते समय लेखक ने विवरणात्मक और एवं विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग प्रचुरता से किया है।

कहानीकार ने अपनी कहानियों में सामाजिक यथार्थ को समग्रता से प्रस्तुत किया है। जिसका सूक्ष्म चित्रण कहानियों में मिलता है। सामाजिक एवं पारिवारिक या व्यक्तिगत समस्याओं को उभरते समय कहानीकार ने व्यंग्यात्मक भावात्मक शैलियों का प्रयोग किया हुआ है। कहानियों में भावों की अभिव्यक्ति करते समय भावात्मक शैली के दर्शन होते हैं। 'मौन एक भाषा है' कहानी में अलमु ओच्चि रवि की मां अपनी छटपटाहट की भावना को व्यक्त करती हुई चिल्लाकर अपने पति को सुनती है, ''उस नीचे ने तुझे भी यहां बुलाया है?....हे ईश्वर! तुम सब लोग मिलकर मुझे छेद- छेदकर क्यों मार रहे हो?'' ऐसे प्रसंगों का उद्घाटन करते समय डी जयकांतन जी ने भावात्मक शैली का प्रयोग किया हुआ है।

इसी कहानी में अपने विचार को अभिव्यक्त करते समय लेखक ने व्यंग्यात्मक शैली का भी प्रयोग किया है। जैसे- 'मौन एक भाषा है' कहानियों में घर से निकलते समय रवि अपनी भाभी से कहता है, ''भाभी, तुमने घर के पिछवाड़े लगे हुए कटहल के पेड़ को देखा है न? फल उसकी शाखाओं में न लगकर उसके तन में लगे हुए हैं। इसका कारण क्या तने का और डोलियों का परस्पर एक-दूसरे से विरोध है? नहीं! तने में फलों को लगा देखकर कोई भी इस बात को नकार नहीं सकता कि शाखाओं का आधार वृक्ष का तना ही है।''

प्रस्तुत पंक्तियों में रवि अपनी भाभी को अपनी मां किस प्रकार से पूरे परिवार का आधार है, यह बताना चाहता है। इसलिए उसने व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग करते हुए मां को कटहल का तने की उपमा दी है और पारिवारिक सदस्यों को डोलियों की उपमा दी है।

डी जयकांतन जी ने अपनी कहानियों के प्रसंग या घटनाओं में जीवंतता लाने के लिए चित्रात्मक एवं बिंबात्मक शैली का प्रयोग प्रचुरता से किया है। 'सत्य झुलसता है' कहानी में प्रसंग को उभरते समय लेखक ने चित्रात्मक एवं बिंबात्मक भाषा का प्रयोग इस प्रकार किया है।-

''कोदै ने मेज पर से हॉर्लिक्स का कप उठाकर उनके हाथ में दिया। बुढ़ापे के कारण दुर्बल हुए अपने कांपते हाथों में कप थामे हुए उन्होंने हॉर्लिक्स पिया। गरम-गरम पेय पीते ही उसके माथे पर पसीना झलकने लगा। इसे देख कोदै ने पंखा चलाया। हवा में उनके सफेद रंग के घने बालों की छोटी-छोटी लेट माथे पर झूलने लगी। सोमनाथ की दृष्टि पूरे हॉल में घूमी घूम गयी। वहां रखे रेडियो, एक कोने में एक स्टैंड पर गौतम बुद्ध की प्रतिमा, खिड़की पर लटकता हल्के नीले रंग का परदा आदि को ध्यान से देखने के बाद उनकी दृष्टि कोदै पर आकर टिक गयी। उनकी आंखों में प्यार उमड आया। वह एक बच्चे की तरह मुस्कुराने लगे।''

कहानियों के कुछ पत्र ऐसे हैं जो प्रत्यक्ष कहानी में दिखाई नहीं देते परंतु अपने मन की भावनाओं को और विचारों को स्पष्ट रूप से अपने परिजनों के आगे नहीं कह सकते, ऐसे पत्रों के विचार और भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए कहानीकार ने पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया है। 'युगसंधि', 'सत्य झुलसता है, इन कहानियों में अनुक्रम गीता और अनजान आदमी के द्वारा पत्र लिखा गया है। जिससे पत्रात्मक शैली उभर कर सामने आई है। 'युगसंधि' कहानी में विधवा गीता अपने पिता से स्वयं ने दूसरा विवाह करने के निर्णय को पत्र के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं जैसे-

''मेरे प्यारे पिताजी माता जी और दादीजी!

'छह महीने तक सोचने-विचारने के बाद आज एक निर्णय पर पहुंचकर बड़े शांत भाव से में आप लोगों को यह पत्र लिख रही हूं । इस पत्र के आप लोगों तक पहुंचाने के बाद हमारे बीच का पत्र व्यवहार रुक जाएगा, शायद.....

....

....

आप लोगों के प्रति सदा अडिग प्रेम रखनेवाली,

- गीता'

अतः यहां पर गीता की मां के विचार, निर्णय और अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति मिली है।

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि डी जयकांतन जी ने अपनी कहानियों को आकर्षक, प्रभावशाली, सहज, संप्रेषण और अनोखा बनाने के लिए विभिन्न शैलियों का प्रयोग अत्यंत कुशलता से किया है। जिसे कहानी अधिक आकर्षक एवं प्रभावशाली बनी है ।

3.3.4 'अधूरे मनुष्य' की समसामयिकता :

कहानी आधुनिक युग की महत्वपूर्ण गद्य विधा है। कहानी मानवीय समाज की भावना, विचार, समस्या आदि को प्रभावशाली ढंग से वाणी देती हैं। डी जयकांतन आधुनिक काल के अंतर्गत आनेवाले एक तमिल कथाकार है। जिन्होंने अपनी कहानियों में सामाजिक यथार्थ को अत्यंत सक्षमता से और एक नई दृष्टि से उभरने की कोशिश की है। उनका कहानी संग्रह 'अधूरे मनुष्य' डॉ. के. ए. जमुना द्वारा हिंदी भाषा में अनूदित हुआ है। यह कहानी संग्रह भी सामाजिक यथार्थ की सच्ची तस्वीर है। इस कहानी संग्रह की कहानियों में अनेक व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक समस्या को वाणी मिली है। अगर इसी कहानी संग्रह का समसामयिकता की दृष्टि से अध्ययन करते हैं तो हमें पता चलता है कि आज भी डी जयकांतन की कहानियां आधुनिक समस्या, विचार और भावनाओं से तादात्म्य स्थापित करती है। समसामयिकता का सामान्य अर्थ होता है- वर्तमानकालीन अर्थात् आज की परख करना या रखना। इस तरह से आज भी 'अधूरे मनुष्य' कहानी संग्रह में संकलित कहानियां ताश का खेल, मौन एक भाषा है, युगसंधि, दिन की एक पैसेंजर गाड़ी में, सत्य झुलसाता है, अधूरे मनुष्य, अपना-अपना दृष्टिकोण आदि कहानियों में चित्रित समस्याएं और घटनाएं आज भी समसामयिकता के परिप्रेक्ष्य में आती हैं।

डी जयकांतन के 'अधूरे मनुष्य' कहानी संग्रह की पहली कहानी 'ताश का खेल' है। यह कहानी एक पारिवारिक एवं व्यक्तिगत तथा सांस्कृतिक आदर्श तथा असाह्य, मजबूर, गरीब व्यक्तियों के मन की पीड़ा को प्रस्तुत करनेवाली कहानी है। इस कहानी की प्रमुख नारी पात्र जानकी है। जो रूपवती है, परंतु अत्यंत गरीब। इस कारण सौंदर्यावती होने के बावजूद उसकी शादी अत्यंत कुरूप, लुले-लंगड़े परंतु अमीर शिवसामी से होती है। यह शादी करने के लिए वहां असहाय और मजबूर है। वह मन की इच्छा के खिलाफ शादी करती है और शादी के बाद आत्महत्या का विचार भी करती है। परंतु अपने रवि नामक छोटे बेटे को देखकर मजबूरन उस पति शिवसामी के साथ जीवन जीने का समझौता करती है। इसमें उसका दुख और पीड़ा उभर कर आई है। जब पति के साथ उसका झगड़ा होता है तब वह पागलों की तरह बौखला जाती है वह कहती है- ''यही सब-कुछ देखने के लिए ही तो आपने अपने प्यारे बेटे का ब्याह रचाया था... देखिए... जी भरकर देखिए...।'' कहानी का दूसरा एक पुरुष पात्र है रामभद्रन वह भी दिखने में सुंदर हैं परंतु अपने मामा के घर पर ही बड़ा हुआ है। वह भी निर्धन है । उसके मामा बड़े सधन व्यक्ति है। उसे भी ऐसे ही मामा की लड़की लक्ष्मी से शादी करनी पड़ती है । जो दिखने में अत्यंत कुरूप है। इसका दुख रामभद्रन को भी सलता है।

अतः जानकी और रामभद्रन दोनों ऐसे पात्र हैं जो असहाय और मजबूर हैं, जो अत्यंत पीड़ित और दुखी होकर अपना जीवन किसी तरह काट रहे हैं। ऐसे पात्रों के माध्यम से आज के नवयुवकों की पीड़ा,

मजबूरी असहायता को भी देखा जा सकता है। अतः आज के नवयुवकों की यह भी समस्या बन गई है। इस कहानी की नारी इतनी दुखी होने के बावजूद भी अपने सामाजिक संस्कारों का और भारतीय नारी का आदर्श सामने रखती हुई दिखाई देती है और अपनी इच्छा के अनुसार मिलनेवाले प्रेम को ठुकराती है। वह में रामभद्रन को कहती है, ''आपने कहा था कि खेलनेवाले मेरे पति और आपकी पत्नी हैं। वस्तुतः आपकी यह बात गलत है। वह भी हमारी तरह ताश के पत्ते हैं। हां...आप कह सकते हैं कि उनका कोई 'प्वाइण्ट' नहीं है। खेलनेवाला मनुष्य नहीं, ईश्वर हैं। वह गलत खेल रहा है, ऐसा कहने का हमें अधिकार कहां है?''

'मौन एक भाषा है' यह कहानी भी समसामयिकता से परिपूर्ण है। इस कहानी में डी जयकांतन जी ने अनेक विषयों को वाणी दी है। इस कहानी की मूल विषय वस्तु है - प्रौढ़ नारी की पीड़ा और उसका मौन। कहानी में अलमु ओच्चि प्रमुख नारी पात्र है। वह घर के किसी भी प्रश्न पर सहज उत्तर नहीं देती। अपना मौन ही धारण करती है। उसकी आठ संताने हैं। उसका दूसरा बेटा रवि है। जो विदेश में पढ़ाई करके वापस लौटा है और उससे अधिक उम्रवाली महिला से उसने प्रेम विवाह किया हुआ है। इस प्रेम विवाह को अलमु ओच्चि और उसका पति सिंगाराम का परिवार स्वीकृति नहीं देता। यह परिवार अपने परंपरागत संस्कारों से जकड़ा है। इस कारण जाति-पाति के बाहर अपने बेटे के विवाह का वह तीव्र विरोध करते हैं और बेटे को घर से निकाल देते हैं। उसके पिता कहते हैं, ''मैं सोच लिया है कि मेरे सात ही पुत्र हैं और तुझे पूरी तरह भुला दिया है। यदि तू लौटकर यहां न आओ तो यही अपने परिवार के प्रति और जन्म देनेवाली मां के प्रति बहुत बड़ा उपकार होगा।''

बेटा रवि शादी कर मद्रास में क्लीनिक चलाता है। परंतु यह परिवार उसे स्वीकारता नहीं है। परंतु जब रवि की मां जो पचास साल में गर्भवती होती है और आत्महत्या करने की कोशिश करती हैं, तब पिताजी अपने इस बेटे को अपनी मां के खातिर अपने पास बुला लेते हैं। तब पिता को छोड़कर भाई-बहनें अपने भाई से खूब हंसी मजाक करते हैं और उसे स्वीकारते हैं। तभी मां के आत्महत्या करने के की बात को रवि बेटा जानना चाहता है, तब वह यह गर्भवती होने की बात अपने परिवार से बताता है। उस समय परिवारवाले उससे घृणा करने लगते हैं, तभी पिताजी की आज्ञा से रवि मां को अपनी विदेशी पत्नी के पास रहने के लिए लेकर चला जाता है, तब पिता भी उसे जाने की अनुमति दे देते हैं। अर्थात् जो लोग प्रेम विवाह को अस्वीकृति करते हैं वही ऐसी घटना घटित होने पर उसे स्वीकारते हैं। अतः यहां मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं। आज भी समाज में ऐसे कई प्रेम विवाह होते हैं। जिसे माता-पिता को स्वीकृत नहीं करते, परंतु कुछ अशुभ घटना घटित होने पर उसे स्वीकार करते हैं। रवि जैसे पढ़े-लिखे युवकों में आज भी यह समस्या दिखाई देती है। साथी आज भी समाज में कई ऐसे परिवार हैं जो प्रेम विवाह का विरोध करते हैं।

'युगसंधि' कहानी में भी समसामयिकता से भारी कई उदाहरण देख जा सकते हैं। प्रस्तुत कहानी दो पीड़ितों के अंतर पर प्रकाश डालती हैं और पुरानी रुढी-परंपराएं, जर्जर प्रथाओं का विरोध करती है। कहानी में गौरी दादी लगभग सत्तर साल की विधवा है और लगभग 30 साल की उसकी पोती गीता भी बाल विधवा है। दो विधवाओं के जीवन संघर्ष के माध्यम से इन मिथ्या एवं जर्जर रूढ़ि-परंपरा, प्रथाओं का विरोध दिखलाया है। गौरी दादी पुरानी एवं जर्जर प्रथाओं एवं संस्कारों का विरोध कर आधुनिकता को

स्वीकार कर दो युगों की संधि करने का आदर्श खड़ा करती है। इस कहानी की गीता बाल विधवा है। आज के समाज में भी बाल विधवा विवाह का विरोध किया जाता है। परंतु कहानीकार डी जयकांतन उसी का समर्थन करते हुए दिखाई देते हैं। जो आज समय की मांग है। गीता बाल विधवा है। गीता के परिवार के लोग उसके पुनर्विवाह का विरोध करते हैं, किंतु उसकी दादी जो स्वयं एक बाल विधवा थी। उसका पक्ष लेती है। गीता का पत्र पढ़कर स्तंभित से खड़े अपने पुत्र से वह कहती है, ''हां बेटा, मैं पागल हूं? मेरा पागलपन नया नहीं, बहुत पुराना है... मेरा यहां पागलपन कभी नहीं मिट सकता। मैं चाहती हूं कि मेरा पागलपन मेरे साथ ही मिट जाए। उसका पागलपन इतनी जल्दी, एकाएक दूर हो गया, इसके लिए कोई क्या कर सकता है? उसने तो कह ही दिया कि वह जो कुछ करने जा रही है, वह उसकी नजर में बिल्कुल ठीक है। तरह-तरह का भेष धारण कर बुरा नाम कमाने से बचने के लिए ही उसने यह निर्णय लिया है।''

अतः इस कहानी की गौरी दादी प्राचीन युग का प्रतिनिधि पात्रा नहीं है, तेजी से सामने आते हुए नए युग को प्रेम पूर्वक अपनाने की क्षमता रखनेवाली एक क्रांतिकारी वृद्धा है। आज समाज में कई ऐसे देहातों में ऐसी स्थिति के दर्शन होते हैं। जिसमें गीता और गौरी दादी जैसी नारियों मौजूद हैं, जो ऐसी बर्बर प्रथाओं का विरोध करती है और अपना मुक्त जीवन जीना चाहती है।

'अधूरे मनुष्य' कहानी के कहानीकार ने मनुष्य के अधूरेपन पर व्यंग्य कसा है। इस कहानी के नायक-नायिका कण्णन और राजम परस्पर एक दूसरे को मनोग्रस्त प्रतीत होते हैं। कहानीकार बताना चाहते हैं कि आज के समाज में प्रायः सभी व्यक्ति अपूर्ण होते हैं परंतु हर व्यक्ति दूसरे को अपूर्ण सिद्ध करने का प्रयास करता है। इसी कहानी में कण्णन को लगता है कि मेरी पत्नी राजम मानसिक रोगी है। उसका विचित्र रूप से आचरण उसे इस निर्णय पर लाकर खड़ा कर देता है, इसलिए वह अपनी पत्नी का निरीक्षण करता है और किसी तरह वह उसे साइक्याट्रिस्ट डॉक्टर के पास ले जाना चाहता है। जब उसे वहां लेकर जाने के बाद राजम ही उसके पति को मानसिक रोगी सिद्ध करती है और डॉक्टर भी यह मानकर उसे पर उपचार हेतु उसे अपने अस्पताल में रखते हैं। पत्नी को पति को छोड़कर घर जाती है। अतः यहां पर हर व्यक्ति अपने दूसरे व्यक्ति की कमियों को खोजता रहता है और दोष देता रहता है। आज भी इस युग में हमारे समाज में ऐसे कई लोग हैं जो दूसरों को अपूर्ण मानते हैं और खुद को पूरा मानने पर तुले हैं तथा यह कहानी भी समसामयिकता से युक्त हैं।

'अधूरे मनुष्य' इस कहानी संग्रह की अन्य कहानियां 'अपना-अपना दृष्टिकोण', 'सत्य झुलसता है', : 'दिन की एक पैसेंजर गाड़ी में', आदि कहानियों में चित्रित सामाजिक यथार्थ वर्तमान सामाजिक यथार्थ, सामाजिक तथा पारिवारिक समस्याओं से मेल खाता है। जिनमें आज की समसामयिकता सहज ढंग से देखी जा सकती है।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए उचित विकल्पों को चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

१. 'अधूरे मनुष्य' इस अनूदित किताब के अनुवादक ...... है।

अ) डी जयकांतन आ) डॉ. के. ए. जमुना

इ) पु.ल. देशपांडे ई) वे. सु. अय्यर

२. 'अधूरे मनुष्य' यह अनुदित किताब के मूल लेखक........हैं।

अ) डी जयकांतन आ) डॉ. के. ए. जमुना

इ) पु.ल. देशपांडे ई) वे. सु. अय्यर

३. डी जयकांतन जी का जन्म सन् .... में हुआ।

अ) 1904 आ) 1914 इ) 1924 ई) 1934

४. डी जयकांतन....भाषा के कथाकार हैं।

अ) हिंदी आ) मराठी इ) बंगाली ई) तमिल

५. डी जयकांतन ने लगभग.....कहानियों का सृजन किया है।

अ) 100 आ) 200 इ) 300 ई) 240

6. डी जयकांतन ने अब तक लगभग..... उपन्यासों का निर्माण किया है।

अ) 12 आ) 40 इ) 50 ई) 9

7. डी जयकांतन को 2002 में...... पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

अ) पद्माश्री आ) पद्मभूषण इ) ज्ञानपीठ ई) साहित्य अकादमी

8. डी जयकांतन की कहानी 'ताश का खेल' की नायिका....... है।

अ) जानकी आ) सरस्वती अम्माल इ) गौरी दादी ई) राजाम

9. 'ताश का खेल' कहानी में लेखक ने... की त्रासदी का चित्रण किया है।

अ) व्यक्तिगत आ) पारिवारिक इ) सामाजिक ई) राजनीतिक

10. 'मौन एक भाषा है' कहानी में अलमु कोच्चि के बेटे ...... ने विदेश में पढ़ाई की थी।

अ) सुंदरम आ) रवि इ) मत्तु ई) सोमू

11. .... कहानी के रवि का प्रेम विवाह हुआ था।

अ) मौन एक भाषा है आ) ताश का खेल

इ) अधूरे मनुष्य ई) युगसंधि

12. युगसंधि कहानी की प्रमुख नारी पत्र ...... है।

अ) गीता   आ) जाना   इ) मीणा   ई) गौरी दादी

13. 'युगसंधि' कहानी की गीता ..... है।

अ) विधवा बाल   आ) विधवा   इ) गायिका   ई) नूर्तिका

14. 'युगसंधि' कहानी में गीता..... करने का निर्णय लेती हैं।

अ) नौकरी   आ) पुनर्विवाह   इ) मेहनत   ई) अध्ययन

15. 'दिन की एक पैसेंजर गाड़ी में' कहानी के कहानीकार........ है।

अ) डी जयकांतन   आ) डॉ. के. ए. जमुना

इ) पु.ल. देशपांडे   ई) वे. सु. अय्यर

16. 'एडल्ट्स ओनली' कहानी का प्रमुख पात्र........है।

अ) रामस्वामी   आ) शिवसमी   इ) परमेश्वरन   ई) कन्नन

17. एडल्ट्स ओनली रामस्वामी का बेटा.....है।

अ) सोमू   आ) मीनू   इ) गणेश   ई) रामू

18. 'अपना-अपना दृष्टिकोण' कहानी का नायक .... है।

अ) शिवरमन   आ) शंभूशास्त्री   इ) मुरली   ई) सोमनाथन

19. 'अपना-अपना दृष्टिकोण' कहानी की प्रमिला..... है।

अ) गायिका   आ) नृतिका   इ) खिलाड़ी   ई) अभिनेत्री

20. 'सत्य झुलसता है' कहानी में ..... विवाह का चित्रण किया है।

अ) प्रेम   आ) पुर्न   इ) अनमेल   ई) विधवा

21. 'सत्य झुलसाता है' कहानी के परमेश्वरन की पत्नी.....है।

अ) गीता   आ) प्रमिला   इ) कोदै   ई) राजम

22. 'अधूरे मनुष्य' कहानी में कण्णन की पत्नी ....है।

अ) गीता   आ) राजाम   इ) जानकी   ई) प्रमिला

23. एक दूसरे को अधूरा देखने की मनुष्य की प्रवृत्ति.... कहानी में उजागर हुई है।

अ) अधूरे मनुष्य   आ) युगसंधि   इ) ताश का खेल   ई) अपना-अपना दृष्टिकोण

3.5 शब्दार्थ, संदर्भ, टिप्पणियां:

मनोवेदना – मन की वेदना।

साइक्याट्रिस्ट – मानसिक व्याधि को दूर करने वाला वैद्य या डॉक्टर।

झुलसना – जल जाना।

किंकर्तव्यविमूढ़ – दुविधा भरी स्थिति।

जीवनसंगिनी – धर्म पत्नी।

ब्रह्मचारी – ब्रह्मचार्य का पालन करनेवाला।

मुन्नारगुडी – एक स्थान का नाम।

त्यागराज : कर्नाटक संगीत के कीर्तिस्तंभ।

कुंवारा – जिसकी शादी नहीं हुई ऐसा पुरुष।

युगसंधि – दो युगों की संधि या मिलाप।

मौन – शांत रहना, कुछ भी बात न करना।

ताश का खेल – पत्तों का खेल।

मदमाती – पागल आदमी।

3.6 स्वयं अध्ययन प्रश्न के उत्तर :

1. आ) डॉ. के. ए. जमुना	2. अ) डी जयकांतन	3. ई) 1934	4. ई) तमिल
5. आ) 200	6. आ) 40	7. इ) ज्ञानपीठ	8. अ) जानकी
9. अ) व्यक्तिगत	10. आ) रवि	11. अ) मौन एक भाषा है	12. ई) गौरी दादी
13. अ) विधवा बाल	14. आ) पुनर्विवाह	15. अ) डी जयकांतन	16. अ) रामस्वामी
17. अ) सोमू	18. इ) मुरली	19. अ) गायिका	20. इ) अनमेल
21. इ) कोदै	22. आ) राजम	23. अ) अधूरे मनुष्य	

3.7 सारांश :

1. भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में डी जयकांतन का कहानी संग्रह 'अधूरे मनुष्य' का अध्ययन करने के उपरांत सारांश रूप में कहा जा सकता है कि तमिल भाषा के ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त डी जयकांतन का

व्यक्तित्व एवं कृतित्व अत्यंत प्रभावशाली है। जिससे उनके जीवन संघर्ष और साहित्य संघर्ष से पाठक आदर्श लेकर अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है।

2. 'अधूरे मनुष्य' कहानी संग्रह के वस्तु विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि डी जयकांतन जी ने इस कहानी संग्रह की कहानियों में विषय वस्तु का विवेचन सूक्ष्मता से किया है। विशेष रूप से सामाजिक यथार्थ को समग्रता से उभारते समय कहानीकार ने सामाजिक एवं पारिवारिक परिवेश को सच्चाई से चित्रित किया है।

3. मानवता और समाज को केंद्र में रख कर नारी का यथार्थ चित्रण,नारी विमर्श एवं नारी त्रासदी, पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याएं, मनुष्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, भारतीय समाज की जर्जर रुढी-परंपराएं एवं प्रथाएं, नैतिकता-अनैतिकता, दांपत्य जीवन प्रणाली, प्रेम, त्याग, कर्तव्यशीलता आदि विषयों का विवेचन गहराई से हुआ है।

4. 'अधूरे मनुष्य' कहानियों का भावपक्ष का अध्ययन करने से सारांश रूप में कहा जा सकता है कि डी जयकांतन ने मानवीय भावनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति की है। जिससे पाठकों के हृदय द्रवित होता हैं। इस कारण कहानियों को भखवाभिव्यक्ति प्रभावशाली एवं संप्रेषणीय बनी है।

5. 'अधूरे मनुष्य' कहानियों के कलापक्ष का अध्ययन करने से कहा जा सकता है कि डी जयकांतन जी ने अपनी कहानियों के कथानक को गति देने के लिए, कहानी में प्रभाव उत्पन्न करने के लिए, आकषर्कता निर्माण करने के लिए भावानुकूल भाषा, प्रसंगानुकूल भाषा, पत्रानुकूल भाषा तथा सहज, सरल, संप्रेषणीय भाषा का प्रयोग किया है।

6. कहानी में प्रभाव उत्पादकता के निर्माण के लिए डी जयकांतन ने विवरणत्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, संस्मरणात्मक शैली, संवादात्मक शैली, बिंबात्मक एवं चित्रात्मक शैलियों का प्रयोग सहजता से किया हुआ है।

7. 'अधूरे मनुष्य' कहानी संग्रह की समसामयिकता आज के परिवेश, प्रसंग के अनुकूल है। जिसमें सामाजिक समस्या का यथार्थ चित्रण हुआ है। जो भारतीय समाज का वर्तमान स्वरूप स्पष्ट करता है।

8. अतः 'अधूरे मनुष्य' डी जयकांतन जी का महत्वपूर्ण कहानी संग्रह है। जो मानवीय सामाजिक समस्याओं को सूक्षता से प्रस्तुत करता है।

3.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. डी. जयकांतन का कहानी संग्रह 'अधूरे मनुष्य' की कहानियों की विषयवस्तु पर प्रकाश डालिए।
2. डी. जयकांतन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
3. डी. जयकांतन के कहानी संग्रह 'अधूरे मनुष्य' के भावपक्ष पर प्रकाश डालिए।

4. डी जयकांतन के कहानी संग्रह 'अधूरे मनुष्य' के कलापक्ष पर प्रकाश डालिए।

5. 'अधूरे मनुष्य' कहानी संग्रह की भाषा पर प्रकाश डालिए।

6. 'अधूरे मनुष्य' कहानी संग्रह की शैली पर प्रकाश डालिए।

7. 'अधूरे मनुष्य' कहानी संग्रह की समसामयिकता पर प्रकाश डालिए।

8. 'अधूरे मनुष्य' कहानी संग्रह के आधार पर नारी जीवन की त्रासदी का चित्रण कीजिए।

ब) ससंदर्भ के लिए उदाहरण

1. ''मैं पापन हूं। महापापीन हूं! मैंने अपने बेटे के लिए इस सुंदर बच्ची के जीवन को नष्ट कर दिया।'' (पेज नंबर 23)

2. ''अरे इस पत्रिका में इस लेखक की जो धारावाहिक कहानी छपी थी, क्या तू उसी की बात कर रहा है?... मैंने भी एक-दो जगह इस फिल्म का विज्ञापन देखा था। इतनी-सी बात के लिए बच्चों को गाली क्यों दे रहा है? मैं और तू सिनेमा के बारे में कुछ नहीं जानते लेकिन आजकल के बच्चे तो फिर भी बहुत सीधे हैं....।'' (पेज नंबर 77)

3. एडल्ट्स ओनली! वे लोग इस तरह की पिक्चरों में ऐसी कौन-सी रहस्य की बातें दिखा देंगे, जिन्हें व्यक्ति शहर के जीवन में नहीं देख सकता या उससे नहीं सीख सकता?'' (पेज नंबर 96)

4. ''जीवन में प्राय: हर व्यक्ति दूसरे को अपने दृष्टिकोण से देखता है। उसके एक पहलू को देखकर एक निर्णय पर पहुंच जाता है और उसी निर्णय को पूरी तरह से सही सिद्ध करने की कोशिश में लगा रहता है।'' (पेज नंबर 116)

5. ''अपने को आपकी जीवनसंगिनी मान लेने के बाद आपसे कोई भी बात छुपाना उचित नहीं होगा। यही सोचकर मैंने यह सारी बातें आपसे कहीं। इस सत्य से आप झूलस सकते हैं, इस बात को मैं समझता हूं; किंतु मैं जानती हूं कि सत्य के ताप को सहने की शक्ति आपमें है।'' (पेज नंबर 141 - 42)

6. आपने कहा था कि खेलनेवाले मेरे पति और आपकी पत्नी हैं। वस्तुत: आपकी यह बात गलत है। वह भी हमारी तरह ताश के पत्ते हैं। हां...आप कह सकते हैं कि उनका कोई मप्वाइण्टफ नहीं है। खेलनेवाला मनुष्य नहीं, ईश्वर हैं। वह गलत खेल रहा है, ऐसा कहने का हमें अधिकार कहां है?इ्व्ह (पेज नंबर 30)

7. क्या तुम जानती हो कि विदेशों में इसे अत्यंत महत्वपूर्ण और गौरव का विषय समझा जाता है? तुमने बहुत पुण्य किए हैं... ईर्ष्या के कारण कोई तुम्हारा उपवास करें तो करने दो। मा.., मातृत्व की महिमा अपार है। (पेज नंबर 58)

8. ''क्यों मा, यहां तेरा अपमान करनेवाले लोग कौन-सी भाषा में बात करते हैं?... सभी मौन है परंतु काम बराबर हो रहा है। मौन रहकर क्या प्रेम और सम्मान के भाव को व्यक्त नहीं किया जा सकता? किसी की निंदा करने के लिए और किसी के प्रति प्रेम को व्यक्त करने के लिए क्या भाषा-रूप माध्यम का होना जरूरी है?'' (पेज नंबर 60)

9. ''हां, मैंने यह निर्णय अपनी मर्जी से ही लिया है। मेरे लिए दादीजी के अलावा और किसीने अपनी सुख सुविधाओं का त्याग किया है? कोई भी मेरे लिए ऐसा क्यों करेगा?'' (पेज नंबर 79)

10. ''एक बात कहे देती हूं कि यदि मेरा विवाह इनसे नहीं होवे तो भी मुझे खुशी ही होगी। इनके मन में मुझसे विवाह करने का एक विचार तो आया- यही मेरे लिए पर्याप्त है। (पेज नंबर 126)

11. ''ब्रह्मचारी बना रहना न अनुचित है, न उचित। देषों से रहित किसी पुरुष को तभी ब्रह्मचार्य व्रत का पालन करना चाहिए जब उसके सामने कोई लक्ष्य हो। किसी लक्ष्य को सामने रखकर ब्रह्मचारी बना रहना उचित है। केवल ब्रह्मचारी कहलाने के लिए ब्रह्मचारी बना रहना अनुचित है। बाद में वह पाप भी बन सकता है।'' (पेज नंबर 131)

12. ''अब यदि हम दोनों मिलकर जीवन-यापन करते हैं, तो यहां हम दोनों के लिए दंड-रुप ही होगा। आपके प्रति मेरे मन में कोई मिल नहीं है। जिस महापुरुष ने आपसे कहा था कि सत्य झुलसता है, मैं उनसे यह कहकर माफी मांगने जा रही हूं कि सत्य झुलसता ही नहीं, कुछ लोगों को पूरी तरह जला देता है- इस सत्य को जाने बिना मैं एक व्यक्ति को जला डाला है...'' (पेज नंबर 142)

13. ''मेरे पति की हालत कुछ दिनों से ठीक नहीं है। वह बहुत ही घबराए हुए हैं । दुखी भी हैं। अधिक बोलते भी नहीं है। रात को उन्हें नींद नहीं आती। इतना ही नहीं डॉक्टर, किसी न किसी तरह की आवाज कर मुझे भी जगा देते हैं...''(पेज नंबर 169)

14. ''हां बेटा, मैं पागल हूं? मेरा पागलपन नया नहीं, बहुत पुराना है... मेरा यहां पागलपन कभी नहीं मिट सकता। मैं चाहती हूं कि मेरा पागलपन मेरे साथ ही मिट जाए। उसका पागलपन इतनी जल्दी, एकाएक दूर हो गया, इसके लिए कोई क्या कर सकता है? उसने तो कह ही दिया कि वह जो कुछ करने जा रही है, वह उसकी नजर में बिल्कुल ठीक है। तरह-तरह का भेष धारण कर बुरा नाम कमाने से बचने के लिए ही उसने यह निर्णय लिया है।'' (पेज नंबर 82)

15. ''तू शास्त्र की... नियम की बात कर रहा है! क्या तू जानता है कि उसे समय तुझे क्या करना चाहिए था? क्या तू जानता है कि शास्त्र के नियमों ने मेरी क्या दुर्दशा की?... उस समय तू दूध-पीता बच्चा था... मेरी उम्र सिर्फ पंद्रह साल की थी! (पेज नंबर 83)

3.9 क्षेत्रीय कार्य :

- 'अधूरे मनुष्य' का मराठी भाषा में अनुवाद करने का प्रयास करें।
- मराठी में लिखित साहित्य का हिंदी भाषा में अनूदित करने का प्रयास करें।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

- बदलते चेहरे, (हिंदी), अनुवाद, राजगोपालन, नॅशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली
- हिंदी लघुकथा, सं. डॉ. नामवरसिंह, अनु. डॉ. प्रभाकर माचवे

❑❑❑

इकाई 4

(पु. ल. देशपाण्डे के हास्य-व्यंग्यात्मक लेख (मराठी) – पु. ल. देशपाण्डे)

अनु. वेदकुमार वेदालंकार

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय विवेचन

4.3.1 पु. ल. देशपांडे जी का जीवन परिचय व्यक्तित्व एवं कृतित्व

4.3.2 पु.ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेख का वस्तुविवेचन

4.3.3 हास्य-व्यंग्यात्मक लेख का भावगत एवं शिल्पगत अध्ययन

4.3.3.1 हास्य व्यंग्यात्मक लेख का भावगत अध्ययन

4.3.3.2 हास्य-व्यंग्यात्मक लेख का शिल्पगत अध्ययन

4.3.3.2.1 हास्य-व्यंगात्मक लेख और भाषा

4.3.3.2.2 हास्य-व्यंग्यात्मक लेख और शैली

4.3.4 हास्य-व्यंगात्मक लेख और सामाजिकता

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

4.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप-

1. मराठी साहित्यकार प.ल. देशपांडे जी के व्यक्तित्व से परिचित हो जाएंगे।
2. मराठी साहित्यकार पु. ल. देशपांडे जी के कृतित्व और उनकी रचनाओं से परिचित हो जाएंगे।
3. मराठी साहित्यकार पु. ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेख इस अनूदित किताब से परिचित हो सकेंगे।
4. साहित्यकार पु. ल. देशपांडे से के हास्य-व्यंग्यात्मक लिखों के भावपक्ष से परिचित होंगे।

5. साहित्यकार पु. ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेखों के विभिन्न विषयवस्तु से परिचित होंगे।
6. साहित्यकार पु.ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेखों में चित्रित समाज के यथार्थ रूप से परिचित होंगे।
7. पु. ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेखों के शिल्प-विधान से अर्थात् भाषा-शैली से परिचित हो जाएंगे।

4.2 प्रस्तावना :

भारत विभिन्न धर्म और जातियों से भरा हुआ देश है। भारत में अनेक प्रकार की भाषाएं और बोलियां का प्रयोग किया जाता है। जब हम भारतीय साहित्य पढ़ते हैं, तब भारत की विभिन्न भाषाओं में लिखित साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण बन जाती हैं। हिंदी, मराठी, तमिल, कन्नड़, बंगाली, गुजराती, भोजपुरी, मलयालम, उर्दू आदि भाषाओं का साहित्य 'भारतीय साहित्य' की परिधि के अंतर्गत आता है। भारतीय साहित्य पढ़ते समय इन भाषाओं के साहित्य को पढ़ना अनिवार्य बनता है। स्नातकोत्तर की दृष्टि से देखा जाए तो भारतीय साहित्य के सैद्धांतिक पक्ष का अध्ययन करने के साथ-साथ हमें पाठ्यक्रम में दिए गए मराठी भाषा के पु. ल. देशपांडे जी के 'पु. ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेख' रचना का अध्ययन करना है। जो भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में आता है और इस दृष्टि से उसका अध्ययन करना आवश्यक बन जाता है। इस इकाई में हम 'भारतीय साहित्य' की संकल्पना को सामने रखकर मराठी के प्रसिद्ध हास्य-व्यंग्यकार पु. ल. देशपांडे जी के कुछ 'हास्य-व्यंग्यात्मक लेख' का अध्ययन करने वाले हैं। इस इकाई में पु. ल. देशपांडे जी के लेख पढ़ते समय पु. ल. देशपांडे जी का जीवन परिचय, पु. ल. देशपांडे जी के व्यंग्यात्मक लेख की विषयवस्तु, पु.ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेख का भावपक्ष, पु. ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेख में चित्रित सामाजिक यथार्थ, हास्य-व्यंग्यात्मक लेखक का शिल्प विधान आदि का गहराई से अध्ययन किया जाएगा।

4.3 विषय विवेचन :

4.3.1 पु. ल. देशपांडे जी का जीवन परिचय व्यक्तित्व एवं कृतित्व :

- **जीवन परिचय**

आधुनिक मराठी के महत्वपूर्ण रचनाकारों में पु. ल. देशपांडे जी का नाम अग्रगण्य है। पु. ल. देशपांडे जी मराठी साहित्य के लोकप्रिय रचनाकार हैं। वह हास्य-व्यंग्य के महत्वपूर्ण रचनाकार माने जाते हैं। साथ ही वे एक नाटककार, हास्यव्यंग्यकार, कथाकार, अभिनेता, संगीतकार, पटकथा लेखक तथा गायक भी हैं, मराठी साहित्य के इस अग्रगण्य रचनाकारों को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया है। ऐसे साहित्यकारों की रचना का अध्ययन करने के लिए हमें उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होना आवश्यक है। उनके व्यक्तित्व को निम्न बिंदुओं के माध्यम से देखा जा सकता है।

पुरुषोत्तम लक्ष्मण देशपांडे जी को पु. ल. इस नाम से भी जाना जाता है। मराठी साहित्य में हास्य-व्यंग्य के द्वारा पाठकों को और दर्शकों को हास्यानंद से भर देनेवाले इस लेखक का जीवन परिचय देखा जा सकता है।

जन्म एवं परिवार :

पु.ल. देशपांडे जी का जन्म सन् 8 नवंबर 1919 को मुंबई के गांवदेव नामक इलाके में गोंड सारस्वत ब्राह्मण परिवार में हुआ। इनके पिता जी का नाम लक्ष्मण त्र्यंबक देशपांडे था। जो आडवाणी कागज कंपनी में काम करते थे। वह कोल्हापुर से थे। उनकी माता जी का नाम लक्ष्मीबाई लक्ष्मण देशपांडे था। जो कारवारी नामक गांव से थी। उनकी पत्नी सुनीता देशपांडे और उनके मानस पुत्र दिनेश ठाकुर थे।

शिक्षा-दीक्षा :

आधुनिक मराठी साहित्य के महत्वपूर्ण हास्य-व्यंग्य लेखक पु.ल. देशपांडे जी उच्च शिक्षित थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा 'पार्ले तिलक विद्यालय' में हुई। उसके बाद की शिक्षा फर्ग्यूसन महाविद्यालय, पुणे से उन्होंने स्नातक और स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की और विलिंग्डन महाविद्यालय सांगली में भी उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की। पु. ल. देशपांडे जी को अपनी मैट्रिक तक की पढ़ाई में अनेक पाठशालाओं की समस्याओं से गुजरना पड़ा। वह अपने 'हसवणूक' इस किताब के 'शिशुकक्षा से मैट्रिक' तक इस अनुदित हास्यव्यंग्यात्मक लेख में इस पीड़ा को उजागर करते हैं। वह लिखते हैं कि, 'शिशुकक्षा से लेकर मैट्रिक तक का मेरा अध्ययन काल एक दुख भरी दास्तांन है। अनेक कठिनाइयां झेलने की करुण कहानी है।' उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी होने के बाद कुछ समय तक अध्यापन की नौकरी भी की। इस तरह शिक्षा जीवन के प्रारंभिक साल तकलीफ में बीते। माध्यमिक शिक्षा पूरी होने के बाद पु.ल. देशपांडे जी ने 'इस्माईल युसूफ कॉलेज' से इंटर एवं सरकारी लॉ कॉलेज से एल.एल.बी. प्राप्त की है।

नौकरी और अन्य :

अपनी शिक्षा पूरी होने के बाद पु. ल. देशपांडे जी ने मुंबई में कलेक्टर कचहरी एवं प्राप्ति कर विभाग में कुछ समय तक काम किया। उसके पूर्व पेट्रोल ऑफिस और राशनिंग ऑफिस में क्लर्क की नौकरी की। साथ ही कुछ समय तक वह ओरिएंटल हाईस्कूल में शिक्षक के रूप में भी काम करते रहे।

मृत्यु :

पु. ल. देशपांडे जी की मृत्यु 12 जून 2000 में पुणे में 'पार्किनसन्स' की बीमारी के कारण हुई। उसे दिन उनकी 54 वीं सालगिरह थी। मृत्यु के समय उनकी उम्र 80 वर्ष की थी।

- **पु. ल. देशपांडे का व्यक्तित्व**

पु.ल. देशपांडे जी अपने खास व्यक्तित्व के कारण प्रसिद्ध थे। सर्वांग पूर्ण व्यक्तित्व के धनी थे। उनका व्यक्तित्व कलाओं से भरा पड़ा था। वे बहुभाषिकता के धनी थे। मराठी, हिंदी, अंग्रेजी के साथ-साथ वह

बंगाली एवं कन्नड़ भाषा को भी अच्छी तरह से जानते थे। कला के प्रति रुचि होने के कारण वह एक प्रसिद्ध साहित्यकार होने के साथ-साथ एक अभिनेता, एक गायक, एक वादक भी थे। बचपन से उन्हें प्राकृतिक शारीरिक दृढ़ता प्रदान हुई थी। दो साल की उम्र में ही वह पांच साल के बच्चे की तरह दिखते थे। वह अत्यंत होशियार थे। हमेशा कुछ ना कुछ करने में व्यस्त दिखाई देते हैं। उनके सहज, सरल व्यक्तित्व में एक वक्ता भी छुपा हुआ था। बचपन से ही उन्हें वक्तृत्व के प्रति रुचि थी। किसी भी भाषण को कंठस्थ करना उनके लिए मुश्किल काम नहीं था। उन्हें एक खास भाषण शैली अवगत थी जिसके बल पर उन्होंने बहुत बड़ा नाम कमाया। वह संगीत के के भी अच्छे ज्ञाता थे। जिसके कारण उन्हें बालगंधर्व जी ने आशीष दिया और भावी जीवन के लिए शुभकामनाएं दी। अतः पु. ल. देशपांडे जी का व्यक्तित्व सर्वांगपूर्ण है, जो पाठकों एवं दर्शकों को प्रभावित करता है।

- **पु. ल. देशपांडे जी का कृतित्व :**

पु.ल देशपांडे जी के व्यक्तित्व की तरह उनका कृतित्व भी प्रशंसनीय है। जीवन के हर क्षेत्र में संघर्ष करते हुए उन्होंने अपनी नई पहचान बनाई। अपने कृतित्व के बल पर पद्मश्री और पद्म भूषण के हकदार बने। अतः उनके कृतित्व को निम्न प्रकार से देखा जा सकता है। पु. ल. देशपांडे जी ने मराठी साहित्य को समृद्ध करने का बड़ा कार्य किया है। उन्होंने मराठी साहित्य की लगभग सभी विधाओं में लेखन कार्य किया है। जिसके माध्यम से उनके उनका साहित्यिक महत्व उजागर होता है। उन्होंने अपनी साहित्यिक यात्रा में प्रमुखता से हास्यव्यंग्यात्मक लेख, नाटक, लोकनाट्य, एकांकी, व्यक्तिचित्रण, यात्रावर्णन, उपन्यास, निबंध, अनूदित रचनाएं आदि में लेखन कार्य किया है। जिसे निम्न प्रकार देखा जा सकता है।

हास्य-व्यंग्यात्मक लेख :

पु. ल. देशपांडे जी ने अपने जीवन में अनेक विधाओं में लेखन कार्य किया है। मराठी साहित्यिक विधा 'हास्यव्यंग्यात्मक लेख' में पु. ल. देशपांडे जी ने लेखन कार्य करते हुए व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, धार्मिक आदि क्षेत्र में आनेवाली विसंगतियों का प्रमुखता से चित्रण किया है। उनके कुछ हास्यव्यंग्यात्मक लेख इस प्रकार हैं-

एका रविवारची कहाणी, बिगरी ते मॅट्रिक, मुंबईकर, पुणेकर का नागपूरकर? म्हैस, मी आणि माझा शत्रूपक्ष, पाळीव प्राणी, काही नवे ग्रहयोग, माझे पौष्टिक जीवन, उरला- सुरला, रावसाहेब, माशी, काही अप काही डाऊन, काय म्हणाले गुरुदेव?, चितळे मास्तर, चाळीशी, असा मी असामी, आपुलकी, खिल्ली, कोट्याधीश, एक शून्य मी आदि। इस प्रकार के हास्य-व्यंग्यात्मक लेख लिखकर व्यंग्यात्मक विधा को समृद्ध बनाने का प्रयास किया है।

नाटक :

पु.ल. देशपांडे जी ने नाटक विधा के अंतर्गत भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में कुछ मौलिक तो कुछ अनूदित नाटकों का निर्माण किया है। उनके कुछ मौलिक नाटक

इस प्रकार हैं - एक झुंज वाऱ्याशी, तुका म्हणे आता, तुझे आहे तुजपाशी, नवे गोकुळ, पुढारी पाहिजे, भाग्यवान, वटवट वटवट, सुंदर मी होणार आदि। कुछ अनुदित नाटक इस प्रकार हैं- अमलदार, तीन पैशाचा तमाशा, ती फुलराणी, पहिला राजा राजा इडिपस आदि अनूदित नाटकों का निर्माण कर पु. ल. देशपांडे जी ने अनेक सामाजिक विषयों को वाणी दी है।

एकांकी संग्रह :

पु. ल. देशपांडे जी ने हास्यव्यंगात्मक निबंध,नाटक के साथ-साथ एकांकी का निर्माण भी किया है। उन्होंने आम्ही लटिकेना बोलू, मोठे मासे छोटे मासे, विठ्ठल तो आला-आला इन एकांकियों का सृजन करते हुए भारतीय परिवेश को उभरने का प्रयास किया है। साथ ही पुढारी पाहिजे और वाऱ्यावरची वरात नामक लोकनाट्य का निर्माण भी उन्होंने किया है।

यात्रा वर्णन :

पु. ल. देशपांडे जी को यात्रा करना भी पसंद था। अपने देशी-विदेशी यात्राओं की अनुभूति के आधार पर उन्होंने अपूर्वाई, पूर्वरंग, जावे त्यांच्या देशा और और वंगचित्रे आदि यात्रा साहित्य का भी निर्माण किया है।

व्यक्ति चित्रण :

पु. ल. देशपांडे जी ने अपने जीवन के अनुभव के बदौलत कुछ व्यक्ति चित्रण भी लिखे हैं। समाज के लोगों के प्रति गहरी आस्था, उनसे आत्मीयता के रिश्ते, संवेदनशीलता के कारण कई व्यक्तियों से उनका गहरा संबंध रहा। उसके आधार पर उन्होंने अण्णा बाळगावकर, गजा खोत, ते चौकोनी कुटुंब, तो, दोन वस्ताद, नामू परीट, परोपकारी गंपू, बबडू, बापू काणे, बोलट, भैया नागपूरकर, लखू रिसबूड, हंड्रेड परसेंट, पेस्तन काका, हरी तात्या आदि व्यक्ति चित्रण का निर्माण उन्होंने किया है। इसके अतिरिक्त अन्य साहित्यिक विधाओं में भी उन्होंने लेखन कार्य किया है। उनकी कुछ पुस्तकें इस प्रकार हैं-गणगोत,गाठोड, खोगीर भरती, कोट्याधीश पु. ल., गोळाबेरीज, बटाट्याची चाळ, हसवणूक, व्यक्ती आणि वल्ली, भाग्यवान, जावे त्यांच्या देशा, चार शब्द आदि किताबों का लेखन कार्य भी उन्होंने किया है। साथ उन्होंने काय वाटेल ते होईल, एका कोळीयाने, कान्होजी अग्रो नामक उपन्यासों का अनुवाद किया है। साथ ही गांधीजी नामक चरित्र भी उन्होंने लिखा है।

अन्य क्रियाकलाप :

साहित्यिक लेखन के साथ-साथ पु. ल. देशपांडे जी ने अभिनय एवं फिल्म के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। फिल्म के क्षेत्र में अभिनय के साथ-साथ संगीत, पटकथा लेखन, गीत रचना, संवाद आदि का कार्य भी उन्होंने किया है। मानाचे पान, मोठी माणसे, जरा जपून, नवरा बायको, वर पाहिजे, घरधनी, दूध भात, गुळाचा गणपती, माईसाहेब फूल और कलियां, आज और कल इन मराठी एवं हिंदी फिल्मों में उन्होंने कथा लेखन, पटकथा लेखन, संवाद लेखन, संगीत एवं अभिनय का काम भी किया है।

पुरस्कार एव सम्मान :

पु. ल. देशपांडे जी का साहित्य लेखन, फिल्म लेखन, सामाजिक कार्य आदि क्रियाकलापों के कारण उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। जैसे – पद्मश्री पुरस्कार, पद्मभूषण पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, पुण्य भूषण पुरस्कार, कालिदास सम्मान, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, महाराष्ट्र गौरव पुरस्कार आदि।

अतः समग्र रूप से कह सकते हैं कि पुल देशपांडे जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व सराहनीय है। जो सामान्य पाठक एवं दर्शकों के लिए उच्च आदर्श बन सकता है एवं उन्हें सकारात्मक जीवन की ओर प्रेरित करता है।

4.3.2 पु.ल. देशपांडे जी के हास्य–व्यंग्यात्मक लेख का वस्तुविवेचन:

आधुनिक मराठी रचनाकारों में पु. ल. देशपांडे जी की एक महत्वपूर्ण हास्य–व्यंग्य रचनाकार माने जाते हैं। अपने विशेष हास्य व्यंग्यात्मक शैली में उन्होंने अनेक व्यंग्यात्मक निबंधों का सृजन किया है। उन्होंने अपने जीवन की अनुभूतियों के आधार पर अनेक रचनाओं का निर्माण किया है। उनके इस अनुभूति की झलक उनके कई निबंधों में देखी जा सकती है। उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से समाज की अनेक विसंगतियों को वाणी दी है। उन्होंने 'हास्य–व्यंग्यात्मक लेख' इस पुस्तक में संकलित निबंधों में अपने व्यक्तिगत, सामाजिक विषयों को निडरता के साथ समाज के सामने प्रस्तुत किया है। 'हास्य–व्यंग्यात्मक लेख' इस पुस्तक में अनुवादक प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार जी ने मराठी रचनाकार पु. ल. देशपांडे जी के 'हसवणूक' इस मराठी पुस्तक के कुल सात 'हास्य–व्यंग्यात्मक' निबंध मबिगरी ते मॅट्रिक, (शिशुकक्षा से मैट्रिक) 'माशी', (मक्खी) मी आणि माझा शत्रूपक्ष, (मैं और मेरा शत्रुदल) माझे पौष्टिक जीवन, (मैं और पोस्ट ऑफिस) काही अप काही डाऊन, (रेलगाड़ियां कुछ अब कुछ डाउन) काही नवीन ग्रहयोग, (कुछ नए ग्रह योग) चाळीशी, (चश्मा) साथ ही मूल पुस्तक 'गणगोत' में से रावसाहेब (रावसाहब) 'असा मी आसामी' इस किताब से काय म्हणाले गुरुदेव?, (क्या कहा गुरुदेव ने?) 'व्यक्ती आणि वल्ली' में से चितळे मास्तर (मेरे चितले मास्टर जी) इस कुल दस मराठी हास्य–व्यंग्यात्मक निबंधों का समावेश कर अनुवाद किया है। जिसमें अनेक विषयों को अभिव्यक्ति मिली है।

पु.ल. देशपांडे जी का इस अनूदित किताब में पहला हास्य–व्यंग्यात्मक निबंध का नाम है **'शिशु कक्षा से मैट्रिक तक'** इस निबंध में पु. ल. देशपांडे जी ने अपनी पाठशाला के दिनों के अनुभव को वाणी देने का काम किया है। लगभग हर व्यक्ति का पाठशाला के जीवन की शुरुआत शिशु कक्षा से होती है। उसे तरह निबंधकार जी के पाठशाला जीवन की शुरुआत भी शिशु कक्षा से ही हो जाती है। पु. ल. देशपांडे जी बताते हैं कि शिशु कक्षा से लेकर मैट्रिक तक का मेरा अध्ययन काल एक दुख भरी दास्तां है। अनेक समस्याओं को झेलने की करुण कहानी है वह अपने लेख में लिखते हैं, 'शिशु कक्षा से लेकर मैट्रिक तक का मेरा अध्ययन कल एक दुख भरी दास्तान है। अनेक कठिनाइयां झेलने की करुण कहानी है। शैशव, बाल्य, कौमार्य, पौगंड आदि जीवन की प्राथमिक अवस्थाएं किसी के लिए सुखद, रमणीय या प्यारी रहीं हों, यह

दस साल मेरे लिए तो जलकर राख होने की दशाएं थी। यह मेरे घर की हालत कुछ ऐसी खस्ता न थी कि म्युनिसिपैलिटी के खंबे-तले बैठकर पढ़ाई करनी पड़ी हो। सोचता हूं कि यदि वैसी कंगाली हालत होती, तो मैं भी अवश्य ही आज एक महान चरित्र-नायक होता। आज जैसा एक साधारण-सपाट मनुष्य ना हुआ होता!'

वह अपनी पाठशाला के जीवन की कहानी बयां करते हैं। इस हास्य व्यंग्यात्मक लेख में उन्होंने अपने बचपन के दस साल और घर के हालात कपड़े के प्रति होनेवाला मोह, कॉलरवाली कमीज, भीखबाली का इतिहास और पूरा देशपांडे दामोदर मास्टर और बिल्ली पाठशाला की विभिन्न विषयों की कक्षाएं दामले मास्टर और पढ़ाई का ढंग तथा बच्चों की हालत, मेरे बचपन के दोस्त, बचपन का मुरझाना, गोले मास्टर और बच्चे, अध्यापकों के अलग प्रकार के नाम, कोट पु. ल. देशपांडे तथा पाठशाला के मास्टर, परीक्षा और शिक्षक, मास्टरों के प्रति होनेवाली शिकायते, शिक्षा व्यवस्था, बाल मनोविज्ञान, सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगति, शिक्षा पर व्यंग्य, शिक्षकों का आचरण एवं स्वार्थ अध्यापकों की रुचि, पु. ल. देशपांडे जी का विसंगत जीवन, उनकी रुचि आदि विभिन्न विषयों को वाणी दी है। इन विषयों की प्रस्तुति में पु. ल. देशपांडे जी ने व्यंगात्मक रूप से हास्य का निर्माण किया है।

हास्य-व्यंग्यात्मक लेख में दूसरा लेख है '**मक्खी**' में लेखक ने मूलतः मक्खी के माध्यम से अनेक सामाजिक और राजनीतिक तथा साहित्यिक विषयों को प्रस्तुत किया है। इसमें एक मक्खी के मरने की कथा तथा उससे जुड़े अनेक हास्य आत्मक घटनाओं को प्रस्तुति मिली है जिससे वर्तमान व्यवस्था पर करारा प्रहार किया है। पु. ल. देशपांडे जी बताते हैं कि एक मक्खी दवाई की शीशी (बोतल) में जाकर मरती है और फिर यह खबर बाहर फैलती है। इस घटना को आधार बनाकर लेखक ने एक किटक 'मक्खी' का सपना, उसका और मानव जाति का संबंध, घर में उसका सहवास आदि का वर्णन किया है। साथ ही मक्खी की मरी हुई घटना पर पत्रकारिता क्या रूप लेती है? उसे कैसे वर्तमान पत्र के प्रथम पृष्ठ पर जगह मिलती है। इतना ही नहीं तो संपादक महोदय उसपर अग्रलेख भी लिख डालते हैं। पु. ल. देशपांडे जी इस व्यंग्यात्मक निबंध में मक्खी को असाधारण महत्व देते हुए अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय घटनाओं से उनका संबंध जोड़ते हैं। इसमें लेखक ने अनेक घटनाओं के माध्यम से व्यंग्य को सशक्तता के साथ उभरा है। जो औषधि मनुष्य के लिए तारणहार बनती है, वही औषधि उस मक्खी को मृत्यु के द्वारा तक पहुंचती हैं। लेखक ने इस घटना के माध्यम से आज की पत्रकारिता, सरकार की दिरंगाई, भ्रष्टाचार आदि विषयों को प्रस्तुत किया है। सरकार और पत्रकारिता पर व्यंग्य करते हुए लेखन लिखते हैं कि, 'यहां मृत्यु लोक में भी तो उसकी मृत्यु के कारण कितनी खलबली मची थी। आज तक दवाई पीकर कितने आदमी मरे हैं, उनकी कोई गिनती है! किंतु किसी का भी फोटो अखबार में नहीं छपा।परंतु इस मक्षिका को समाचार पत्र के प्रथम पुस्तक पर स्थान मिला और संपादकों ने इस पर अग्रलेख भी लिख डालें। एक मक्खी के मर जाने पर इतनी बड़ी मात्रा में इतना दुख पहले कभी नहीं मनाया होगा। अभी अभागी मक्खी उसे शीशी में अपने अति स्मरणीय पंख फैलाकर तैर रही थी। आज तक वहां उसे कार्यालय के अनेक अधिकारियों के मुख पर बैठी होगी। यही नहीं सरकारी कामकाज का जायजा लेने के लिए आनेवाले मंत्री, सम्माननीय व्यक्ति, नेता, अतिथि आदि के

मुखमंडल की उसने शोभा बढ़ाई होगी कभी-कभी सरकारी कचहरियों में अपनी सखी सहेलियां का शिकार करनेवाले वरिष्ठ- कनिष्ठ अधिकारियों को चकमा देती हुई उनका अनमोल समय नष्ट किया होगा। परंतु अंत में एक औषधि की धार ही उसके लिए धारातीर्थ बनी। एक मक्खी मर गई तो कोई बात नहीं। मगर इस तरह होता रहा तो सरकार की हिम्मत बढ़ती जाएगी। जाने कितनी मक्खियों मारेगी-मरवाएगी सरकार!'

इस तरह पु. ल. देशपांडे जी ने पौराणिक विषय के माध्यम से राजघराने पर भी व्यंग्य किया है। पाश्चात्य संस्कृति, पाश्चात्य घटना तथा चीन के साथ भी मक्खी की तुलना, मक्खी का और स्त्री जाति का संबंध आदि अनेक विषयों को प्रस्तुत किया है।

'मैं और मेरा शत्रुदल' यह हास्य-व्यंग्यात्मक लेख में पु. ल. देशपांडे जी ने अपने शत्रुदल अर्थात् व्यक्तिगत तकलीफ पहुंचानेवाले और समय बर्बाद करनेवाले व्यक्तियों को अपना दुश्मन अर्थात शत्रु माना है। जिसका चित्रण उन्होंने कलात्मक तथा हास्य-व्यंग्यात्मक रूप में किया है। वह अनेक शत्रुदल अर्थात् व्यक्तियों की तकलीफ से इतनी तंग आ चुके हैं कि अब सहने की हद जैसे समाप्त ही हो गई है। वह अपने निबंध में लिखते हैं कि, 'अब तो हद हो गई! अरे, मैं पूछता हूं, मनुष्य की सहनशीलता की भी कोई सीमा होती है या नहीं? एक इतने से जीवन में मनुष्य क्या-क्या बर्दाश्त करें? यह लोग सबको छोड़ हमें ही क्यों पकड़ लेते हैं? सों से मैं मुंह छुपाए या बचता-छुपता निकल जाता हूं-जैसे कि मैं उनका कर्जदार हूं! आखिर मेरे जैसे लोग अपनी शिकायत किस चौपाल में जाकर करें?'

इस तरह पु. ल. देशपांडे जी अपनी व्यक्तिगत त्रासदी का चित्रण करते हैं। यह करते समय उन्होंने अपने जीवन की त्रासदी के विषय के माध्यम से लोगों की प्रवृत्तियों पर प्रहार किया है। लेखक पु. ल. देशपांडे जी अपने दोस्त सोन्या बगलाणकर को अपने शत्रुदल की कहानी सुनाते हैं। शिकारी लेखक का पहला शत्रु है जो अपने शिकार की कहानी सुनाकर लेखक को नाराज दुखी करता है। उसका समय बर्बाद करता है। पापासाहब घौडचौरे, अण्णासाहब सरगुड़े आदि शिकारी अपने वीरता की दास्तान पढ़कर लेखक को बोर करते हैं। लेखक का दूसरा शत्रु है घर बनानेवाले व्यक्ति और तीसरा दुश्मन यात्रा करके आनेवाले व्यक्ति। जो फोटो दिखाकर अथवा एल्बम दिखवाना और तीसरा दुश्मन है बाल कलाकारों के माता-पिता। इन शत्रुदल से लेखक ने अपनी खुद के समय की अपव्ययता, लोगों के चरित्र के दोष, स्वार्थपरता, पति-पत्नी के संबंध, घर मलिक का स्वभाव, स्त्री का स्वभाव, लोगों के बड़प्पन दिखाने की पद्धति, झूठे साहित्यकारों पर व्यंग्य, शिकारी की झूठी और उबासु कहानी आदि विषयों को वाणी दी है। झूठ साहित्यकारों की प्रवृत्तियों पर प्रहार करते हुए पु. ल. देशपांडे जी लिखते हैं कि, ''वस्तुस्थिति यह होती है कि चार फीट दूर ही नासिकानली से ओष्ठ-मुरली से खुरायमान ध्वनियां आ रही होती है- किंतु प्रेम-कथा लिखने में कोई बाधा नहीं होती। जब ऐसे ऐसे कथाकार निराधार लिख सकते हैं, तो अकेले बाबा साहब ने ही किसी का क्या बिगाड़ा है? कुल मिलाकर बात इतनी कि अंत में सारे एक ही थैली के.....!''

इस तरह के अनेक सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक आदि विषयों को रावसाहब, क्या कहा गुरुदेव ने? आदि व्यंग्यात्मक निबंध में वाणी देने का प्रयास किया है।

पु. ल. देशपांडे जी अपनी साहित्यिक रचना के लिए विभिन्न विषयों का चुनाव करते हैं। रोजमर्रा जीवन के छोटी सी छोटी अनुभूति को भी वह साहित्यिक रचना की महत्वपूर्ण विषय वस्तु के रूप में प्रस्तुत करने के लिए माहिर माने जाते हैं। वह सहज रूप से अपने हास्य व्यंग्यात्मक निबंध के लिए वस्तु का चुनाव करते हैं। जैसे- चश्मा, पोस्ट ऑफिस, रेलगाड़ी, ज्योतिषी आदि। **'मैं और पोस्ट ऑफिस'** इस हास्य-व्यंग्यात्मक निबंध में लेखक ने पोस्ट ऑफिस और स्वयं के जीवन के अनुभव को आधार बनाया है। जिससे वह अपनी खास हास्य-व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत करते हैं। उनकी सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति से कोई बच नहीं सकता। वह पोस्ट ऑफिस को एक अजूबा नमूना मानते हुए लिखते हैं कि, ''पोस्ट ऑफिस भी एक अजीब नमूना होता है। वहां पब्लिक के लिए रखी हुई कलम-दवात से लेकर सारी स्थिर-स्थावर, जड़-जंगम वस्तुओं पर एक रहस्यमय मुहर लगी होती है। उस मुहर की छाप को पढ़ पाना उतना कठिन है, जितना वहां के लिफाफे या रसीद पर लगी हुई छाप को। फिर भी उसका अस्तित्व होता है, यह तो मानना ही पड़ेगा-कुछ काला-काला-सा ठप्पा जो होता है। मुझे तो लगता है कि डाक विभाग में नौकरी पर रखते समय यहां भलि-भांति जांच लिया जाता है कि कहीं उम्मीदवार के चेहरे पर कोई विशेष भाव तो नहीं है! अथवा सभी भावनाओं का अभाव है या नहीं! यह भी देखा जाता है।'' पोस्ट ऑफिस का गहराई से चित्रण, पोस्ट कर्मचारियों की प्रवृत्ति, पोस्ट ऑफिस के पद, शॉर्ट फॉर्म, बटवाडा जैसे शब्द और उसका अर्थ, कर्मचारियों की काम करने की पद्धति, उनकी लिखावट, पत्र या तार का समय पर न पहुंचना, मुहर लगाना, पोस्टपेटी से जुड़े अर्थ, पत्र पहुंचनेवाले व्यक्ति का वर्णन, स्याही, पत्रपत्ता, डाक विभाग के फॉर्म और उसे पर की भाषा, पोस्ट ऑफिस और मनोरंजन, पोस्ट ऑफिस की खिड़की और उसे जुड़े काम की पद्धति, लेखक का टिकट खरीदना और विज्ञापन पढ़ना, उससे निर्मित व्यंग्य, तार या पत्र के परिवार से जुड़े मामले, पोस्ट ऑफिस का बंद होने का समय, पोस्ट ऑफिस की नई कार्य पद्धति की कल्पना, डाक की परिवर्तनता, पत्र लिखने की पद्धति इस तरह के अनेक विषयों को अपने इस निबंध की विषय वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया है। इन सारे विषयों के माध्यम से लेखक ने पोस्ट और उससे जुड़ी कार्य पद्धति का कठोर विरोध किया है। उसपर व्यंग्य करते हुए उन्होंने आम आदमी की समस्याओं को वाणी दी है।

पु. ल. देशपांडे जी का और रेल्वे स्टेशन का बड़ा गहरा संबंध प्रतीत होता है। जैसे उन्हें देहात, छोटे कस्बे अच्छे लगते हैं। उसी प्रकार उन्हें छोटे देहातों के छोटे रेल्वे स्टेशन के प्रति भी अधिक लगाव दिखाई देता है। इसी लगाव के परिणाम स्वरुप वह रेलवे स्टेशनों पर अपनी रचना का निर्माण करते हैं। उन्होंने अपने हास्य-व्यंग्यात्मक निबंधों में इसी रेल्वे स्टेशन पर **'रेलगाड़ियां कुछ अप-कुछ डाउन'** नामक रचना का निर्माण किया है। इस निबंध में लेखक ने रेल्वे स्टेशन से जुड़ी हर एक बात को अपनी विषयवस्तु के रूप में लिया है। रेल्वे स्टेशन से संबंधित अपनी राय प्रकट करते हुए पु.ल. देशपांडे जी लिखते हैं कि, ''ऐसे ढंग के छोटे से फलाट (प्लेटफार्म) के प्रति मेरा विशेष खिंचाव है । केवल एक- दो आनेवाली और एक-दो जानेवाली पैसेंजर रेलगाड़ियां वहां आती-जाती हो। जैसे भूख लगने पर पालने में सोया हुआ 'ललुआ' चुलबुलाने लगता है, यों रेल के आने या जाने का समय होते ही जरा-सी हरकत में आ जाय! बस,

इतना-सा छोटा हो वह स्टेशन। सुबह की पैसेंजर गाड़ी से कौन गया, कौन आया, यह सारे गांव को पता लगे, इतना छोटा हो!''

इस तरह रेल्वे स्टेशन और उससे जुड़ी भावनाएं, रेल्वे स्टेशन का प्लेटफार्म, रेलगाड़ी और मनुष्य की जीविका, रेल क्लर्क का भ्रष्टाचार, रेल कर्मचारियों की काम में दिरंगाई, रेल कर्मचारियों के पद एवं हरकतें, रेल्वे स्टेशन का माहौल, फेरीवालों के तौर-तरीके, उनके शब्दों के उच्चारण, रेल्वे स्टेशन पर पानी की सुविधा, स्टेशन मास्टर के काम और ग्राहक की सुविधा, रेल्वे स्टेशन के बुक स्टॉल के लिए लिखनेवाले लेखकों पर व्यंग्य, प्लेटफार्म का वेटिंग रूम और वहां के यात्री, उन यात्रियों के तौर-तरीके, यात्रियों की आचरण की पद्धति, रेल के फर्स्ट क्लास, थर्ड क्लास यात्रियों की तुलना, रेल्वे स्टेशन के हमला और धांधली, रेल्वे बोर्ड और विज्ञापन, बिजली पर और कोयल पर चलने वाली रेलगाड़ियों की तुलना, महानगरी रेल्वे स्टेशन और लोकल ट्रेन तथा वहां के लोगों की जीविका आदि विभिन्न विषयवस्तु को हास्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया है।

पु. ल. देशपांडे जी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। उनके निबंधों में एक विलक्षण विनोदशीलता दिखाई देती हैं। उन्हें ज्योतिषी विद्या का खास अध्ययन था। वह कहते हैं कि मेरे ज्योतिषी के प्रति गहरी आस्था है। भले ही मैं ईश्वर के सामने हाथ न जोडू परंतु ज्योतिषी के सामने बार-बार हाथ फैलाने पड़ते हैं। लेखक पु.ल. देशपांडे जी ने ग्रहों की दशाओं के माध्यम से राजनीति, राजनेता और साहित्यिक समीक्षकों पर गहरा व्यंग्य कसा है। '**कुछ नये ग्रहयोग**' निबंध में उन्होंने ग्रहयोग के प्रकारों को बताते हुए स्वयं कुछ योग की कल्पना की है। जैसे- जल श्रृंखला योग, बूट्टी अधिकारी योग, अंतः क्रमांक योग, कनिष्ठभागिनी योग, आकाशवाणी योग, समस्त स्त्री वृंद-पर पुरुष- विवाहित वैषम्य योग, पादत्राणांगुष्ठ योग, द्वाराघंटीका योग, आदि नवयुगों का निर्माण कर हास्य व्यंग्यात्मक शैली में किया है। जिससे व्यक्तिगत, सामाजिक,राजनीतिक समस्याओं को विषयवस्तु के रूप में विवेचन किया है। ग्रहयोग एवं पाश्चात्य सिद्धांत, ज्योतिष विद्या की वर्तमान स्थिति,ज्योतिषी के प्रति अपनी व्यक्तिगत धारणा, ग्रहयोग और राजनीतिक व्यंग्य, ग्रहयोग और साहित्यिक व्यंग्य, जल श्रृंखला योग और व्यक्तिगत समस्या, कर्मचारी और उनके कार्यालय की धांधली, तथा बूट्टी अधिकारी योग, सरकारी पुलिस अफसर की दोहरी नीति, अतः क्रमांक योग और लोगों की रोजाना की समस्याएं, स्त्री पुरुष संबंध और पुरुषों का परिस्थिति के प्रति देखने का दृष्टिकोण, पादत्राणागुष्टक योग और आम जनता, द्वारघंटीका योग, मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति आदि विषयवस्तु का विवेचन हास्यात्मक शैली में हुआ है।

'रावसाहेब' पु. ल. देशपांडे जी का जीवन परक निबंध है। यह निबंध 'गणगोत' इस मूल मराठी किताब से लिया गया है। इस निबंध में निबंधकार पु. ल. देशपांडे जी अपने जीवन में आए और उन्हें प्रभावित किए व्यक्ति के बारे में अपने अनुभव का कथन हास्यात्मक रूप से किया है। पु. ल. देशपांडे जी इस निबंध में बताते है कि मनुष्य के जीवन में वह अनेक लोगों से रोज मिलता-जुलता है। कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनसे 15-15 साल तक उनके साथ रहने से या एक-दूसरे को पहचाने के बाद भी उनसे हमारे संबंध दृढ नहीं होते, परंतु काई ऐसे व्यक्ती भी होते हैं जिनसे कुछ पल में ही रिश्ता जुड़ जाता है और ऐसा

बनता है जैसे वह कई सालों से एक-दूसरे को अच्छी तरह से जानते हो। इस संदर्भ में पु. ल. देशपांडे लिखते है कि, ''कई लोगों से हमारा पंद्रह-बीस वर्षां का परिचय होता है, किंतु वह संबंध शिष्टाचार की सीमा से आगे कभी बढ़ नही पाता। बरसों से हम उनके घर आते-जाते है, भेंट-बातें होती है। परंतु भेट होने पर भी दो मनों की गाठें बनती ही नहीं। दूसरी ओर कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं कि, उनके साथ स्नेह का धागा तुरंत ऐसे जुड़ जाता है, जैसे जनम-जनम का नाता रहा हो। आचरण का संकोच पल-भर में समाप्त हो जाता है। ऐसे संबंध के बीच स्थान-भिन्नता आडे नहीं आती। पूर्व-संस्कार, भाषा, रुची, पसंत-नापसंत..... आदि किसी बहाने की आवश्यकता नहीं होती। बस एक ही पल में कोई अपना हो जाता है। गहरी मित्रता हो जाती है। गाँठे स्वयं बन जाती है।''

इस संबंध में लेखक अचानक उन्हें मिले बेलगाव के कृष्णराव हरिहर अर्थात् 'रावसाहब' जी के आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का चित्रण कलात्मक, हास्यात्मक शैली में बयान करते है। अत्यंत साधारण व्यक्तित्व होने पर भी अपनी विशेष काम की पद्धति और बोलने के ढंग से दुसरों को प्रभावित करनेवाले व्यक्ति पु. ल. देशपांडे जी को कोल्हापूर के शालिनी फिल्म स्टुडिओ में प्रथम बार मिलता है और जीवनभर अपना हो जाता है। रावसाहेब सिनेमा थेटर का व्यवसाय करते है। जब लेखक अध्यापक के रूप में कार्य करने के लिए बेलगाव गये थे तब पुनः उनकी मुलाकात होती है। रावसाहेब अत्यंत साधारण एवं सबको समान दृष्टि से देखनेवाले व्यक्ति थे। चाहे वह राजनीतिक नेता हो या सामान्य आदमी दोनों को समान रूप से ही देखते थे। इस निबंध में लेखक ने जातिवाद छुआ- छुत ऊँच-नीच, संगीत और गीत, कहानी तथा कथालेखन और रावसाहेब आदि का चित्रण अत्यंत मार्मिकता से किया है। पु. ल. देशपांडे जी अपने रावसाहब की मानवता को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि, ''मैंने और मेरी पत्नी ने अब तक जैसे-तैसे आसूँओं का प्रवाह रोक रखा था। किंतु अब बाँध तोड़कर आँसू बह निकले। कौन हैं ये लोग हमारे? मैं भी कौन हूँ? कॉलेज का लेक्चरर- कुछ थोड़ा-सा गाना बजा लेता हूँ.... नाटक सिनेमा में आनंद मानने वाला- यहाँ कौन है किसी का सखा, कौन है साथी... कोई यहाँ- कोई वहाँ गीत गाकर अभिनय करने वाला। प्लेटफॉर्म पर कोई नहीं था ऐसा ऐसा जिससे खून का रिश्ता हो....थे विद्यार्थी, स्नेही, साथी.... अड्डे के यार दोस्त...! कई आयु की दृष्टि से, आदर मान की और ऐश्वर्या की दृष्टि से भी बडे-बडे व्यक्ति थे....सभी की प्रशंसा और स्नेह के कारण हमारा दम घुट घोटा जा रहा था... रेल चल पड़ी...धीरे-धीरे और रावसाहब एक छोटे बालक के समान सिसकते हुए चिल्लाकर बोले -

''काहे आये थे जी तुम बेलगाव।''

ऐसे मानवतावादी और संवेदनशील रावसाहेब का चित्रण लेखक ने किया है। जिससे स्पष्ट होता है कि मनुष्य को कैसे और क्यू जीना है? अतः 'रावसाहेब' उच्च कोटी के मानवीय संबंध को उजागर करनेवाला हास्यात्मक लेख है।

'क्या कहा गुरुदेव ने?' यह पू. ल. देशपांडे जी का हास्य व्यंग्यात्मक निबंध है। 'असा मी असामी' इस मूल मराठी के हास्यव्यंग्यात्मक निबंध संग्रह से लिया गया है। इस निबंध के अंतर्गत लेखक बताना चाहते है

कि मनुष्य कैसे अपने से ज्यादा दूसरों पर विश्वास करता है। इस लेख में लेखक कायकिणी गोपालराव, अप्पा भिंगार्डे के साथ अध्यात्मिक गुरुजी से मिलने गये थे। तब वहाँ जाकर उनसे मिलते है, तब उस गुरुदेव का दिवाणखाना, वहाँ पर उन्हें मिलने आए विभिन्न तरह के लोगों की गतिविधियाँ, आप्पा भिंगार्डे की मजेदार शैली, गुरु के शिष्यों का वर्णन, दान-दक्षिणा देने की पद्धति, भक्तो की मूर्खता आदि का चित्रण व्यंग्यात्मक रूप से किया है। पु. ल. देशपांडे जी इस निबंध में लिखते है कि, कैसे में कायकिणी गोपालराव के साथ उनके गुरु को मिलने गया था? जहाँ जाने पर मुझे कैसी घुटन मेहसूस हुई? कैसे मुझे प्रार्थना के वक्त नींद लगी? और उस समय मुझे गुरुदेव ने क्या कहाँ? यह बताते है कि जब में गुरुदेव से मिलकर आया तो गोठस्कर दादा को उनका कोट देने के लिए मैं उनके पास चला गया तब उन्होंने मुझे सवाल किया की क्या कहा गुरुदेव ने? उस समय पु. ल. देशपांडे जी ने उत्तर देते हुए कहा कि, ''मतलब में अपने बाबा के शब्दों के द्वारा बदलता हूँ। मेरे पिताश्री कहा करते थे- बबुआ, ब्रह्मदेव ने इतनी विशाल सृष्टि का निर्माण किया, परंतु उसका प्रिय प्राणी है- गधा! इसलिए उसने मनुष्य प्राणी में भी गधे का अंश मिला दिया। दुनियाँ में कुम्हार कम और गधे ज्यादा है! तस्मात् यहाँ कुम्हारों की ही चलती है। इसलिए बबुआ, कुम्हार बन गधों की कोई कमी नहीं।'' इससे स्पष्ट होता है कि पु.ल. देशपांडे जी ने अपनी हास्यव्यंग्यात्मक शैली में झूठी धर्मांधता पर कठोर प्रहार किया है।

'मेरे चितले मास्टर जी' यह पु.ल. देशपांडे जी का अपनी शिक्षा के जीवन पर लिखा गया हास्यव्यंग्यात्मक निबंध है। जो मराठी की मूल पुस्तक 'व्यक्ती आणि वल्ली' से लिया गया है। इस निबंध में पु. ल. देशपांडे जी ने अपने प्रिय चितले मास्टर जी के जीवन को जागर किया है। वे लिखते है कि, यथार्थ रूप में स्कूल 'श्री गोपाल कृष्ण गोखले' के स्मारक के रूप में बनाया गया था। वह आज 'चितले मास्टर का स्कूल' नाम से जाना जाता है। लेखक बताते है कि, जब बच्चों को एक बार चितले मास्तर के हवाले कर दिया जाये तो वह उनके हाथों में सकुशल और सुरक्षित रहता है। लेखक इसके माध्यम से पुरानी शिक्षा पद्धति और आज की शिक्षा पद्धति तथा आज के अध्यापकों पर व्यंग किया है। साथ ही चितले मास्टर का रहन-सहन, पढ़ाई का विशिष्ट ढंग, बच्चों के प्रति होनेवाला आचरण, बच्चों के प्रगति के प्रति विशेष व्यवस्था, बच्चों के प्रति होनेवाली जिम्मेदारियाँ, बच्चों के परिवार से होनेवाले आत्मीय संबंध, चितले मास्टर की शिक्षा देने की पद्धति, चितले मास्टर के बच्चों के नाम लेने की विशिष्ट पद्धति, पु. ल. देशपांडे जी और चितले मास्टर के गहरे संबंध साथ ही वर्तमान समय के उसी स्कूल की स्थिति, वहाँ के अध्यापकों की प्रवृत्ति, चितले मास्टर का जीवन संघर्ष आदि विभिन्न बातों को व्यंग्यात्मक एवं हस्यात्मक रूप से, अत्यंत सहजता से वर्णित किया है। अतः कह सकते है कि पु.ल. देशपांडे जी के अपने गुरु चितले मास्टर के साथ अपनेपन के संबंध तथा जीवन के अंत तक चितले मास्तर का प्रभाव पु. ल. देशपांडे जी पर बराबर बनता रहा।

चश्मा और पु. ल. देशपांडे जी का अलग नाता है। वह घर में अलग प्रकार का चश्मा और बाहर अलग प्रकार का चश्मा पहनते थे। घर में सफेद और बाहर काला चश्मा। वह कहते हैं कि सन 1940 को ही मुझे चश्मा लग गया था। इस हास्य-व्यंग्यात्मक लेख में लेखक ने स्वयं चश्मा लगने की कहानी,

आलिंगन के द्वारा चश्मा टूटने की कहानी, काला चश्मा पहनने से आनेवाली मुसीबतें, चश्मा न पहनने से क्या हो सकता है, चश्मा दुकानवालों की ग्राहकों को ठगने की पद्धति, तीन चश्मे की कहानी आदि विषयों को विस्तार से वाणी दी है।

समग्र रूप से कह सकते हैं कि पु. ल. देशपांडे जी ने अपने हास्य व्यंग्यात्मक निबंधों में अपने जीवन के अनुभव के द्वारा अनेक व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक साहित्यिक, व्यावसायिक विषयों को प्रस्तुति दी है।

4.3.3 'हास्य व्यंग्यात्मक लेख' का भावगत एवं शिल्पगत अध्ययन :

- **'हास्य व्यंग्यात्मक लेख' का भावगत अध्ययन :**

काव्य या साहित्य को पढ़ने या सुनते समय पाठक को जो आनंद मिलता है, उसे रस कहा जाता है। रस के पीछे ही भाव होते हैं। साहित्यशास्त्र में सामान्यतः कुल मिलाकर 11 रस और 11 स्थाई भाव है। साहित्य में भाव तत्व ही सबसे प्रधान होते हैं। भाव के बिना किसी भी साहित्यिक कृति का सृजन संभव नहीं है। भाव ही ऐसा तत्व है जो साहित्य को प्रभावशाली और गतिशील बनता है। भाव ही ऐसा तत्व है जो पाठकों के दिलों दिमाग पर असर करता है। भाव ही पाठक या श्रोता या दशक के हृदय में रस रूप में परिणत होकर उन्हें आनंद प्रदान करता है। अतः साहित्य और भाव का अन्य साधारण संबंध है। किसी भी साहित्यिक रचना के केंद्र में भाव ही प्रमुख होते हैं। वही रचना का प्राण तत्व होते हैं। उसके बिना किसी भी रचना का निर्माण होना संभव नहीं है। किसी भी साहित्यिक कृति में मनुष्य के भावों को अभिव्यक्ति दी जाती हैं। अतः रचनाकार मानवीय भावना और कल्पना के माध्यम से साहित्यिक संसार का निर्माण करता है। कोई भी साहित्यकार भावों को छोड़कर नहीं लिख सकता। अतः मराठी के पु. ल. देशपांडे जी भी प्रतिभाशाली साहित्यकार हैं। अपनी हास्य-व्यंग्यात्मक शैली से उन्होंने मराठी साहित्य संसार को समृद्ध बनाने में अपनी अहम भूमिका निभाई है। 'पु.ल. देशपांडे जी के व्यंग्य हास्य-व्यंग्यात्मक लेख' इस अनूदित किताब में प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार जी ने पु. ल. देशपांडे जी के दस हास्यव्यंग्यात्मक लेख संकलित किए हैं। जिसमें उन्होंने अपने जीवन अनुभव के माध्यम से व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षिक, सरकारी परिवेश को उभारकर उसका यथार्थ चित्रण किया है। इस यथार्थ की अभिव्यक्ति का उन्होंने बहुत सूक्ष्मता से वर्णन किया है। उनके शिशुकक्षा से मैट्रिक तक, मक्खी, मैं और मेरा शत्रुलद, मैं और पोस्ट ऑफिस, कुछ नए ग्रहयोग, रावसाहब, चश्मा आदि हास्यव्यंग्यात्मक लिखों में हास्य, शोक, निर्वेद, घृणा आदि भावों की अभिव्यक्ति भारी मात्रा में हुई है। तो रति, क्रोध, उत्साह, आश्चर्य, वात्सल्य, भक्ति आदि भावों का निर्माण भी प्रसंगानुकूल हुआ है। हास्य-व्यंग्यात्मक निबंध में से पहले लेख 'शिशुकक्षा से मैट्रिक तक' इसमें पु. ल. देशपांडे जी ने अपने बचपन के दिनों के जीवनानुभव को अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित किया है। जिसमें लेखक की पीड़ा को अभिव्यक्ति मिली है। पु.ल. देशपांडे जी का कहना था कि बचपन में हमें अगर अच्छी खासी शिक्षा मिलती, तो आज मैं डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर जी की तरह बन जाता। परंतु हमें हमेशा हमारे बचपन को मुरझानेवाले दामले मास्टर, गोले मास्टर, मिरवनकर मास्टर,

भगने मास्टर आदि मास्टर मिले। जिन्हें अपना अपना विषय पढ़ाने में बिल्कुल रुचि नहीं थी। इसलिए पु.ल. देशपांडे जी का बाल सुलभ मन शौक से डूब जाता है। वह दुःखी होते हैं। अपनी यह शोक की स्थिति प्रकट करते हुए लिखते हैं कि, ''बचपन में मेरे पास एक 'भीकबाली' भी थी, जारीदार टोपी थी तथा पुश्त दर पुश्त चला आता मखमल का एक सूट भी था । यों अभाव किसी बात का नहीं था, परंतु 'मेरा बचपन सुख से बीता' कहने में आज भी जीभ लड़खड़ाने लगती है।''

इस तरह से फूलने अपने-अपने बचपन की दुखद कहानी बयां करते हैं उपायुक्त पंक्तियों में फूल के दुख के भाव उभर कर सामने आते हैं इस तरह से रौद्र वीर निर्वेद भाई आदि भावों की अभिव्यक्ति भी समग्रता से हुई है प्रस्तुत लेख में लेखक ने हास्य-व्यंग्यात्मक शैली में हास्य का निर्माण किया है पूरा लिखते हैं कि, ''मुझे भी याद है! बच्चों को स्कूल भेजते समय नाश्ते या खाने का टिफिन भरनेवाली, बच्चों को अच्छे-अच्छे कपड़े पहना कर स्कूल भेजनेवाली माताएं तो आज की बात हैं-ऐसी माताएं हमारे समय में कहां! हमारे समय तो दशा यह थी कि स्कूल जा रहे आस-पास के बच्चों के झुंड में अपना लल्ला भी घुसा दिया कि वह अपने-आप स्कूल पहुंच जाता था। बस, इसके बाद बच्चा सकूल जा रहा है, उस सचाई का पता जन्मदाता जी को तभी लगता था, जब अगले माह की फीस देनी पड़ती थी। ऐसा भी होता था कि तीन-चार सालों से कभी एकाध बार बाप बच्चे से पूछता था, 'क्यों रे गधे! कितनी क्लास में है रे?' 'तीसरी में हूं।' गधा जानकारी देता था।''

उपर्युक्त कथन में पु. ल. देशपांडे जी ने आज के बच्चों को स्कूल भेजते समय माता-पिता कीस तरह से उन्हें भेजते हैं और हमारे वक्त कैसे हालात थे, यह बताते हुए हास्य का निर्माण करते हैं। जिसमें महास्यफ भाव प्रभावशाली रूप से उभर कर आया है।

'मक्खी' इस हास्य व्यंगात्मक लेख में भी हास्य यह भाव पाठकों को काफी प्रभावित करता है। विदेश में मक्खी को पकड़ने का एक मजेदार तरीका या तरीके का वर्णन लेखक ने करते हैं। जिसे हास्य का निर्माण होता है। पु. ल. देशपांडे जी लिखते हैं, ''आखिरकार डार्लिंग, मेरे दिमाग में एक ट्रिक सूझी। मैंने लिपस्टिक में च्युइंगम मिलाकर-! है ना मेरे प्यारे राजा! (अंगरेजी वाक्य का यह हिंदी अनुवाद है- यह सुजान पाठक समझ ही गए होंगे) क्या किया कि अपने ओठों पर लगा लिया और तेरे आते ही तेरा गाल चूम लिया। मुझे पूरा भरोसा था कि मक्खी तेरे गाल पर जरूर बैठेगी। ताश तीस पर लिपस्टिक की छाप में च्युइंगम की मिठास भी मिली हुई थी ना! इसलिए, मेरे प्यारे सनम, वह मक्खी मेरे अनुमान के अनुसार ठीक वहीं बैठी.... और अब कहीं जाकर मेरे कब्जे में आ सकी! वह देख, 'सूप' में मरी पड़ी है!''

प्रस्तुत लेख में पु. ल. देशपांडे जी ने अद्भुत रस का परिपाक भारी मात्रा में किया हुआ नजर आता है। मक्खी और मक्खी की कहानी को बताते हुए पु. ल. देशपांडे जी ने अद्भुत रस की परिकल्पना की है और मक्खी को अन्य साधारण महत्व दिया है। जिससे वे सामाजिक एवं साहित्यिक व्यंग्य करते हैं। पु. ल. देशपांडे जी आश्चर्य के भाव को अभिव्यक्त करते हुए लिखते हैं कि, ''अजी हम भारतीय और मक्षिकागण आज सैकड़ो युगों से साथ-साथ मिल-बैठकर बड़े प्रेम से रहते हैं! सुना है कि कम्युनिस्ट चीन में चीनी

लोगों ने जाने कितनी अरब, कितनी लाख और कितनी हजार मक्खियों मारी हैं। उनकी तो गिनती भी की गई है, तो इकाई, दहाई गिनते हुए और एक-एक मक्खी मारते हुए की गई है। मगर इन कम्युनिस्ट देशों ने इंसानों को मारने की बजाय यह मक्खियां मारना कब से शुरू कर दिया? हमारा भारत इन दोनों उत्पादन वृद्धि की राह पर चल रहा है। हमें अपनी भारतीय मक्खी पर गर्व है! किबहुना, यह कहना ठीक होगा....! बीच में एक वाद चर्चा चल रही थी कि हमारा राष्ट्रीय पक्षी कौन सा है? मैं मक्खी का अनुमोदन करता हूं, क्योंकि मक्खी मेरे साथ रहती हैं। कुछ लोग कहा करते हैं- मक्खी पक्षी नहीं है। कमाल करते हैं वे लोग- अजी, अगर दो पंखों से उड़नेवाला प्राणी पक्षी नहीं है, तब तो बात ही खत्म हो गई।''

उपर्युक्त अवतरण में लेखक ने भारतीय लोगों के आचरण और चीनी लोगों की मानवताहीन प्रवृत्तियों पर प्रहार किया है। जिससे अद्भुत रस का निर्माण हुआ है।

पु. ल. देशपांडे जी को अपने जीवन में अनेक व्यक्तिगत संघर्षों का सामना करना पड़ा। वे अपने जीवन में समय को अत्यधिक महत्व देते थे। पढ़ने में उन्हें खूब रुचि थी। परंतु समय की बर्बादी वह नहीं चाहते थे। 'मैं और मेरा शत्रुदल' इस हास्य-व्यंग्यात्मक लेख में पु. ल. देशपांडे जी ने समय को बर्बाद करनेवाले अपने दुश्मनों की बात की है। जिसमें जो शिकारी अपने शिकार की कहानी लिखते हैं। घर बनानेवाले घर मालिक, यात्रा करनेवाले और बच्चों को अभिनय सीखनेवाले माता-पिता आदि को अपना दुश्मन और समय की बर्बादी का कारण बताते हैं। जिसमें लेखक ने अपने मित्र सोन्या के साथ संवाद करते हुए यह निबंध लिखा हुआ है। जिसमें हास्य, करुणा, शांत, क्रोध आदि रसों की अभिव्यक्ति प्रचुरता से हुई है। इसमें लेखक को अपने दुश्मनों से सीधे लड़ना या झगड़ा करना संभव नहीं है । इसलिए उन्हें सहने के सिवा उनके पास कोई पर्याय बिल्कुल भी नहीं है। उसे पु. ल. देशपांडे जी को काफी दुःख मिलता है, समय नष्ट हो जाता है, तरसना पड़ता है, फिर भी वह उन लोगों को सहते दिखाई देते हैं। ऐसे समय पर लेखक ने शांत रस के माध्यम से हास्य रस का भी निर्माण किया है। प्रस्तुत निबंध में पु. ल. देशपांडे जी लिखते हैं कि, ''कुलकर्णी ने मुझे खोदी हुई नाली के ऊपर रखे हुए तख्ते पर से घसीटना शुरू किया। मैं ना जाता, तो क्या करता! परंतु मेरी अवस्था वही थी कि जो कसाई द्वारा ले जा रहे बकरे की तरह होती हैं। कसाई उसे कहता हो- 'चल, तेरे गले पर छुरी चलाऊंगा' और बकरा चला जा रहा हो उसके पीछे-पीछे। यहां एक बात मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूं- कोई घर बनवा रहा हो, घर ही क्यों- ताजमहल क्यों न बनवा रहा हो, जब तक वह मुझे-अंदर बाहर, सारा-का-सारा दिखता नहीं है, तब तक मुझे उससे ईर्ष्या, द्वेष या चिढ़, कुछ भी नहीं होता। खैर! इस समय मैं उस लचकती तख्ती पर से चलने की कलाबाजियां करता हुआ कुलकर्णी के पीछे चुपचाप चला जा रहा था। सर्कस के कलाकार की तरह ईंट-पत्थरों के ढेर लांघता हुआ, लोहे के सरियों से बचात हुआ मैं कुलकर्णी के पीछे-पीछे चला जा रहा था। मैं खींचना जा रहा था, कुलकर्णी बोलता जा रहा था। मुझे एक भी अक्षर बोलने की फुर्सत नहीं दे रहा था- विवश होकर मैं केवल 'अच्छा!!' 'हां, हां !!' 'वाह!!' कह पा रहा था।''

अति: उपयुक्त अवतरण से लेखक की मजबूरी दिखाई देती हैं। जिसमें भावना प्रमुख बन बैठी हैं। लेखक का शांति से चुपचाप सहना और मन ही मन विरोध दिखाना। यह भाव उभर कर सामने आया है। जिसमें निर्वेद और हास्य भाव की अधिकता दिखाई देती हैं।

'मैं और पोस्ट ऑफिस' इस हास्य-व्यंग्यात्मक लेख में पुलिस ने पोस्ट ऑफिस को एक अजब नमूना कहते हुए पोस्ट ऑफिस की व्यवस्था उसे जुड़े कर्मचारी, अधिकारी, चुनाव समिति, पोस्ट ऑफिस का रखरखाव, पोस्टमैन उसकी तार करने का तरीका, लिखावट, फॉर्म भरने की पद्धति आदि को चित्रित किया है। अत्यंत सूक्ष्मता से इन चित्रों का अंकन करते हुए उन्होंने करूण, शांत, हास्य, रौद्र, भयानक, वीर आदि रसों का निर्माण किया है। जिसमें भाव में संप्रेषणीयता का समावेश हो चुका है। इस लेख में लेखक पु.ल. देशपांडे जी पोस्ट ऑफिस के काम के कारण पोस्ट ऑफिस जाते हैं। तब एक टिकट के लिए उन्हें घंटा लाईन में लगना पड़ता है, परंतु खिड़की पर आनेपर पता चलता है कि इस खिड़की में टिकट नहीं मिलते। वहां पास वाली खिड़की में मिलते हैं। वहां जाने पर टिकट देने का समय समाप्त होता है। परिणाम स्वरुप लेखक का काम बिगड़ जाता है। इन कर्मचारियों की काम की अयोग्य पद्धति से लेखक गुस्सा आ जाता हैं और पोस्ट कर्मचारियों पर टूट पड़ते हैं। वह कहते हैं कि,

''डाकखाने में टिकट को 'पूछताछ' कहने लगे हैं आजकल?''... मैं।

''हंसी-मजाक घर जाकर करो।''

मैं 'पूछताछ' की खिड़की तक गया। वैसे सबका पता जाननेवाले डाकखाने की एक बात बड़ी भली है- एक खिड़की को दूसरे खिड़की तक का पता मालूम नहीं होता।

''क्या है? पूछताछ- खिड़की में पूछताछ की गई।''

''पंद्रह पैसों की 'पूछताछ दो।' मैं शांतिपूर्वक कहा।''

''क्या..? खिड़की के पीछे से ठीक वैसी ही चीख सुनाई दी, जैसे भूतकाल में नायिकाएं चीख उठती थीं। इस बार यह चीख किसी पुरुष के मुख से निकली थी, जो कुछ-कुछ गर्जना में मिली हुई थी।''

''पंद्रह पैसों की पूछ-ताछ।'' मैं।

''पूछताछ?''

''हां, पू ...छ-ता- छ...।''

''क्यों मिस्टर, क्या सुबह-सुबह ही नशा करके आए हो?''

''जरा खिड़की से बाहर सिर निकालो- अभी बतलाता हूं। नशा चढ़ जाएगा!''

उपर्युक्त संवादों से पता चलता है कि पु. ल. देशपांडे जी इस व्यवस्था व्यवस्था से तंग आकर क्रोधित हुए हैं। जिससे क्रोध का भाव दिखाई देता है, साथ ही इस क्रोध के साथ यहां पर हास्य भाव का भी निर्माण हुआ है। जिससे सरकारी कर्मचारियों की लापरवाही, कामचोरी आदि बातें सामने आती हैं।

'रेलगाड़िया कुछ अब कुछ डाउन' इस हास्य व्यंग्यात्मक लेख में देहातों की तथा ग्रामीण लोगों का अपनापन और नगरीय लोगों की जीवन पद्धतियां, साथ ही रेलवे स्टेशन एवं उसे जुड़ी व्यवस्था का चित्रण भावात्मक रूप से हुआ है। पु. ल.: देशपांडे जी के इस लेख में हास्य, क्रोध, शोक, उत्साह, निर्वेद, वात्सल्य, प्रेम का भाव सहज रूप से उभर कर सामने आया है। अपनेपन पर और आत्मीयता के भाव का उदाहरण इस प्रकार से हैं,- ''ऐसा अपनापन लिए हुए 'फलाट' के सिवाय स्टेशन पर बिटिया को विदा करने आए पाटील (पटेल) से स्टेशन मास्टर कहता हो, 'राम-राम पाटिल...? दीदी बिटिया ससुराल चली है का?' और नीली पोशाक पहन, माथे पर काले सिंदूर का मोटा- सा टीका लगाए और गले में तुलसी माला धारी पोर्टर गांव की किसी मां से कहें 'काहे री अनसूये, अरी, ललुवा को कनटोप तो पहना ठीक से! देख, कैसी ठंडी हवा छुट्टी है.... बिटवा को सरदी- फरदी हो गई तो...? फिर यह हो कि भरे- भड़क्के वाले फलाट पर पाटील की बिटिया झुककर स्टेशन मास्टर साहब के पैरों पर माथा टेके और जमशेदपुर या और किसी दूर के गांव में रह रही अपनी बिटिया की याद से मास्टर साहब की आंखें भर आए- और अपने उसे पुलक या रोमांच को छुपाने के लिए मुख से 'अष्टपुत्रा सौभाग्यवती भव' कहनेवाले गडद्गगदित मास्टर साहब अपनी भीगी आंखों छुपाने के लिए 'चलो, सएवन्टईन अप लेट है आज' कहकर आगे बढ़ जाए- खिड़की पर आए किसी को टिकट देने के बहाने से!.... ऐसा, इतना अपनेपन से लबालब हो मेरा फलाट!'' उपर्युक्त अवतरण से पता चलता है कि देहाती जीवन प्रणाली में अपनात्व का जो भाव है वह नगरीय जीवन प्रणाली में नहीं है। यहां करुणा, प्रेम, आत्मीयता, अपनापन, दुःख है। इसी तरह विभिन्न भावों को सजाकर लेखक ने भावों की अभिव्यक्ति सहज रूप से की है।

अतः 'कुछ नए ग्रहयोग' 'चश्मा' 'राव साहब' आदि व्यंग्यात्मक लिखो में भावों का चित्रण बड़ी सहजता से सरलता से हुआ है। जो पाठकों के ह्रदय पर अपनी अमिट छाप छोड़ते हैं। इन लिखों कि यहां भावाभिव्यक्ति अत्यंत मार्मिकता से अंकित की है।

समग्र रूप से कह सकते हैं कि पु. ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेख में भावों की अभिव्यक्ति सहज, सरल, संप्रेषण या प्रभावपूर्ण रूप से हुई है, जो पाठकों के दिलों दिमाग पर असर छोड़ती है।

4.3.3.2 'पु. ल. देशपांडे जी के हास्य व्यंग्यात्मक लेख' का शिल्पगत अध्ययन :

आधुनिक मराठी साहित्यकार पु.ल. देशपांडे जी अपनी विशिष्ट शैली के कारण प्रसिद्ध है। पु. ल. देशपांडे जी ने अपनी विशिष्ट लेखन शैली में साहित्य का निर्माण किया है। वह अपनी हास्य-व्यंग्यात्मक शैली के कारण काफी चर्चित हैं। किसी भी साहित्यिक कृति का निर्माण करते समय लेखक विशेष रूप से भाव पक्ष और कला पक्ष दोनों पर विशेष ध्यान देता है। भावपक्ष साहित्य के प्राण अर्थात आत्मा है, तो

कलापक्ष उसका शरीर। भावपक्ष साहित्य में विचार और भावों की पुष्टि करता है, तो कलापक्ष इस विचार और भावों को विशिष्ट शैली में अभिव्यक्ति देता है। अतः साहित्य में भावपक्ष और कला पक्ष दोनों को समान रूप से महत्व दिया जाता है। प्रत्येक रचनाकार अपनी रचनाओं में विशिष्ट शिल्प विधान का प्रयोग करता है। शिल्प का शाब्दिक अर्थ है- निर्माण अथवा गढ़ने के तत्व। किसी भी साहित्यिक कृति में शिल्प का विशेष महत्व होता है। शिल्प विधान में मूलत उस रचना की भाषा शैली पर प्रकाश डाला जाता है। अतः 'पु.ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेख' इस पुस्तक की भाषा और शैली का अध्ययन निम्न प्रकार से किया जा सकता है-

4.3.3.2.1 हास्य-व्यंगात्मक लेख और भाषा :

भाषा मनुष्य के विचार और भावनाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। यह एक ऐसा साधन है जो रचनाकार के विचारों या भावों को साहित्यिक रूप में अभिव्यक्ति देता है। किसी भी रचना में भाषा की अपनी अहम भूमिका होती हैं। भाषा के बिना किसी साहित्यिक रचना का निर्माण संभव नहीं है। भाषा और निबंध का काफी गहरा संबंध है। जितनी भाषा संप्रेषणीय रहेगी, उतने ही प्रभाव से भावनाओं तथा विचारों का संप्रेषण संभव है। भाषा कथानक, पात्र को गतिशील बनाने में सहायक बनती है। इसलिए प्रभावशाली रचना का निर्माण करने के लिए भाषा का प्रभावी होना जरूरी होता है। पु. ल. देशपांडे जी की हास्य-व्यंग्यात्मक लिखों की भाषा सहज, सरल, एवं संप्रेषणीय है, जो पाठकों को काफी प्रभावित करती है। पु.ल. देशपांडे 'शिशु कक्षा से मैट्रिक तक' इस हास्य-व्यंग्यात्मक लेख में लिखते हैं, ''हमारी हालत यह थी कि कभी इस घर, उस घर या बुधवार, गुरुवार करते हुए जीमना नहीं पड़ता पड़ा या कभी मधुकरी भिक्षा भी नहीं मांगनी पड़ी। मां पेट- भर खिला देती थी और बाप की आर्थिक दशा भी ठीक-ठाक ही थी, तो फिर भीख मांगने का सवाल ही नहीं था और बाप परवानगी देता भी क्यों! साल भर पहनने के दो-चार ढीले-ढाले पाजामे और कुरते मिल ही जाते थे।''

इस तरह पु. ल. देशपांडे जी ने अपने अन्य लेखों में भी भाषा के इस रूप को उभारा है। साहित्यकार अपनी साहित्यिक कृति को प्रभावशाली, आकर्षक बनाने के लिए प्रसंगानुकूल, पात्रानुकूल, नाटकीय, अलंकारमयी, संगीतात्मक आदि प्रकार के भाषा का प्रयोग करता है। अतः पु. ल. देशपांडे जी इसके लिए अपवाद नहीं है। उन्होंने भी अपनी रचना को प्रभावशाली एवं आकर्षक बनाने के लिए पात्रानुकूल भाषा, प्रसंगानुकूल भाषा, ग्रामीण भाषा, नगरीय भाषा, नाटकीय भाषा, अलंकारमयी भाषा, संगीतात्मक भाषा, गीतात्मक भाषा आदि का प्रयोग अत्यंत मार्मिकता से किया है। 'मैं और मेरा शत्रुदल' इस हास्य-व्यंग्यात्मक लेख में लेखक ने भावानुकूल और प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग इस प्रकार से किया हुआ है। जैसे- ''अब तू ही बता, सोन्या! जैसा कि तू कहता है, अगर यह शिकारी चुपचाप शिकार कर आते और चुप बैठते, तो मैं खुश होकर इन्हें अपने खर्चे से खाकी रंग की 'हाफ-पैंट' दिलवा देता। लेकिन, ये मेरे दो मेरे प्यारे दोस्त! ये लोग वहीं तक नहीं रुकते -ये शिकार की कथाएं लिखते हैं-खैर, जाने दे! लिखते हैं, तो लिखा करें, हम पुस्तक के पन्ने तो पलटकर उन्हें टाल सकते हैं,परंतु जब यह लोग किसी उटपटांग स्थान पर गिरफ्तार करके हमें अपनी कहानी सुनाने लगते हैं, तो बता, कोई क्या करें?''

अतः उपयुक्त अवतरण में पु. ल. देशपांडे जी अपने शिकारी के प्रति होनेवाले क्रोध के भाव को व्यक्त करते हैं। जहां भावानुकूल एवं प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग हुआ है। पु.ल. देशपांडे जी ने अपने निबंधों में हास्य एवं व्यंग्य का निर्माण करने के लिए व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है। प्रस्तुत किताब के लगभग सभी लिखो में व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग दिखाई देता है। परिवार, समाज, राजनीतिक, संस्कृति, धर्म, शिक्षा आदि क्षेत्रों में दिखाई देनेवाली विसंगतियों पर प्रहार करते समय पु. ल. देशपांडे जी ने हास्य-व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है। 'मैं और पोस्ट ऑफिस' इस हास्य-व्यंग्यात्मक लेख में लेखक ने पोस्ट ऑफिस के कर्मचारियों की काम की पद्धति पर व्यंग्य करते हुए व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है।

जैसे- ''सच तो यहां है की टिकट चिपकाए बिना डाक विभाग का एक कदम भी आगे नहीं बढ़ता। तार हो या और कुछ टिकट जरूरी है। यदि ऐसा है, तो उसे खिड़कीवाले बाबू के पास अगर दस-बीस टिकट रख दिए जाए, तो क्या हो जाएगा? कहीं ऐसा तो नहीं है कि डाक विभाग को डर लगता हो कि अगर हर एक के पास टिकट रख दिए जाएं, तो कहीं वे बाबू लोग खाली समय में एक-दूसरे की पीठ पर टिकट चिपकाने का खेल खेलने लगेंगे या फिर लगता है कि डाक विभाग का विचार है कि चार खिड़कियां भटके बिना पब्लिक सुधरेगी नहीं।''

समग्र रूप से कह सकते हैं कि पु. ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेख की भाषा सहज,सरल, प्रभावशाली है। जिसमें व्यंग्यात्मक भाषा, हास्यात्मक भाषा, भावानुकल भाषा, प्रसंगानुकूल भाषा गीतात्मक भाषा, अलंकारमयी भाषा आदि का प्रयोग सहजता से हुआ है। जिससे भाषा में संप्रेषणीयता का पुट विद्यमान है। साथी ही विभिन्न भाषा की शब्दावली का भी प्रयोग दिखाई देता है। कहीं-कहीं भाषा का दुरुह रूप भी दिखाई देता है। जिसके कारण भाषा की प्रवाहमयता में बाधा पहुंचती हैं। उसके साथ ही भाषा में कहावतें, मुहावरों, सूक्तियों का प्रयोग कर पु. ल.देशपांडे जी ने भाषा को गरिमा प्रदान की है।

4.3.3.2.2 हास्य व्यंग्यात्मक लेख और शैली :

शैली अर्थात् भाषा के अभिव्यक्ति का ढंग या पद्धति। साहित्यकार अपने विचार और भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए जीस पद्धति का अवलंब करता है। उसे शैली कहा जाता है। 'शैली' भाषा के प्रस्तुतीकरण का एक ढंग है। किसी भी साहित्यिक रचना में भाषा के साथ-साथ शैली का भी अपना अलग महत्व होता है। शैली भाषा में प्रौढ़ता का निर्माण करती है। हर रचनाकार की अपनी एक विशिष्ट शैली होती है। रचना में प्रवाहमहता, विशिष्टता प्रभावशीलता, आकषर्कता निर्माण करने के लिए शैली अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पु. ल. देशपांडे जी ने भी अपने हास्य-व्यंग्यात्मक लेखों में विशिष्ट शैलियों का प्रयोग किया है। रचनाकार अपनी साहित्यिक कृति में विभिन्न शैलियों का प्रयोग करता है। पु.ल. देशपांडे जी ने अपने हास्यव्यंग्यात्मक लेख में विवरणात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, भावात्मक शैली, हास्यात्मक शैली, हास्यात्मक शैली, व्यंग्यात्मक शैली, संवादशैली, नाटकीय शैली, पत्र शैली, संस्मरणात्मक शैली आदि। विभिन्न शैलियों का प्रयोग प्रचुरता से किया है। उन्होंने पात्रों के अनुसार प्रसंग के अनुकूल, कथानक के अनुसार विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया हुआ नजर आता है। 'रेलगाड़िया कुछ अब कुछ डाउन' इस

हास्य-व्यंग्यात्मक लेख में लेखक ने अपने तरीके से रेल्वे स्टेशन कैसा हो? इस बात का चित्रण करते हुए विवरणात्मक तथा विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया है। इसका उदाहरण इस प्रकार से दृष्टव्य है- ''एक आदर्श डौलदार और सुंदर देहात के विषय में मेरी अपनी कुछ अपेक्षाएं हैं। अपेक्षा है कि उसे गांव के सिरहाने एक छोटी- सी पहाड़ी हो। एक नदी हो, जो जाते-जाते बड़ा प्यार-दुलार जताती हुई गांव को गलबहियां डाल आगे चली गई हो। एक सुडौल, सुघड़, सुहाने कलशवाला मंदिर हो। गांव के पीछे, जैसे की पहरा देने के लिए खड़ा हो, एक ऐसा ऊंचा, आकाश को छूने वाला नीम का वृक्ष हो। गांव से निकलकर लचकती- बल खाती जा रही एक पगडंडी हो, जो चलकर बिलकुल नन्हे-से स्टेशन से जा मिलती हो। स्टेशन भी इतना नन्हा हो कि उसके पलेटफारम या 'फलाट' को कोई 'प्लेटफार्म' कहे, तो बेचारा लजा जाए? किसी देहाती खेतिहर की छोटी बहू को उसके मैके का कोई आदमी यों बुलावे 'क्यों, चौधरी जी,..' सुनकर 'ठेसन' का फलाट भी शरमा जाए, इतना नन्हा हो वह स्टेशन।''

इस तरह पु. ल. देशपांडे जी ने सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, पारिवारिक विसंगतियों का चित्रण करते समय हास्य-व्यंग्यात्मक शैलियों का प्रयोग प्रचुरता से किया हुआ है। खोखले साहित्य लेखन पर टिप्पणी करते हुए पु.ल. देशपांडे लिखते हैं कि, ''शनि, रवि, राहु, केतु, मंगल आदि बलवान ग्रहगण संसार के महान विभूतिमय व्यक्तियों के समान मेरी कुंडली में बस्ती बनकर बैठे हुए हैं-मुझे बहुत गर्व है इस वास्तविकता पर! कभी-कभी ऐसा भी होता है कि इन ग्रहों में से कोई ग्रह अपना घर छोड़कर दूसरे के घर में घुस जाता है! ऐसे समय में अपना घर 'लीव एंड लाइसेंस' के अनुसार दे देते हैं और फिर अपने घर वापस लौट आते हैं। कभी-कभी यह ग्रह साहित्य के आलोचकों के समान वक्री भी हो जाते हैं।''

प्रस्तुत अवतरण में लेखक ने गृह के योग और साहित्य के आलोचकों की पूर्ति पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है। अतः अन्य लिखों में भी लेखक ने इस व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग प्रचुरता से किया हुआ है।

लेखक पु. ल. देशपांडे जी ने कहीं-कहीं संवादात्मक शैलियों का प्रयोग किया है। जिससे कथनक को गति मिली है। पु. ल. देशपांडे जी का हास्यव्यंग्यात्मक लेख 'रावसाहब' का एक उदाहरण दृष्टव्य है-

''हां, तो वही... उसको बच्चा हो गया?''

''हां''

''क्या हुआ? लड़का या लड़की?''

''लड़का।''

''चलो, ठीक हुआ। मगर याद रखना.... औरतों के ऑडियैंस (दर्शक वर्ग) को रुलाने-बिलाने के लिए उसे लड़के को मरवा मत देना...''

समग्र रूप से कह सकते हैं कि पु. ल. देशपांडे जी ने अपने हास्य व्यंग्यात्मक लेख को संप्रेषणीय, प्रभावी, सहज, सरल बनाने के लिए विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है। जिससे लेख प्रभावी और आकर्षक बन गए हैं।

4.3.4 हास्य–व्यंगात्मक लेख और सामाजिकता

समाज और साहित्य का संबंध अनन्य साधारण है। समाज के बिना साहित्य का निर्माण संभव है। साहित्य समाज का आईना होता है। साहित्य में समाज का ही प्रतिबिंब झलकता है। कोई भी साहित्यकार समाज से हटकर नहीं लिख सकता। साहित्यकार चाहे कितना भी प्रतिभाशाली क्यों न हो वह साहित्य से समाज को दूर नहीं रख सकता। अतः समाज साहित्य का विभाज्य अंग है। साहित्यकार जिस समाज में और परिवेश में जीता है उसकी अभिव्यक्ति वह साहित्य में करता है। साहित्य की कोई भी विधा समाज से अलग नहीं है। चाहे उपन्यास हो, कहानी हो, व्यंग्य हो या निबंध हो, नाटक हो, एकांकी हो, आत्मकथा, हो कोई भी विदधा समाज से अलग नहीं हो सकती। अतः साहित्यकार और समाज तथा समाज और साहित्य का पारस्परिक संबंध होता है। किसी भी भाषा का कोई भी साहित्य सामाजिक चेतना से युक्त ही रहता है। वह समाज के विभिन्न पक्षों का उद्घाटन करता हुआ रचनाकार के उद्देश्य तक पहुंचता है और मानव कल्याण की कामना करता है इस नीति से कोई भी साहित्यकार इसके लिए अपवाद नहीं है। आधुनिक मराठी के साहित्यकार पु. ल. देशपांडे जी इसे अछूते नहीं है। उनकी समाज को परखने की दृष्टि अत्यंत सूक्ष्म एवं गहरी है। समाज की बारकाईयों को अत्यंत सहजता से उन्होंने साहित्य में उभरा है। उनका सभी साहित्य समाज से बराबर का सरोकार रखता है। पु. ल. देशपांडे जी अनुदित पुस्तक 'हास्य–व्यंग्यात्मक लेख' उसी समाज का प्रमाण है। जिस समाज और परिस्थिति में पु.ल. देशपांडे जी ने अपना जीवन जीया है, उन्होंने अपने जीवन अनुभवों को समाज के साथ साझा कर अपनी रचनाओं का निर्माण किया है। उन्होंने अपने हास्य व्यंग्यात्मक निबंध में समाज के हर पक्ष का उद्घाटन अत्यंत मार्मिकता से किया है।

शिशुकक्षा से मैट्रिक तक, मक्खी, मैं और मेरा शत्रुदल, मैं और पोस्ट ऑफिस, रेलगाड़ियां कुछ अब कुछ डाउन, कुछ नए ग्रहयोग, रावसाहब, क्या कहा गुरुदेव ने?, चितले मास्टर जी, चश्मा इन लिखो में पु. ल. देशपांडे जी ने हास्य–व्यंग्यात्मक शैली में समाज के विभिन्न पक्षों का चित्रण किया है। जिस समाज में मनुष्य रहता है।उसी समाजसेवा शिक्षा ग्रहण कर खुद को विकसित करता हुआ समष्टि का विकास करता है। समाज के लगभग सभी बच्चे स्कूल में पढ़ते हुए अपना शैक्षिक विकास करते रहते हैं। पाठशाला के बच्चे, बच्चों पर अध्यापक वर्ग हमेशा संस्कार करते रहते हैं। इसी समाज में रहनेवाले अध्यापकों की अध्ययनशीलता, रुचि, बच्चों की मानसिकता आदि को सामाजिक रूप में प्रस्तुत किया है। 'शिशुकक्षा से मैट्रिक तक' इस लेख में पु. ल. देशपांडे जी उस समाज का चित्रण करते हैं जिस सामाजिक परिवेश में वे जीते हैं। लेख में लिखते हैं कि बचपन में ही मुझे आशा थी कि मैं कॉलर वाली कमीज पहनूं, परंतु जीस दर्जी के पास हमारे कपड़े सिलते थे उसे कॉलर वाली कॉलर वाली कमीज सिलना नहीं आती थी। इसलिए वह जानबूझकर कहता है, अरे! कॉलर–बीलर काहे चाहिए रे तुम बच्चों को? तो यहां ऐसा समाज का व्यक्ति है जो अपना आज्ञन नहीं देखता और स्वार्थ वर्ष नई पद्धति का विरोध करता है। ब्राह्मण समाज में पहनी जानेवाली भीखबाली भी मास्टर को अच्छी नहीं लगती। इस तरह पु. ल. देशपांडे जी ने अपने बाल्यावस्था के शैक्षिक दिनों की कहानी बताई है। जिसमें पु. ल. देशपांडे जी की दुर्दशा, बचपन का

सत्यानाश, शिक्षकों का आचरण और स्वार्थ आदि का चित्रण करते हुए समाज के विभिन्न पक्षों का उद्घाटन किया है।

'मक्खी' इस हास्य-व्यंग्यात्मक लेख में पु. ल. देशपांडे जी भारतीय एवं पाश्चात्य समाज का चित्रण करते हुए लिखते हैं कि, ''मैं भोजन का निमंत्रण पाकर एक अंग्रेज मित्र के घर गया था। सबसे पहले 'सूप' आया। (पाठक भारतीय संस्कृति तथा पाश्चात्य संस्कृति के अंतर पर सोच-विचार कर देखें। वहां 'सूप' आते ही भोजन शुरू करते हैं और हम या मेजबान सूप (छाज) हाथ में लेकर ब्याह-मंडप में आता है, तो मेहमान समझ जाते हैं कि - (खाना खतम,अब अपने-अपने घर जाओ) मेरे अंग्रेज मित्र ने अभी चमचे में सूप भारा ही था कि उसकी 'वाइफ' ने उसके गाल पर तडाक से तमाचा मारा। वह काफी देर से अपने पति के चेहरे की ओर देख रही थी, परंतु मैं समझ रहा था कि उनके यहां क्रिया पाश्चात्य प्रेम का ही हिस्सा होगी। अपने यहां पति-पत्नी भी चार जनों के देखते मुंह से मुंह नहीं मिलाते, मगर उनके यहां तो चार जनों के बीच ही मुख मिलन होता है। लगता है - प्रेम प्रदर्शन के इस खुलेआम ढंग की और वहां के सरकारी ध्यान नहीं देते!''

उपर्युक्त ''अवतरन में पाश्चात्य और भारतीय परिवारों का ऐसा चित्र खींचा है, जो एक मक्खी के कारण परेशान है। भारतीय समाज में प्रेम का प्रदर्शन नहीं किया जाता। परंतु पाश्चात्य देशों में यह खुले आम होता है चार जनों के बीच में। अतः यहां पर भारतीय समाज और पाश्चात्य समाज की तुलना करते हुए सामाजिक परिवेश को उभरने का प्रयास किया है।''

'मैं और मेरा शत्रुदल' इस हास्य-व्यंग्यात्मक निबंध में पु. ल. देशपांडे जी ने समाज का वह चित्र खींचा है, जिससे समाज के लोग अपनी तरक्की दिखने तथा अपनी झूठी प्रतिभा दिखाने हेतु दूसरों का समय लेकर उसे परेशान करते हैं। इस लेख में पु. ल. देशपांडे जी ने इसी समाज के तीन वर्गों का अपना दुश्मन माना है। एक जो शिकारी होते हैं और अपने शिकार की कहानी लिखकर तथा दूसरों को सुनाकर उसका समय बर्बाद करनेवाले। दूसरे जो घर बनानेवाले तथा घरमालीक जो लोगों को घर दिखाने के बहाने तकलीफ देते हैं और तीसरा वर्ग जो अपने बच्चों के गुणगान में लगे होते हैं । इन तीनों वर्गों के लोगों की कहानी बताकर लेखक ने अपने शत्रुदल का चित्रण किया है। जिससे स्वार्थी, अहंमवादी, लालची, झूठी खुशामद करनेवाला, दिकायनुसी आदि समाज का चित्र खींचा है। लेखक को ऐसे समाज के प्रति काफी घृणा और द्वेष व्यक्त करते हैं। लेखक लिखते हैं कि, ''शिकारी मेरे कट्टर शत्रु है। हमने कभी उनसे पूछा है कि साहब, आपने कुल कितने शेर मारे? मारे सो मारे, मगर 'मेरा पहला शेर' विषय पर किताब भी लिख डालते हैं। सोन्या, तूने देखा है ऐसा शिकारी जो बकबक भी ना करें और किताब भी ना लिखें? वह तो कानून आड़े आता है, वरना मैं ऐसे शिकारियों के सिर में भूसा भर के अपने घर की दीवार पर लटकावा देता!''

अतः लेखक ने स्वार्थी, लालची, दिखावटी, दोहरी नीति का, झूठी शानो-शौकत दिखानेवाले समाज का गहराई से चित्रण किया है। जिसे हास्य व्यंग्य के द्वारा कठोर प्रहार भी किया है।

पोस्ट ऑफिस और समाज का भी एक अलग रिश्ता होता है। समाज के कई लोग अपने दूर के रिश्तेदारों तथा दोस्तों के साथ संपर्क बनाने के उद्देश्य से पोस्ट से ताल्लुक रखते हैं। पोस्ट ऑफिस और पु.ल. देशपांडे जी का गहरा संबंध है। पोस्ट ऑफिस से संबंधित अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए उन्होंने 'मैं और पोस्ट ऑफिस' नामक हास्य-व्यंग्यात्मक लेख का सृजन किया है ।बड़े ही सुंदरता से हास्य और व्यंग्य का सहारा लेकर लेखक ने पोस्ट की विचित्र कार्य पद्धति पर प्रकाश डाला है। जिसे सामाजिकता का एक नया रूप सामने आया है। हमारे भारत देश के समाज में ऐसे भी लोग हैं जो अपनी आर्थिक स्थिति ठीक ना होने पर भी केवल परंपरा और संस्कृति को बनाए रखने के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार होते हैं। पु. ल. देशपांडे जी लिखते हैं कि, ''सुनो, सौभाग्यवती द्रौपदी को अनेक आशीर्वाद। मैं यहां कुशल से हूं। दिवाली के त्यौहार पर दामाद जी को बुलाना चाहिए। लोक-रीत का पालन करना ही चाहिए। बोनस मिलने की काफी आशा है। चाचा के दमा की दवाई भिवा के हाथ भेज देता हूं। घर के बड़ों को नमस्कार। छोटों को आशीर्वाद। आप लोग अपना ध्यान रखा करो। मेरा स्वास्थ्य ठीक है... बवज्या धना भोरीकर ....।''

उपर्युक्त अवतरण से स्पष्ट होता है कि पारिवारिक रिश्तेदारी निभाने तथा सामाजिक सरोकार बनाए रखने के लिए गरीब लोग भी उसे जी जान से निभाने की कोशिश करते हैं। एक- दूसरे के प्रति होनेवाली जिम्मेदारियां को भली भांति निभाने की कोशिश करते हैं।

'रेलगाड़िया कुछ अब कुछ डाउन' इस हास्य-व्यंग्यात्मक लेख में तो पु. ल. देशपांडे जी ने ग्रामीण तथा देहाती समाज के साथ नगरीय समाज को भी उभरने की कोशिश की है। नगरीय समाज और देहाती समाज के दो रूपों की बात करते हुए पु. ल. देशपांडे जी ने रेलवे स्टेशन के प्रति अपनी भावनाओं को उजागर किया है। इस लेख में उन्होंने ग्रामीण समाज को उभरते हुए गांव के लोगों का अपनापन, समाज का जीने का तौर-तरीका, रिश्तो नातों की मिठास, सामाजिक जिम्मेदारियां का एहसास, इन बातों का बिंब उभरा है। पु. ल. देशपांडे जी लिखते हैं कि, ''ऐसा अपनापन लिए हुए 'फलाट' के सिवाय स्टेशन पर बिटिया को विदा करने आए पाटील (पटेल) से स्टेशन मास्टर कहता हो, ''राम-राम पाटिल...? दीदी बिटिया ससुराल चली है का?'' और नीली पोशाक पहन, माथे पर काले सिंदूर का मोटा- सा टीका लगाए और गले में तुलसी माला धारी पोर्टर गांव की किसी मां से कहें ''काहे री अनसूये, अरी, ललुवा को कनटोप तो पहना ठीक से! देख, कैसी ठंडी हवा छुट्टी है.... बिटवा को सरदी- फरदी हो गई तो...? फिर यह हो कि भरे-भड़क्के वाले फलाट पर पाटील की बिटिया झुककर स्टेशन मास्टर साहब के पैरों पर माथा टेके और जमशेदपुर या और किसी दूर के गांव में रह रही अपनी बिटिया की याद से मास्टर साहब की आंखें भर आए- और अपने उसे पुलक या रोमांच को छुपाने के लिए मुख से ''अष्टपुत्रा सौभाग्यवती भव'' कहनेवाले गडद्गदित मास्टर साहब अपनी भीगी आंखों छुपाने के लिए 'चलो, सएवन्टईन अप लेट है आज' कहकर आगे बढ़ जाए- खिड़की पर आए किसी को टिकट देने के बहाने से!.... ऐसा, इतना अपनेपन से लबालब हो मेरा फलाट!''

इससे स्पष्ट होता है कि यह सामाजिक जिम्मेदारियां का एहसास, उसे बेटियों को भी है और उस फलाट मास्टर को भी। सभी अपने सामाजिक दायित्व को निभाते हैं। अपनी संस्कृति को उजागर करते हैं।

जिससे जिम्मेदार समाज के दर्शन होते हैं। इसी लेख में पु. ल. देशपांडे जी नगरीय जीवन का सामाजिक चित्र उभरते समय अपनापन खोनेवाले वर्ग, ट्रेन में झूठी शानों-शौकत दिखानेवाला फर्स्ट क्लास से सफर करनेवाले पैसेंजर आदि का चित्रण सामाजिक रूप से किया हुआ है।

समाज और समाज में रहनेवाले लोगों की अपनी निष्ठा, अपना विश्वास, रूढिं, उत्सव, पर्व, त्यौहार, परंपराएं, संस्कृति आदि को सामाजिक परिवेश में महत्वपूर्ण स्थान होता है। मनुष्य समाज में रहकर शिक्षा हासिल करता है और विभिन्न प्रकार की विधाओं को अवगत करता है। पु. ल. देशपांडे जी इस समाज का एक हिस्सा है। वे भी अपनी श्रद्धा और विश्वास की बात को अपनी अनुभूति के माध्यम से प्रकट करते हुए सामाजिक परिवेश को उभरने का प्रयास करते हैं। उन्होंने अपनी प्रतिभा और अनुभूति के बल पर 'कुछ नए ग्रहयोग' नामक हास्य-व्यंग्यात्मक निबंध का सृजन किया है। जिसमें उन्होंने समाज के विभिन्न रूपों का चित्रण अत्यंत सूक्ष्मता से किया है। वह ज्योतिष और ज्योतिषी से जुड़े समाज के संबंध, उस सामाजिक वर्ग का उल्लेख करते हैं। जो ज्योतिषशास्त्र पर विश्वास करता है और उसका भी उल्लेख करते हैं जो उस पर विश्वास नही करते हैं। साथ ही परंपरागत ग्रहयोग को छोड़कर व्यंग्यात्मक रूप से नए योग को जन्म देते हैं। जिससे समाज की प्रवृत्तियां स्पष्ट होती दिखाई देती है। उन्होंने जल श्रृंखला योग, बूट्टी अधिकारी योग, अंतः क्रमांक योग, कनिष्ठभागिनी योग, आकाशवाणी योग, समस्त स्त्री वृंद-पर पुरुष-विवाहित वैषम्य योग, पादत्राणांगुष्ठ योग, द्वाराघंटीका योग,आदि योग के माध्यम से सामाजिक संरचना को उभारा है। समाज में रहनेवाले राजनीतिक नेता और साहित्यिक समीक्षकों की प्रवृत्ति पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं कि, ''कभी-कभी ऐसा भी होता है कि इन ग्रहों में से कोई ग्रह अपना घर छोड़कर दूसरे के घर में घुस जाता है! ऐसे समय वे अपना घर 'लीव एंड लाइसेंस' के अनुसार दे देते हैं और फिर अपने घर वापस लौट आते हैं। कभी-कभी ये ग्रह साहित्य के आलोचकों के समान 'वक्री' भी हो जाते हैं। उनकी दशा भी हमारे समान ही होती है-राजनीतिक पार्टियों के प्रतिस्पर्धी नेताओं के समान ग्रह भी एक- दूसरे पर भली-बुरी दृष्टि रखते हैं। एक-दूसरे का मुंह भी न देख सकनेवाले शनि और गुरु कभी-कभी संयुक्त मोर्चा बना लेते हैं। जैसे कोई लोकप्रिय नेता पांच -दस मतों से हार जाता है, यों ही यह भी कभी-कभी कुछ अंशों की मार खाते हैं। मैं इनकी लीलाएं देख-देख चकरा जाता हूं''

इस तरह से पु.ल. देशपांडे जी ने अपनी अनुभूति जगत से रावसाहेब, क्या कहा गुरुदेव ने?, चितले मास्टर, चश्मा आदि हास्य-व्यंग्यात्मक लिखो में सामाजिकता का चित्रण अत्यंत मार्मिकता से किया है। जिससे भारतीय ग्रामीण और नगरीय समाज, पाश्चात्य समाज आदि के दर्शन होते हैं। समग्र रूप से कह सकते हैं कि पु. ल. देशपांडे जी ने भारत के महाराष्ट्रीयन समाज को उभारा है। जिससे महाराष्ट्र की संस्कृति, रूढ़ि, परंपरा, उत्सव, पर्व, त्यौहार, राजनीति, ज्योतिष, दर्शन आदि के दर्शन होते हैं।

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए विकल्प में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. पु. ल. देशपांडे जी का जन्म सन्...... में हुआ।

अ) 1919 आ) 1929 इ) 1909 ई) 1939

2. पु.ल. देशपांडे जी मुख्यतः ...... भाषा के रचनाकार हैं।

अ) हिंदी आ) मराठी इ) बंगाली ई) तमिल

3. मराठी भाषा के सुप्रसिद्ध हास्य-व्यंग्यकार पुरुषोत्तम लक्ष्मण देशपांडे जी को......इस उपनाम से भी जाना जाता है।

अ) पु.ल. आ) ल. ल. इ) ब. च. ई) पु. अ.

4. 'शिशुकक्षा से मैट्रिक तक' यह हास्य-व्यंग्यात्मक लेख....... इस मराठी के मूल पुस्तक से लिया गया है।

अ) गणगोत आ) व्यक्ती आणि वल्ली

इ) हसवणूक ई) असा मी असामी

5. 'शिशुकक्षा से मैट्रिक तक' इस लेख में लेखक ने अपने ...... जीवन का चित्रण किया है।

अ) पारिवारिक। आ) सामाजिक इ) शैक्षिक ई) राजनीतिक

6. 'मक्खी' इस हास्य-व्यंगात्मक लेख में लेखक ने....... को आधार बनाकर लेखा निर्माण किया है।

अ) चींटी आ) मक्खी इ) मच्छी ई) गाय

7. 'मैं और मेरा शत्रुदल' इस लेख में पु.ल. देशपांडे जी अपना पहला दुश्मन...... को मानते हैं।

अ) घर बनानेवाले। आ) घरमालिक इ) शिकारी ई) फोटो दिखानेवाले

8. 'मैं और मेरा शत्रुलद' इस लेख में पु.ल. देशपांडे जी के मित्र का नाम .... है।

अ) जोन्या आ) सोन्या इ) मोन्या ई) गोन्या

9. 'मैं और पोस्ट ऑफिस' इस हास्य-व्यंग्यात्मक लेख में पु. ल. देशपांडे जी ने ....की कार्य पद्धति पर व्यंग्य किया है।

अ) रेल्वे आ) बैंक इ) पोस्ट ई) कॉलेज

10. पु. ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंगात्मक लेख का नाम... है।

अ) रेलगाड़ियां आ) मास्टरसाहब इ) बिल्ली ई) बाल्टी

11. पु. ल. देशपांडे जी का हास्य-व्यंगात्मक लेख 'रावसाहब' मराठी के........ इस मूल किताब से लिया है।

अ) गणगोत आ) व्यक्ती आणि वल्ली

इ) फसवणूक ई) असा मी असामी

12. पाश्चात्य लोगों ने जिसे 'न्याय सिद्धांत' कहा है उसे हम...... कहते है।

अ) ग्रहयोग। आ) जल-श्रृंखला योग

इ) महायोग ई) समायोग

13. 'क्या कहा गुरुदेव ने?' यह लेख मराठी के.........पुस्तक का हैं।

अ) गणगोत आ) व्यक्ती आणि वल्ली

इ) असा मी असा मी ई) हसवणूक

14. चश्मा इस हास्य-व्यंग्य लेख में लेखक का चश्मा डॉट डॉट के कारण टूट जाता है।

अ) आलिंगन से आ) गिरने से इ) पत्थर से ई) टकराने से

15. पु.ल. देशपांडे जी का हास्य-व्यंग्यात्मक लेख 'मेरे चितले मास्टर जी' यह मराठी की मूल पुस्तक .....:.. का है।

अ) गणगोत आ) व्यक्ती आणि वल्ली

इ) हसवणूक ई) असा मी असामी

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

धारातीर्थ - समरांगण,

माशी शिंकणे - मक्खी का छींकना,

मिसळ -चटपटी चीजों का मिश्रण,

राबीट - सीमेंट, रेट और गट्टी का मिश्रण,

टपाल - डार्क डाक

हासिल - खर्च या किराया,

बंगी - डाक का थैला या पार्सल।

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर।

1. 1919 2. मराठी 3. पु. ल. 4. हसवणूक

5. शैक्षिक 6. मक्खी 7. शिकारी 8. सोन्या

9. पोस्ट 10. रेलगाड़ियां 11. गणगोत 12. ग्रहयोग

13. असा मी असामी 14. आलिंगन से 15. चितळे मास्तर

4.7 सारांश :

1. भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में 'पु. ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेख' इस किताब का अध्ययन करते समय सबसे पहले हमने पु. ल. देशपांडे जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन विस्तार से किया है।
2. जिसके आधार पर सारांश रूप कहा जा सकता है कि निश्चित रूप से पु. ल. देशपांडे जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व सराहनीय है। जिससे छात्र आदर्श ले सकते हैं।
3. उनके साहित्यिक कृतित्व से मराठी साहित्य समृद्ध बन पड़ा है। इसी साहित्यिक कृतित्व के कारण उन्हें 'पद्मश्री' और 'पद्मभूषण' जैसे सम्मान प्राप्त हुए हैं।
4. उनके हास्यव्यंग्यात्मक लेख का सामाजिक दृष्टि से विचार करने पर कहा जा सकता है कि महाराष्ट्रीयन समाज का चित्रण एवं संस्कृति का गहराई से मार्मिक चित्रण हुआ है।
5. उनके हास्य-व्यंग्यात्मक लेखों का भावगत अध्ययन करने के उपरांत कहा जा सकता है कि उनके लिखों में भावों की अभिव्यक्ति सहज सरल, प्रभावपूर्ण ढंग से हुई है, जो पाठक के दिलों दिमाग पर असर छोड़ती है।
6. उन्होंने अपने हास्यव्यंग्यात्मक लिखों में व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक आदि से संबंधित विषयवस्तु को वाणी दी है।
7. पु. ल. देशपांडे जी ने अपने लिखों को प्रभावशाली तथा आकर्षक बनाने के लिए संप्रेषणीय एवं प्रभावशाली भाषा तथा हास्य-व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग प्रचुरता से किया है। जिससे शिल्प-विधान सक्षम बन गया है।

4.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. पु. ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेखों की विषयवस्तु पर प्रकाश डालिए।
2. पु. ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेखों के भाव पक्ष पर प्रकाश डालिए।
3. पु. ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेखों में चित्रित सामाजिकता पर प्रकाश डालिए।
4. पु. ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेखों की भाषा पर प्रकाश डालिए।
5. पु. ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेखों की शैली पर प्रकाश डालिए।

6. पु. ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेखों के व्यंग्य का चित्रण कीजिए।

7. पु. ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेखों के द्वारा हास्य भाव का चित्रण कीजिए।

8. पु. ल. देशपांडे जी के हास्य-व्यंग्यात्मक लेखों के शिल्प विधान पर प्रकाश डालिए।

9. पु. ल. देशपांडे जी का हास्य-व्यंग्यात्मक लेख 'शिशुकक्षा से मैट्रिक तक' के माध्यम से पु.ल. देशपांडे के शैक्षिक जीवन संघर्ष का चित्रण कीजिए।

10. 'मैं और मेरा शत्रुदल' इस हास्य-व्यंग्यात्मक लेख में पु. ल. देशपांडे जी ने अपने शत्रुदल का चित्रण किस प्रकार से किया है।

ब) ससंदर्भ के लिए उदाहरण

1. ''नए बालकों का नया बचपन कितने मजे से बीतेगा! विद्यालय के पहले घंटे में एक घंटे तक प्रार्थना चलेंगी, क्योंकि सारे धर्म को एक-एक मिनट भी दिया गया, दो घंटा तो लग ही जाएगा। दूसरे घंटे में गुरुजनों का मौन, तीसरे में बालकों का, चौथा में सारे विद्यालय का, फिर सामूहिक उपवास, सामूहिक सत्याग्रह। इस बीच यदि बालकों ने कुछ शरारत कर दी, तो गुरूजन आमरण अनशन करेंगे।'' (पेज नंबर -31)

2. ''जो औषधि दूसरों के लिए संजीवनी है। उसे इस मक्खी को भी जीवन देना चाहिए था। उसे जीवन देने के मार्ग में कौन मक्खी ने छिंक मार दी या फिर वह स्वयं ही छींक पड़ी थी?'' (पेज नंबर -33)

3. एक नहीं, आधे ही पल में मैं अनुभव करने लगा कि मृत्यु के बाद मनुष्य की कैसी अवस्था होती होगी! ''अरी मैया! यह देखो, अमृतांजन की शीशी तो यही थी'' ''और ये देखो, परसों बाल बांधने का आंकड़ा नहीं मिल रहा था.....यहां रखा था।'' (पेज नंबर -55)

4. ''काश! भगवान ने कान बंद करने का कोई स्विच बनाया होता। बेबी के मास्टर जी तो कई घरों की बेबीयों को लता मंगेशकर से दस गुना मधुर बताया करते हैं। पेट की के खातिर क्या-क्या नहीं करना पड़ता, आदमी को? परंतु यह मां-बाप क्यों कहा करते हैं, पता नहीं।'' (पेज नंबर -58)

5. ''अब तो हद हो गई! अरे, मैं पूछता हूं, मनुष्य की सहनशीलता की भी कोई सीमा होती है या नहीं? एक इतने से जीवन में मनुष्य क्या-क्या बर्दाश्त करें? यह लोग सबको छोड़ हमें ही क्यों पकड़ लेते हैं? सों से मैं मुंह छुपाए या बचता-छुपता निकल जाता हू-जैसे कि मैं उनका कर्जदार हू! आखिर मेरे जैसे लोग अपनी शिकायत किस चौपाल में जाकर करें?'' (पेज नंबर - 39)

6. ''अष्टपुत्रा सौभाग्यवती भव'' कहनेवाले गडद्गगदित मास्टर साहब अपनी भीगी आंखों छुपाने के लिए 'चलो, सएवन्टईन अप लेट है आज' कहकर आगे बढ़ जाए- खिड़की पर आए किसी को टिकट देने के बहाने से!.... ऐसा, इतना अपनेपन से लबालब हो मेरा फलाट!'' (पेज नंबर 76-77)

7. कभी-कभी ये ग्रह साहित्य के आलोचकों के समान 'वक्री' भी हो जाते हैं। उनकी दशा भी हमारे समान ही होती है-राजनीतिक पार्टियों के प्रतिस्पर्धी नेताओं के समान ग्रह भी एक- दूसरे पर भली-बुरी दृष्टि रखते हैं। एक-दूसरे का मुंह भी न देख सकनेवाले शनि और गुरु कभी-कभी संयुक्त मोर्चा बना लेते हैं। (पेज नंबर 9697)

8. ''वस्तुस्थिति यह होती है कि चार फीट दूर ही नासिकानली से ओष्ठ-मुरली से खुरायमान ध्वनियां आ रही होती है- किंतु प्रेम-कथा लिखने में कोई बाधा नहीं होती। जब ऐसे ऐसे कथाकार निराधार लिख सकते हैं, तो अकेले बाबा साहब ने ही किसी का क्या बिगाड़ा है? कुल मिलाकर बात इतनी कि अंत में सारे एक ही थैली के.....!'' (पेज नंबर- 45)

9. ''सुनो, सौभाग्यवती द्रौपदी को अनेक आशीर्वाद। मैं यहां कुशल से हूं। दिवाली के त्यौहार पर दामाद जी को बुलाना चाहिए। लोक-रीत का पालन करना ही चाहिए। बोनस मिलने की काफी आशा है। चाचा के दमा की दवाई भिवा के हाथ भेज देता हूं। घर के बड़ों को नमस्कार। छोटों को आशीर्वाद। आप लोग अपना ध्यान रखा करो। मेरा स्वास्थ्य ठीक है... बवज्या धना भोरीकर ....।'' (पेज नंबर-67)

4.9 क्षेत्रीय कार्य :

छात्र मराठी साहित्य का अध्ययन करें और हिंदी भाषा के अंतर्गत उसे अनूदित करने का प्रयास करें।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

१. हसवणूक - पु. ल. देशपांडे

२. गणगोत - पु. ल. देशपांडे

३. असा मी असामी - पु. ल. देशपांडे

४. व्यक्ती आणि वल्ली - पु. ल. देशपांडे

❑❑❑